आगम सेवा के अन्तर्गत पहली सेवा

भगवान महावीर की अंतिम अमृतवाणी का अनूठा संग्रह

उत्तराध्ययन सूत्र

(अध्ययन एक से अठारह तक)

प्रथम भाग **प्रथम संस्करण**

प्रश्न उत्तर के माध्यम से जैन आगम शास्त्र में निहित भगवान महावीर की वाणी को हिन्दी भाषा में सरल रुप मे जाने का सर्वश्रेष्ठ माध्यम

संकलक - संपादक

संदीप जैन 'मित्र'

दुर्ग (छत्तीसगढ़)

-: प्रकाशक :-

सोश्यल एनर्जेटिक वालिंटियर्स एसोसिएशन, दुर्ग

प क्र स रा/जिला दुर्ग/785

-: मुद्रक .-

मास्टर-टेक कम्प्यूटर्स, दुर्ग

फोन : 2328402

-: उपयोग राशि :-

रु. 40/-

डाक खर्च अतिरिक्त

2 नहीं... 542 शब्द

शास्त्रकारो ने श्रुतज्ञान को सर्वाधिक और सर्वोपकारी माना है। इसका दिव्य प्रकाश अंतरजगत और बाह्यजगत दोनों को आलोकित करने वाला है। श्रुतज्ञान की पुनीत जलधारा आत्मा के कर्म मैल को धो डालने का पर्याप्त सामर्थ्य रखती है। जिस आत्मा ने इस पुण्य स्रोत में एक बार श्रद्धापूर्वक गोता लगाकर अपने कर्म मैल को धोने का प्रयास किया, नि सन्देह वह कृत-कृत्य हो गया।

जैनागम रूपी अमृत सिंधु अनंतकाल से लहरा रहा है। इसकी अनंत लहरियों ने न जाने कितने मानस कुंभ कलश का अमृतत्व से भरकर उन्हें अमरता के महापथ पर पहुँचाया है। लेकिन इस अमृत सिन्धु के तट पर पहुँचना [illegible] दु.साध्य कार्य रहा है क्योंकि जैन आगम शास्त्रों का निर्माण [illegible] भाषा यानि अर्धमागधी में हुआ है जो कि अब सामान्य जन की [illegible]त्र सीमा से प्रायः दूर है। कुछ महान प्रतिभाशाली साधकों की स[illegible]धना ही इस अमृतत्व का पान करने-कराने में समर्थ रह गई है।

इन महापुरुषों ने उपकार करते हुए शास्त्रो के मूल पाठ एवं अर्थ को हम सबके समक्ष प्रस्तुत किया है। पिछले कुछ समय से आगम अध्ययन करने के प्रति मेरी आत्मिक जिज्ञासा बलवती हुई है। आगमगत तथ्य इतने रोचक, चित्ताकर्षक एव विचारोत्पादक है कि कभी-कभी पूरी रात्रि अर्थपठन मे निकल जाती रही है। मन में विचार आया कि जब इस सकलित किये गये जिनवाणी के पठन में इतना आनंद आ रहा है तो जिन भाग्यशालियो ने प्रत्यक्ष सुना होगा, आचरित किया होगा तब उन्हें कैसा असीम आनंद रस प्राप्त हुआ होगा। पठन करते समय मुख्य बाते नोट करने की वृत्ति ने आगमों के प्रश्न-उत्तर तैयार करने का अवसर प्रस्तुत करवा दिया। आचाराग सूत्र, उत्तराध्ययन सूत्र, दशवैकालिक सूत्र, अतरड़दसा, नदीसूत्र, उपासक दशा सूत्र, स्थानाग सूत्र के काफी प्रश्न-उत्तर तैयार किये

जाने का प्रसग सामने रहा है। फिर भावना बनी कि क्यों ना इसे प्रकाश में लाया जाये, जिससे अन्य भी लाभ पा सकें। इसी भावनानुरुप पूज्य श्री मधुकर मुनि म.सा. एवं पूज्य श्री आत्माराम जी म.सा. की संपादित कृति के आधार पर तैयार प्रश्नों को उत्तर सहित प्रकाशित कराने का प्रसंग है।

एक साथ मोटे ग्रंथ को पढने के लिये न तो आज हरेक के पास रुचि है और न समय। प्रश्न-उत्तर की किताबों, प्रतियोगी परीक्षाओं के प्रति प्राय: रुचियाँ रहती है। आमतौर पर रंग बिरंगे प्रश्न-उत्तर हर जगह से निकलते रहे हैं। कथा, कहानी, प्रवचन, गीत, स्तवन, प्रार्थना, सामायिक भक्तामर आदि की किताबें बहुतायत मात्रा में निकलती रही है। जिनसे आगमशास्त्रों की जानकारी अत्यल्प रूप में एक वाक्य की सीमा में ही मिल पाती है। मुझे तो ऐसा कोई साहित्य नहीं दिखा जिसमें पूरा का पूरा आगम सरल रूप में जाना जा सके। मेरा मानस एक ऐसा प्रश्नोत्तर ग्रंथ तैयार करने की दिशा में केन्द्रीत हुआ है। जिसमें खेल-खेल में पाठक पूरा आगम पढ सके। पता नहीं कब कौन-सा आगमगत वाक्य किसी का जीवन परिवर्तन कर दे।

इसी शुभ भावना के अनुरुप यह उत्तराध्ययन सूत्र (प्रथम भाग) प्रश्नोत्तर के रुप में प्रस्तुत है। जिसमें उत्तराध्ययन सूत्र के 36 में से 18 अध्ययनों के 1125 प्रश्न तथा उत्तर सरल बोधगम्य भाषा में तैयार किये गये हैं। द्वितीय भाग में शेष 18 अध्ययनों के प्रश्न उत्तर प्रकाशित होने का प्रसंग बन सकता है। ये एक ऐसा साहित्य तैयार हुआ है जिससे प्रश्नोत्तर रुप में पूरा का पूरा आगमतथ्य जाना जा सकता है। जिनवचनों के विपरीत कुछ लिखा गया हो तो मन-वचन-काया से 'तस्स मिच्छामि दुक्कडं'।

- संदीप जैन 'मित्र'
दुर्ग (छत्तीसगढ)

उत्तराध्ययन सूत्र : एक परिचय

वैदिक पम्रपरा में जो स्थान गीता का है, बौद्ध परम्परा में जो स्थान धम्मपद का है, इस्लाम में जो स्थान कुरान का है, पारसियों में अवेस्ता और ईसाइयों मे बाइबिल का है, वही स्थान जैन परम्परा में उत्तराध्ययन का है। उत्तराध्ययन भगवान महावीर की अनमोल वाणी का अनूठा संग्रह है। यह जीवन सूत्र है। आध्यात्मिक, दार्शनिक और नैतिक जीवन के विभिन्न दृष्टिकोणों का इसमे गहराई से चिंतन है। इस प्रकार से इसमें जीवन का सर्वांगीण विश्लेषण है। यह एक ऐसा आगम है जो गंभीर अध्ययनकर्ताओं के लिये भी उपयोगी है। सामान्य साधकों के लिये भी इसमें पर्याप्त सामग्री है।

यह आगम; विविध विषयों पर गहराई से चिंतन प्रस्तुत करता है। विषय विश्लेषण की दृष्टि से गागर में सागर का महत्वपूर्ण कार्य इस आगम में हुआ है। इस आगम का यदि कोई गहराई एवं सम्यक् प्रकार से अध्ययन कर ले तो उसे जैनदर्शन का भलीभांति ज्ञान हो सकता है।

उत्तराध्ययन की यह मौलिक विशेषता है कि इसमें अनेकानेक विषयों का संकलन हुआ है। **दशवैकालिक** और **आचारांग** मे मुख्य रुप से श्रमणाचार का निरुपण है। **सूत्रकृतांग** में दार्शनिक तत्वों की गहराई है। **स्थानांग** और **समवायांग** आगम कोष शैली में होने से उनमे आत्मा, कर्म, इंद्रिय, शरीर, भूगोल, खगोल, नय, निक्षेप आदि का वर्णन है पर विश्लेषण नही है। **भगवती सूत्र** में विविध विषयों की चर्चायें व्यापक रुप से की गई है पर वह इतना विराट है कि सामान्य व्यक्ति के लिये उसका अवगाहन करना, उसे समझ पाना संभव नहीं है। **ज्ञातासूत्र** में कथाओं की ही प्रधानता है। **उपासग दशांग** में श्रावक जीवन का निरुपण है। **अंतगड़दसा** और **अनुत्तरौपपातिक** में साधकों के उत्कृष्ट तप का निरुपण है। **प्रश्नव्याकरण** में पाँच आश्रवों और संवरो का विश्लेपण है तो **विपाकसूत्र** में पुण्य-पाप के फल का निरुपण है। **नंदी सूत्र** में पाँच के संबंध में चिंतन है। **व्यवहार**, **निशीथ** आदि शास्त्रों में

प्रायश्चित विधि का विश्लेषण, **अनुयोग द्वार** में नय और प्रमाण का विश्लेषण है। **प्रज्ञापना** में तत्वों का विश्लेषण है तो **राजप्रश्नीय** में राजा प्रदेशी और केशी श्रमण का मधुर संवाद है। किन्तु **उत्तराध्ययन** में जो सामग्री संक्षेप मे सकलित है, वैसी सामग्री अन्यत्र दुर्लभ है। इसमें धर्म कथाये भी है, उपदेश भी है, तत्वचर्चा भी है और त्याग, वैराग्य की विमल धाराएं भी प्रवाहित हो रही है। धर्म और दर्शन तथा ज्ञान-दर्शन चारित्र का सुंदर संगम है।

उत्तराध्ययन का माहात्म्य

निर्युक्तिकार कहते हैं -

जे किर भवसिद्धीया परित्त, संसारिआ य भविआ य।
ते किर पढंति धीरा, छत्तीसगढ़ उत्तरज्झयणं ॥

जो भव सिद्धि जीव है और मुक्तिगमन के लिये लालायित है, तथा जिनका संसार पर्यटन अत्यल्प रह गया है, वे ही भव्यात्मा उत्तराध्ययन के 36 अध्यायों को भावपूर्वक पढते हैं तथा जो अभवी और अनंत संसारी जीव हैं- वे अत्यन्त क्लिष्ट अशुभकार्यो के कारण उत्तराध्ययन सूत्र का अध्ययन करने के अयोग्य हैं। इसलिये जिनेन्द्र देव के कथन किये गये शब्द और अर्थ के अनंत पर्याय वाले इस उत्तराध्ययन सूत्र के अध्ययनों का यथा विधि उपधान और तप के द्वारा गुरुजनो की प्रसन्नता से बढे।

वह भव्यजन बहुत से कर्मो की निर्जरा करने मे सफल है जो तपानुष्ठान द्वारा विधिपूर्वक उत्तराध्ययन के सूत्र और अर्थ को प्राप्त करता है। साथ ही गुरुमुख से सूत्रार्थ को प्राप्त करके उसका अन्य जीवों के कल्याणार्थ उपदेश करता है। वह क्षीण कर्मो वाला होता है। पूर्वाचार्य कहते हैं- जिन आत्माओं का आरंभ किया हुआ उत्तराध्ययन निर्विघ्नता से समाप्त हो जाता है वे भवी हैं, मोक्षगामी हैं।

प्रत्येक व्यक्ति अपनी भव्यता परखने यथाविधि का अध्ययन करें। अगर सफलता मिल जाये तो वर्तमान जीवन और वर्तमान के साथ भावी जीवन भी होगा।

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्व साहूणं

एसो पंच णमुक्कारो
सव्व पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं
पढ़मं हवई मंगलं।

प्रथम अध्ययन

विनय सूत्र

प्र.1 उत्तराध्ययन सूत्र में कितने अध्ययन हैं ?

उ. छत्तीस।

प्र.2 प्रथम अध्ययन का क्या नाम है ?

उ. विनय।

प्र.3 विनय किसे कहते हैं ?

उ. जिस मन में विचारों का प्रवाह समास हो चुका है, वह अवस्था विनय है। आगम रहस्यज्ञाता आचार्य श्री रामेश के अनुसार "विशिष्टामया अस्मिन् इति विनयः" अर्थात् जिसमें विशेष प्रकार के विचार प्रवाहित हों, वह विनय है।

प्र.4 "विचार प्रवाहों का अन्त और आरंभ विनय है", इस परिभाषा की क्या युक्ति है ?

उ. जिसमें संकलेष्ठ परिणाम समास हो चुके हैं, किन्तु-परन्तु-जैसी शब्दावलियाँ समास हो चुकी है और ज्ञान-दर्शन चारित्र तप संयम का प्रवाह हो, वह अवस्था विनय कहलाती है।

प्र.5 विनय कितने प्रकार के हैं ?

उ. सात प्रकार - ज्ञान, दर्शन, चारित्र, मन, वचन, काय, लोकोपचार।

प्र.6 मोक्ष का प्रथम चरण क्या है ?

उ. विनय

प्र.7 विनीत शिष्य किसे कहते हैं ?

उ. जो गुरु की आज्ञा एवं निर्देश का पालन करता है. गुरु के समीप रहता है, उनके इंगित-आकारको समझकर कार्य करता है, वह विनीत शिष्य कहलाता है।

प्र.8 इंगित आकार से क्या आशय है ?

उ. इंगित का अर्थ है - शरीर की सूक्ष्म चेष्टा। जैसे किसी कार्य के विधि या निषेध के लिये सिर हिलाना, आँख से इशारा करना। आकार का अर्थ है - शरीर की स्थूल चेष्टा। जैसे उठने के लिये आसन की पकड़ ढीली करना, जंभाई लेना आदि।

प्र.9 विनीत शिष्य की उपमा किससे की गयी है ?

उ. विनीत घोड़े से अर्थात् इंगिताकार से चलने वाले घोड़े से।

प्र.10 विनीत घोड़े से विनीत शिष्य की तुलना किस प्रकार की गयी है ?

उ. जैसे उत्तम जाति का घोड़ा चाबुक देखते ही विपरीत मार्ग को छोड़ देता है वैसे ही विनीत शिष्य गुरु के आकार आदि को देखकर ही पापकर्म को छोड़ देता है।

प्र.11 अविनीत शिष्य किसे कहते हैं ?

उ. जो गुरु की आज्ञा के विरुद्ध कार्य करे, गुरु के निर्देशों का पालन न करे, गलती होने पर भी स्वीकारे नहीं, गुरु प्रदत्त प्रायश्चित ग्रहण न करे, स्वार्थ हेतु गुरुभक्ति करे, जनता में प्रतिष्ठा जमाने के लिये गुरु का गुणगान करे लेकिन भीतर से गुरु के विपरीत कार्य करे (जैसे- नया गच्छ बनाये, दूसरे साधुओं को भी गुरु के विपरीत करे) ऐसा शिष्य अविनीत कहलाता है।

प्र.12 अविनीत शिष्य को किसकी उपमा दी गयी है ?

उ. अविनीत घोड़ा, सुअर तथा सड़े हुए कान वाली कुतिया की।

प्र.13 अविनीत शिष्य और सड़े कान वाली कुतिया की कैसे तुलना की गयी है ?

उ. जिस प्रकार सड़े कान वाली कुतिया सभी स्थानों से निकाल दी जाती है, उसी प्रकार गुरु के विपरीत आचरण करने वाला शिष्य भी सभी जगह से अपमानित करके निकाल दिया जाता है।

प्र.14 सुअर के समान अविनीत शिष्य किस प्रकार है ?

उ. जिस प्रकार सुअर चॉवलों की भूसी छोड़कर विष्ठा खाता है, उसी प्रकार अज्ञानी और अविनीत शिष्य सदाचार को छोड़कर दुराचार में रचा-पचा रहता और इसी कारण भव भ्रमण करता रहता है।

प्र.15 अविनीत घोड़ा कैसा होता है ?

उ. अविनीत घोड़ा अड़ियल स्वभाव का होता है और बार-बार चाबुक की अपेक्षा रखता है। वैसे ही अविनीत शिष्य बार-बार गुरु के टोकने का इंतजार करता रहता है।

प्र.16 अनुशासन के कितने सूत्र हैं ?

उ. दस सूत्र हैं - (1) गुरुजनों के समीप सदैव प्रशान्त रहे (2) वाचाल न बने (3) निरर्थक बातें छोड़ें (4) अनुशासित किये जाने पर क्रोध न करे (5) क्षमा धारण करे (6) क्षुद्रजनों के साथ सम्पर्क, हास्य आदि न करे (7) चांडालिक कर्म (असत्य भाषण आदि) न करे (8) अधिक न बोले (9) अध्ययन, ध्यान, साधना में मग्न रहे (10) कोई विपरीत कार्य किया हो तो छिपाये नहीं, जैसा हो वैसा गुरु से कहे।

प्र.17 अधिक बोलने का निषेध क्यों किया गया है ?

उ. (1) बोलने का विवेक न रहने से असत्य बोला जायेगा या विकथा करने लगेगा। (2) अधिक बोलने से स्वाध्याय, ध्यान, अध्ययन आदि में अंतराय पड़ेगा। (3) वात कुपित होने की शंका होती है।

प्र.18 सबसे कठिन कार्य क्या है ?

उ. अपनी आत्मा का दमन करना।

प्र.19 इस लोक और परलोक में कौन सुखी होता है ?

उ. अपनी आत्मा का दमन करने वाला।

प्र.20 आत्मदमन से क्या तात्पर्य है ?

उ. इंद्रियों एवं मन को नियंत्रित करना, इच्छाओं का निरोध करना।

प्र.21 आत्मा का दंमन कैसे किया जाता है ?

उ. संयम और तप के द्वारा।

प्र.22 किसको जीतना कठिन है ?

उ. आत्मा को।

प्र.23 विनीत शिष्य गुरु के प्रति किस प्रकार का व्यवहार करे ?

उ. विनीत शिष्य अपने गुरु के समक्ष या परोक्ष में भी मन, वचन, काय से अविनय न करे।

प्र.24 विनीत शिष्य गुरु के समक्ष किस प्रकार बैठे ?

उ. न बराबर के आसन पर बैठे, न आगे बैठे, न पीठ करके बैठे, न पाँव फैलाकर बैठे, अविनय सूचक आसनादि से गुरु के समक्ष न बैठे।

प्र.25 गुरु के प्रति अविनय अशातना कितने प्रकार से हो जाती है ?

उ. (1) आचार्य के प्रतिकूल आचरण मन-वचन-काया से करने से (2) आचार्य के समीप सटकर बैठने (3) आचार्य के आगे या पीछे सटकर या पीठ

बैठने से (4) आचार्य के जांघ से जांघ सटाकर बैठने से (5) आचार्य के सामने दोनों हाथों से शरीर को बांधकर बैठने से (6) शय्या पर बैठे-बैठे ही गुरु के आदेश को स्वीकार करने से। (7) गुरु के सामने पालथी लगाकर बैठने से (8) बुलाने पर चुप रहने से (9) एक या अनेक बार बुलाये जाने पर भी चुप बैठे रहने से (10) अपना आसन छोड़कर गुरु के आदेश को यत्नपूर्वक स्वीकार न करने से (11) आसन पर बैठे-बैठे ही गुरु से पूछने से (12) प्रश्न पूछते समय गुरु के निकट न आकर या हाथ जोड़कर उकडू आसन से न बैठने से (13) तुम क्या जानते हो ? तुम्हें कुछ आता-जाता नहीं है, ऐसा वचन कहने से (14) गुरु के संघ को तोड़ने का कार्य करने से।

प्र.26 किन स्थानों में साधु स्त्री के साथ बातचीत न करे ?

उ. (1) लोहारशाला में (2) दो घरों के मध्य संधि में (3) राजमार्ग में- अकेला साधु अकेली स्त्री के साथ न तो खड़ा रहे और न बातचीत करे।

प्र.27 विनयवान शिष्य को कितनी प्रकार की उपलब्धि प्राप्त होती है ?

उ. बारह - (1) लोकव्यापी कीर्ति (2) धर्माचरणकर्त्ताओं के लिए आधारभूत होना (3) पूज्यवरों की प्रसन्नता

(4) विनयाचरण से परिचित पूज्यों की प्रसन्नता से प्रचुर श्रुतज्ञान-प्राप्ति (5) शास्त्रीयज्ञान की सम्माननीयता (6) सर्व-संशय-निवृत्ति (7) गुरुजनों के मन को रुचिकर (8) कर्म सम्पदा (शुभ प्रकृतिरूप-पुण्यफलरूप) की सम्पन्नता (9) तपःसमाचारी एवं समाधि सम्पन्नता (10) पंचमहाव्रत पालन से महाद्युतिमत्ता (11) देव-गंधर्व- मानव पूजनीयता (12) देह त्याग के पश्चात् सर्वथा मुक्त अथवा अल्पकर्मा महर्द्धिक देव होना।

प्र.28 बुद्धोपघाती किसे कहते हैं ?

उ. बुद्ध अर्थात् आचार्य के प्रति जो ऐसा कहता है कि ये अल्पश्रुत हैं, उन्मार्ग प्ररुपक हैं, ये कुशील हैं, वह आचार्य का उपघाती होता है।

प्र.29 जैन साधु के भिक्षा ग्रहण की क्या विधि है ?

उ. (1) भिक्षा (गोचरी) के लिये गया हुआ साधु भोजन के लिये जनता की पंक्ति में खड़ा न हो (2) मुनि मर्यादा के अनुरुप एषणा करे (3) यदि पहले से ही अन्य भिक्षु गृहस्थ के द्वार पर खड़े हों, तो उनसे न अतिदूर, न अति समीप, न अन्य लोगों की दृष्टि के समक्ष खड़ा रहे, किन्तु एकान्त में खड़ा रहे। अन्य भिक्षुओं को लांघ कर भोजन के लिये घर में न जाये। (4) संयमी साधु अचित्त और परकृत (अपने लिये नहीं बनाया

गया) आहार ग्रहण करे (5) अत्यन्त ऊँचे या नीचे स्थान से लाया हुआ तथा न अत्यन्त निकट दिया जाता हुआ आहार ले और न अत्यन्त दूर से। (6) साधु एक घर से ही सारा भोजन न ले बल्कि अनेक घरों से थोड़ा-थोड़ा ग्रहण करे जिससे कि गृहस्थ को दुबारा बनाने का कष्ट नं हो। (7) साधु भिक्षा ग्रहण करने के लिये ऊँच-नीच जात-पात का भेद हटाकर सभी घरों से थोड़ा-थोड़ा आहार ग्रहण करे। (8) साधु अपने निमित्त से कुछ भी न बनवाये।

30 जैन साधु के आहार सेवन की क्या विधि है ?

(1) संयमी साधु प्राणी एवं बीजों से रहित, ऊपर से ढंके हुए और दीवार आदि से संवृत मकान में अपने साथी साधुओं के साथ भूमि पर न गिराता हुआ यत्नपूर्वक आहार ग्रहण करे। (2) आहार करते समय मुनि भोज्य पदार्थों के संदर्भ में बहुत अच्छा पकाया है, खूब अच्छा काटा है, अच्छा हुआ जो इस सब्जी का कड़वापन मिट गया है, इस पकवान में घी अच्छा भरा हुआ है, यह बहुत ही सुंदर है, इस प्रकार के सावद्य वचनों का प्रयोग न करें।

--0--

प्र.31 अलाभ परीषह की उत्पत्ति का क्या कारण है ?

उ. अन्तराय कर्म।

प्र.32 रोग परीषह किसे कहते हैं ?

उ. दुःसाध्य रोग हो जाने पर व्याकुल न होकर समभाव से सहन करना।

प्र.33 रोग परीषह की उत्पत्ति का क्या कारण है ?

उ. वेदनीय कर्म।

प्र.34 तृण स्पर्श परीषह किसे कहते हैं ?

उ. घास या तृण का तीक्ष्ण अनुभव तथा उसे समभाव से सहन करना।

प्र.35 तृण स्पर्श परीषह की उत्पत्ति का क्या कारण है ?

उ. वेदनीय कर्म।

प्र.36 जल्ल परीषह किसे कहते हैं ?

उ. जल्ल का अर्थ है मैल। शरीर पर पसीने से मैल जम जाए तो भी समभाव से रहना।

प्र.37 जल्ल परीषह की उत्पत्ति का क्या कारण है ?

उ. वेदनीय कर्म।

प्र.38 सत्कार पुरस्कार परीषह किसे कहते हैं ?

उ. चाहे जितना अभ्युत्थान वन्दन या वस्त्रादि या अभिनन्दन प्रशंसा होउससे प्रसन्न न होना, फूलना नहीं तथा सत्कार न मिलने पर खिन्न न होना।

प्र.39 सत्कार पुरस्कार परीषह की उत्पत्ति का क्या कारण है ?

उ. चारित्र मोहनीय कर्म।

प्र.40 प्रज्ञा परीषह किसे कहते हैं ?

उ. चमत्कारिणी बुद्धि होने पर गर्व न करना तथा वैसी बुद्धि न होने पर खेद न करना।

प्र.41 प्रज्ञा परीषह की उत्पत्ति का क्या कारण है ?

उ. ज्ञानावरणीय कर्म।

प्र.42 अज्ञान परीषह किसे कहते हैं ?

उ. विशिष्ट शास्त्र ज्ञान से गर्वित न होना तथा उसके अभाव में हीन भावना न लाना।

प्र.43 अज्ञान परीषह की उत्पत्ति का क्या कारण है ?

उ. ज्ञानावरणीय कर्म।

प्र.44 दर्शन परीषह किसे कहते हैं ?

उ. सम्यक श्रद्धा या देव गुरु धर्म सिद्धान्त आदि पर आस्था से विचलित न होना, अविचल चित्त होकर सहना।

प्र.45 दर्शन परीषह की उत्पत्ति का क्या कारण है ?

उ. दर्शन मोहनीय कर्म।

प्र.46 परीषहों से पराजित नहीं होने के क्या उपाय हैं ?

उ. सुधर्मा स्वामी ने परीषहों से पराजित न होने के निम्नोक्त उपाय बताये हैं- (1) परीषहों का स्वरुप एवं निर्वचन गुरुमुख से श्रवण करके, (2) इनका

प्र.15 अरति परीषह की उत्पत्ति का क्या कारण है ?

उ. चारित्र मोहनीय कर्म।

प्र.16 स्त्री परीषह किसे कहते हैं ?

उ. पुरुष या स्त्री साधक का अपनी साधना में विजातीय आकर्षण या मोह का प्रसंग आने पर न ललचाना, समभाव एवं ज्ञान बल से मन को मोड़ना स्त्री परीषह है।

प्र.17 स्त्री परीषह की उत्पत्ति का क्या कारण है ?

उ. चारित्र मोहनीय कर्म।

प्र.18 चर्या परीषह किसे कहते हैं ?

उ. ग्रामानुग्राम विचरण करने का कष्ट सहना।

प्र.19 चर्या परीषह की उत्पत्ति का क्या कारण है ?

उ. वेदनीय कर्म।

प्र.20 निषद्या परीषह किसे कहते हैं ?

उ. स्थिर आसन में बैठे हुए रहने में कष्ट या भय आदि का प्रसंग उपस्थित होना।

प्र.21 निषद्या परीषह की उत्पत्ति का क्या कारण है ?

उ. चारित्र मोहनीय कर्म।

प्र.22 शय्या परीषह किसे कहते हैं ?

उ. कोमल या कठोर, ऊँची या नीची, जगह जैसी भी हो, सहजभाव से प्राप्त हो जाये, वहाँ समभाव से सहन करना।

प्र.23 शय्या परीषह की उत्पत्ति का क्या कारण है ?

उ. वेदनीय कर्म।

प्र.24 आक्रोश परीषह किसे कहते हैं ?

उ. कोई व्यक्ति आक्षेप करे, कठोर वचन कहे, निन्दा या भर्त्सना करे, फिर भी समभाव से सहन करे।

प्र.25 आक्रोश परीषह की उत्पत्ति का क्या कारण है ?

उ. चारित्र मोहनीय कर्म।

प्र.26 वध परीषह किसे कहते हैं ?

उ. कोई व्यक्ति मारे या पीटे उसे समभाव से सहना करना।

प्र.27 वध परीषह की उत्पत्ति का क्या कारण है ?

उ. वेदनीय कर्म।

प्र.28 याचना परीषह किसे कहते हैं ?

उ. दीनता या अभिमान न रखते हुए भिक्षावृत्ति को धर्म समझकर संयम यात्रा के लिए स्वीकार करना।

प्र.29 याचना परीषह की उत्पत्ति का क्या कारण है ?

उ. चारित्र मोहनीय कर्म।

प्र.30 अलाभ परीषह किसे कहते हैं ?

उ. याचना करने पर अथवा भिक्षा के लिए घुमने पर भी आहारादि न मिले या पर्याप्त न मिले अथवा अनुकूल न मिले तो भी उसे समभाव पूर्वक सहना करना।

द्वितीय अध्ययन

परीषह-प्रविभक्ति

प्र.1 उत्तराध्ययन दूसरे अध्ययन का क्या नाम है ?

उ. परिषह प्रविभक्ति।

प्र.2 परीषह किसे कहते हैं ?

उ. धर्मपालन करते हुए आने वाले कष्टों से विचलित न होकर निर्जरा के लिये धर्म बुद्धि से समस्त कष्टों को समभाव पूर्वक सहन करना परीषह कहलाता है।

प्र.3 परीषह कितने है ?

उ. बाईस

प्र.4 क्षुधा परीषह किसे कहते हैं ?

उ. अपनी इच्छा का निरोध करके भूख की वेदना को समभावपूर्वक सहन करना क्षुधा परीषह है।

प्र.5 क्षुधा परीषह की उत्पत्ति का क्या कारण है ?

उ. वेदनीय कर्म।

प्र.6 पिपासा परीषह किसे कहते हैं ?

उ. प्यास के मारे अत्यन्त कण्ठ सूख रहा हो, फिर भी अपनी मर्यादा के विपरीत सचित जल न लेकर उक्त कष्ट को सहन करना पिपासा परीषह है।

प्र.7 पिपासा परीषह की उत्पत्ति का क्या कारण है ?

उ. वेदनीय कर्म।

प्र.8 शीत और उष्ण परीषह किसे कहते हैं ?

उ. ठंड और गर्मी के निवारण के लिए किसी भी सचित या अकल्पनीय वस्तु का सेवन न करके समभाव से सहन करना शीत और उष्ण परीषह है।

प्र.9 शीत और उष्ण परीषह की उत्पत्ति का क्या कारण है ?

उ. वेदनीय कर्म।

प्र.10 दंशमशक परीषह किसे कहते हैं ?

उ. डॉस, मच्छर, खटमल आदि जन्तुओं के काटने पर उन्हें मारने का विचार न कर समभावपूर्वक सहना दंशमशक परीषह है।

प्र.11 दंशमशक परीषह की उत्पत्ति का क्या कारण है ?

उ. वेदनीय कर्म।

प्र.12 अचेल परीषह किसे कहते हैं ?

उ. वस्त्राभाव या अल्प या जीर्ण वस्त्र के कारण होने वाले कष्ट को समभाव से सहन करना।

प्र.13 अचेल परीषह की उत्पत्ति का क्या कारण है ?

उ. चारित्र मोहनीय कर्म।

प्र.14 अरति परीषह किसे कहते हैं ?

उ. संयम पथ पर चलने में अनेक कठिनाईयाँ आने से अरति का प्रसंग आने पर भी अरति लाते हुए धैर्यपूर्वक उनमें रम जाना, अरति परीषह है।

अश्रेय, हित-अहित, कार्य-अकार्य का विवेक नहीं कर सकती।

प्र.16 सद्धर्म श्रवण किससे दुर्लभ बतलाया है ?

उ. मनुष्यत्व से।

प्र.17 धर्मश्रवण से भी दुर्लभ क्या है ?

उ. श्रद्धा।

प्र.18 श्रद्धा किसे कहते हैं ?

उ. श्रद्धा यानि यथार्थ दृष्टि, सत्य की प्रतीति, तत्वों के प्रति रुचि, धर्मनिष्ठा सम्बोधि।

प्र.19 श्रद्धा भ्रष्ट कितनी आत्माओं का वर्णन शास्त्र में आया ?

उ. सात - (1)जमालि; (2) तिष्यगुप्त (3) आषाढ़ाचार्य के शिष्य, (4) अश्वमित्र (5) गंगाचार्य (6) षडुलुक रोहगुप्त (7) गोष्ठामाहिल।

प्र.20 श्रद्धा से भी अधिक दुर्लभ क्या है ?

उ. संयम में पराक्रम।

प्र.21 चार दुर्लभ अंत प्राप्त होने पर जीव को किस फल की प्राप्ति होती है ?

उ. मोक्ष की प्राप्ति होती है।

--0--

चतुर्थ अध्ययन

असंस्कृत

प्र.1 उत्तराध्ययन सूत्र के चतुर्थ अध्ययन का क्या नाम है ?

उ. असंस्कृत।

प्र.2 असंस्कृत नाम किस सूत्र के आधार पर रखा गया है?

उ. समवायांग सूत्र।

प्र.3 निर्युक्ति के अनुसार इस अध्ययन का क्या नाम है ?

उ. प्रमादाप्रमाद (पमायाप्पमायं)।

प्र.4 असंस्कृत किसे कहते हैं ?

उ. असंस्कृत यानि जिसे सांधा नहीं (संस्कृत नहीं किया) जा सके या जोड़ा न जा सके।

प्र.5 जीवन के मुख्य कितने पड़ाव हैं ?

उ. जन्म, बाल्यावस्था, युवावस्था, वृद्धावस्था, मृत्यु।

प्र.6 साधु को किसके समान अप्रमत्त रहना चाहिये ?

उ. भारंड पक्षी की तरह।

प्र.7 साधक को किसे बंधन रूप में जानना चाहिए ?

उ. प्रमाद या द्वेष को।

प्र.8 मनुष्यत्व दुर्लभ क्यों है ?

उ. मनुष्य जन्म प्राप्त होने के बाद भी मनुष्यत्व प्राप्त करना अति दुर्लभ है क्योंकि मनुष्य देह तो पूर्व कर्म के फलस्वरुप कसाई, वेश्या, चोर, हत्यारे आदि को भी मिल जाती है। किन्तु मनुष्यत्व, धर्मसंस्कार, आर्य एवं कुलीन तो कर्मफल को निष्फल करने के बाद मिलता है।

प्र.9 मनुष्यत्व प्राप्ति में बाधक तत्व कौन-कौन से बताये गये हैं ?

उ. (1) एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक नाना गोत्र वाली जातियों में जन्म (2) देवलोक, नरकभूमि एवं आसुरकाय में जन्म (3) तिर्यञ्चगति द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय तथा पंचेन्द्रिय में जन्म (4) क्षत्रिय की तरह भोग साधनों की प्रचुरता के कारण संसार दशा से अविरक्ति (5) मनुष्येत्तर योनियों में सम्मूढता एवं वेदना के कारण (6) मनुष्यगतिनिरोधक कर्मो का क्षय होने पर भी तदनुरुप आत्मशुद्धि का अभाव।

प्र.10 मनुष्यत्व के बाद दुर्लभ किसे माना जाता है ?

उ. सद्धर्मश्रवण।

प्र.11 धर्मश्रवण में किसकी रुचि होती है ?

उ. जिसका अन्तःकरण धर्म संस्कारों से परिपूर्ण होता

है, जो आत्म विकास की अभिलाषी है, उन्हें ही धर्मश्रवण में रुचि होती है।

प्र.12 कौन-सी आत्मा धर्म श्रवण का लाभ नहीं ले पाता है ?

उ. महारंभ और महापरिग्रह इन दो के स्वरुप को जाने और छोड़े बिना प्रमादी आत्मा केवली प्ररुपितं धर्मश्रवण का लाभ नहीं ले पाती है।

प्र.13 धर्मश्रवण की रुचि किसे नहीं होती है ?

उ. जो दिन रात नाना प्रकार के आरंभ समारम्भ में तथा असीमित अर्थ आदि के संग्रह में लगा हो उसे धर्मश्रवण की रुचि नहीं होगी।

प्र.14 धर्मश्रवण में कितनी बाधाएं उत्पन्न होती है ?

उ. तेरह। (1) आलस्य (2) मोह (पारिवारिक या शारीरिक मोह के कारण विलासिता में डुब जाना या व्यस्त रहना) (3) अवज्ञा या अवर्ण (4) स्तम्भ (गर्व) (5) क्रोध (अप्रीति) (6) प्रमाद (7) कृपणता (द्रव्य व्यय की आशंका) (8) भय (9) शोक (10) अज्ञान (मिथ्या धारणा) (11) व्याकुलता (12) कुतुहल (नाटक आदि देखने की आकुलता) (13) रमण।

प्र.15 सद्धर्म श्रवण न होने पर आत्मा क्या नहीं कर सकती?

उ. सद्धर्म श्रवण न होने पर आत्मा हेय-उपादेय, श्रेय-

स्वरूप यथावत जानकर, (3) इन्हें जीतने का पुनः पुनः अभ्यास करे, इनसे परिचित होकर, (4) परीषहों के सामर्थ्य का सामना करके, उन्हें पराभूत करके या दबा कर।

प्र.47 उष्ण परीषह विजयी कौन बना ?

उ. अर्हन्नक मुनि।

प्र.48 दंशमशक परीषह पर विजय किसने प्राप्त की ?

उ. सुदर्शन मुनि ,चम्पापुरी के राजा रिपुमर्दन का राजकुमार- सुमनुभद्र मुनि।

प्र.49 वध परीषह किसे आया ?

उ. स्कंदक मुनि के 500 शिष्यों को।

प्र.50 रोग परीषह को किसने सहन किया ?

उ. कालवैशिक मुनि, सनत कुमार मुनि ने।

प्र.51 प्रज्ञा परीषह जयी कौन बने ?

उ. आषाढ भूति आचार्य।

प्र.52 कौन से मुनि "धम्मो मंगल मुक्किट्ठं" यह गाथा वर्ष पर याद करते रहे फिर भी याद नहीं हुई ?

उ. भद्रमति मुनि।

प्र.53 शीत परीषह को किसने सहन किया ?

उ. भद्रबाहु स्वामी के चार शिष्यों ने।

प्र.54 क्या परीषह साधक के लिये बाधक है ?

उ. नहीं। साधक के लिए बाधक नहीं, अपितु प्रगति का कारण है।

--0--

तृतीय अध्ययन

चतुरंगीय

प्र.1 उत्तराध्ययन सूत्र के तीसरे अध्ययन का क्या नाम है ?

उ. चतुरंगीय।

प्र.2 चतुरंगीय का क्या अर्थ है ?

उ. चार अंग।

प्र.3 चार अंग कौन से हैं ?

उ. (1) मनुष्यत्व (2) सद्धर्मश्रवण (3) सद्धर्म में श्रद्धा (4) संयम में पराक्रम।

प्र.4 इन चार अंगों को परम अंग क्यों माना है ?

उ. अत्यन्त निकट, उपकारी तथा मुक्ति के कारण होने से ये परम अंग माने गये हैं ?

प्र.5 संसार यात्रा में चलते हुए सबसे दुर्लभ किसे माना है ?

उ. मनुष्य जन्म।

प्र.6 मनुष्य जन्म को दुर्लभ क्यों माना गया है ?

उ. मनुष्य शरीर से ही यह आत्मा सिद्ध, बुद्ध मुक्त हो सकता है। अन्य शरीर से नहीं।

प्र.7 चार अंगों में सबसे दुर्लभता धारी कौन सी है ?

उ. मनुष्यत्व।

प्र.8 "धर्म बुढ़ापे में करना चाहिए, पहले नहीं"- इस धारणा का भगवान महावीर ने क्या निराकरण किया ?

उ. धर्म करने के लिये सभी काल उपयुक्त हैं। धर्म उम्र का मोहताज नहीं है। बुढ़ापा आयेगा या नहीं, ये निश्चित नहीं है और अगर बुढापा आ भी गया तो इंद्रिया शिथिल हो जायेंगी, रोगशत्रु घेर लेंगे, कोई शरणदाता या रक्षा करने वाला नहीं होगा।

प्र.9 भगवान महावीर ने जीवन को कैसा बताया है ?

उ. भगवान महावीर ने कहा- जीवन असंस्कृत है अर्थात् टूटने वाला है, उसे किसी भी मंत्र-तंत्र देव अवतार आदि की सहायता से सांधा नहीं जा सकता है।

प्र.10 "धन असंस्कृत जीवन का रक्षक है", इस धारणा का भगवान महावीर ने क्या निराकरण किया ?

उ. भगवान महावीर ने कहा- धन न यहाँ किसी का त्राण बन सकता है और न ही परलोक में। बल्कि जो व्यक्ति पापकर्मो द्वारा धनोपार्जन करते हैं, वे उस धन को यहीं छोड़ जाते हैं और चोरी, अनीति, बेईमानी, ठगी, हिंसा आदि पापकर्मो के फलस्वरुप वे अनेक जीवों के साथ बैर बांधकर नरक के मेहमान बनते हैं। अतः धन का व्यामोह मनुष्य के विवेक-दीप को बुझा देता है, जिससे वह यथार्थ पथ को नहीं देख पाता। अज्ञान बहुत बड़ा प्रमाद है।

प्र.11 "कृत कर्मों का फल अगले जन्म में मिलता है। भगवान को प्रसन्न करते कर्मफल से छूट जायेंगे" इस धारणा का भगवान महावीर ने क्या निराकरण किया ?

उ. कृतकर्मो को भोगे बिना छुटकारा नहीं मिलता। कर्मो का फल इस जन्म में भी मिलता है और आगामी जन्म में भी। कर्मों के फल से दूसरा कोई भी बचा सकता। उसे भोगना अवश्यम्भावी है।

प्र.12 "यदि एक व्यक्ति अनेक व्यक्तियों के लिये कोई शुभाशुभ कर्म करता है तो उसका फल वे सब भुगतते हैं" - इस भ्रांति का खंडन भगवान महावीर ने किस प्रकार किया ?

उ. भगवान महावीर ने कहा - संसारी जीव अपने बान्धवों के लिए जो साधारण (सम्मिलित फल वाला) कर्म कराते है, उसका फल भोगने के समय वे बांधव बंधुता (भागीदारी) स्वीकार नहीं कर सकते। हिस्सा नही बटाते। अतः धन, परिजन आदि सुरक्षा के समस्त साधनों के आवरणों में छिपी हुई असुरक्षा और पापकर्म फल भोग को व्यक्ति न भूले।

प्र.13 "साधना के लिये संघ या गुरु आदि का आश्रय विघ्नकारक है, व्यक्ति को स्वयं एकाकी साधना करनी चाहिए" इस मिथ्याधारणा का भगवान महावीर ने क्या निराकरण किया ?

उ. भगवान महावीर ने कहा - जो स्वच्छंद वृत्ति का निरोध करके गुरु के सान्निध्य में रहकर शिक्षा प्राप्त करके साधना करता है, वह प्रमादविजयी होकर मोक्ष पा लेता है।

प्र.14 "अभी तो हम जैसे-जैसे चल लें, बाद में सावधान हो जायेंगे" ऐसी धारणा का निराकरण भगवान महावीर ने किस प्रकार किया है ?

उ. भगवान महावीर ने कहा है - जो पूर्व जीवन में अप्रमादी नहीं होता, वह बाद के जीवन में भी अप्रमत्तता को नहीं पा सकता। जब आयुष्य शिथिल हो जायेगा, मृत्यु सिराहने पर आ खड़ी होगी, शरीर छूटने लगेगा, तब प्रमादी व्यक्ति के हाथ में विषाद और पछतावे के सिवाय कुछ भी नहीं आवेगा।

प्र.15 "हम जीवन के अन्तिम भाग में आत्मविवेक कर लेंगे, शरीर पर मोह न रखकर आत्मरक्षा कर लेंगे"। लोगों की इस मान्यता का भगवान महावीर ने क्या निराकरण किया है ?

उ. भगवान महावीर ने कहा - कोई भी मनुष्य तत्काल आत्मविवेक (शरीर और आत्मा की पृथकता का भान) नहीं कर सकता। अतः दृढ़ता से ्ंय थ'
खड़े होकर आलस एवं कामभोगों के
में रमण करो। अप्रमत्त होकर अ।

प्र.16 "प्रमाद के भयस्थलों" से बचने का क्या निर्देश किया गया है ?

उ. (1) मोहनिद्रा में सुप्त व्यक्तियों में भी भारण्डपक्षीवत् जागृत होकर रहो, (2) समय शीघ्रता से आयु को नष्ट कर रहा है, शरीर दुर्बल व विनाशी है, इसलिये प्रमाद में जरा भी विश्वास न करो (3) पग-पग पर दोषों से आशंकित होकर चलो (4) जरा सा भी प्रमाद (मन-वचन-काया की अजागृति) बंधनकारक हो सकता है (5) शरीर को पोषण-रक्षण-संवर्धन भी तब तक करो, जब तक उससे ज्ञानादि गुणों की प्राप्ति हो, जब गुण प्राप्ति न हो, ममत्व का त्याग कर दो, (6) विविध अनुकूल-प्रतिकूल विषयों पर राग-द्वेष न करो (7) कषायों का त्याग भी अप्रमादी के लिये आवश्यक है (8) प्रतिक्षण अप्रमत्त रहकर अन्तिम सांस रत्नत्रय आदि गुणों की आराधना में तत्पर रहो।

प्र.17 भगवान महावीर ने किसे तुच्छ कहा है ?

उ. जो व्यक्ति ऊपर-ऊपर से संस्कृत हैं, दूसरों की निंदा करने वाले हैं, राग-द्वेष में फंसे हुए हैं, पराधीन हैं यानि परवस्तुओं में आसक्त हैं। ये सब धर्मरहित व्यक्ति तुच्छ हैं।

--0--

पंचम अध्ययन

अकाम मरणीय

प्र.1 उत्तराध्ययन के पाँचवे अध्ययन का क्या नाम है ?

उ. अकाम मरणीय।

प्र.2 निर्युक्ति के पाँचवे अध्ययन का क्या नाम है ?

उ. मरण विभक्ति

प्र.3 आत्मा के संसार यात्रा के कितने पड़ाव हैं ?

उ. दो - जन्म और मरण।

प्र.4 जीवन कला से कौन सी आत्मा अनभिज्ञ है ?

उ. जो सिर्फ जीने की कला जानती है। मृत्यु की कला नहीं जानती। वास्तव में वे जीवन कला से अनभिज्ञ हैं।

प्र.5 पंचम अध्ययन में किसका वर्णन किया गया है ?

उ. मरण किस प्रकार का हो, इसका वर्णन किया गया है।

प्र.6 मरण क्या है ?

उ. आत्मा द्रव्यदृष्टि से नित्य होने के कारण उसका मरण नहीं होता, शरीर भी पुद्‌गलद्रय की दृष्टि से शाश्वत है- ध्रुव है, उसका भी मरण नहीं होता। मृत्यु का संबंध आत्मद्रव्य की प्रतिक्षण उत्पाद-व्यय-पर्याय-परिवर्तन से भी नहीं है और नही

का परिवर्तन मृत्यु है। आत्मा का शरीर को छोड़ना मृत्यु है। आत्मा शरीर को तभी छोड़ता है जब आत्मा और शरीर को जोड़े रखने वाला आयु कर्म प्रतिक्षण क्षीण होता-होता सर्वथा क्षीण हो जाता है।

प्र.7 मरण के मुख्य कितने भेद हैं ?

उ. दो - (1) सकाम मरण (2) अकाम मरण।

प्र.8 अकाम मरण किसे कहते हैं ?

उ. अकाम मरण या बाल्यमरण जो व्यक्ति विषयों में आसक्त होने के कारण मरना नहीं चाहता, किन्तु आयु पूर्ण होने पर विवशतापूर्वक मरना अकाम मरण है।

प्र.9 अकाम मरण का दूसरा नाम क्या है ?

उ. अकाम मरण का दूसरा नाम अविरति या मिथ्यादृष्टि का मरण।

प्र.10 सकाम मरण किसे कहते हैं ?

उ. जो व्यक्ति विषयों के प्रति आसक्त नहीं एवं मृत्यु के समय संत्रस्त या भयभीत नहीं होता, किन्तु उसे अनिवार्य घटना मानकर प्रसन्नतापूर्वक मृत्यु का स्वागत करता है, साथ ही उसे उत्सव रूप मानता है, उस व्यक्ति के मरण को सकाम मरण कहते हैं।

प्र.11 किस आत्मा का मरण एक बार होता है और किसका बार-बार ?

उ. व्रत नियम संयमरत् तपोधनी पंडितों का मरण अर्थात्

केवली भगवान का मरण एक बार होता है तथा अज्ञानी मिथ्यादृष्टि का मरण बार-बार होता है।

प्र.12 बाल जीव कामभोगों में मग्न क्यों ?

उ. अज्ञानी जीव कामभोगों के सुख को प्रत्यक्ष मानता है और परलोक को परोक्ष। इसलिए वह कामभोगों में मग्न रहता है ?

प्र.13 दण्ड किसे कहते हैं ?

उ. जिससे आत्मा दंडित हो या जिसके द्वारा प्राणियों को दंडित, पीड़ित किया जाये, उसे दण्ड कहते हैं।

प्र.14 दण्ड कितने हैं ?

उ. तीन - मन, वचन व काय दण्ड।

प्र.15 शठ किसे कहते हैं ?

उ. शठ के 4 अर्थ हैं : (1) धूर्त : जो वेश परिवर्तन कर अपने आपको अन्य रुप में प्रकट करता है ऐसा बहरुपिया, (2) मूढ, (3) दुष्ट अथवा (4) आलसी।

प्र.16 वृहदवृत्ति में शठ को क्या कहा गया है ?

उ. वृहदवृत्ति में शठ को मंडिक चोरवत् कहा गया है।

प्र.17 जीवों की उत्पत्ति कितने प्रकार से होती है ?

उ. तीन प्रकार से :- (1) सम्मूर्च्छिम, (2) गर्भज, (3) उपपात।

प्र.18 उपपात (जन्म) किसका होता है ?

उ. देवता तथा नारकी।

प्र.19 सम्मूर्च्छिम जीव किसे कहते हैं ?

उ. जो अशुचि स्थानों पर उत्पन्न होते हैं।

प्र.20 गर्भज जन्म किसका होता है ?

उ. मनुष्य और तिर्यंच का।

प्र.21 मृत्यु से कौन नहीं डरता है ?

उ. संयति (संयमनिष्ठ) मुनि।

प्र.22 मृत्यु को उत्सव रुप कौन मनाते हैं ?

उ. जिनके पास सुग्रहित तप रुपी पाथेय है, जिनका सम्यक्त्व ज्ञान और चारित्र विशुद्ध है, वे समाहित आत्मा वाले श्रमण मृत्यु को 'उत्सव रुप' में मनाते हैं।

प्र.23 पंडित मरण का लक्षण क्या है ?

उ. धर्मात्मा एवं धर्मफल के ज्ञाता मृत्यु के समय जरा भी नहीं घबराते बल्कि मृत्यु के समय वे सोचते हैं - मैं कृतकृत्य हूँ कि मैने धर्म उपार्जित किया है। उसका फल दुर्गति हो ही नहीं सकता। मिलेगी सद्गति ही। यही पंडित मरण का लक्षण है।

प्र.24 अनशन के कितने भेद हैं ?

उ. तीन : (1) भक्ति परिज्ञा, (2) इंगितमरण, (3) पादपोपगमन।

प्र.25 भक्त परिज्ञा किसे किसे कहते हैं ?

उ. जिसमें त्रिविध या चतुर्विध आहार और बाह्य-आभ्यान्तर उपधि का यावत जीवन के लिए

प्रत्याख्यान रूप अनशन किया जाता है, वह भक्त परिज्ञा है।

प्र.26 इंगित मरण किसे कहते हैं ?

उ. जिससे अनशनकर्ता एक निश्चित स्थान में रहता है, उससे बाहर नहीं जाता। इसमें दूसरों से सेवा नहीं ली जांती। साधक स्वयं अपनी व्यवस्था करता है।

प्र.27 पादपोपगमन संथारा किसे कहते हैं ?

उ. कटे हुए वृक्ष की भाँति शरीर निरपेक्ष होकर स्थिर रहना, पादपोपगमन अनशन कहलाता है। साधक न स्वयं अपनी सेवा करता है, न दूसरों से कराता है।

प्र.28 "कई साधुओं की अपेक्षा गृहस्थ संयम में श्रेष्ठ होते हैं", इस कथन की विवेचना कीजिये।

उ. अव्रती, अचारित्री, अविनीत, महाव्रतों में दोष लगाने वाले छः काय की हिंसा में रत नामधारी भिक्षुओं की अपेक्षा सम्यक् दृष्टि युक्त देशविरत गृहस्थ संयम में श्रेष्ठ होते हैं क्योंकि उस गृहस्थ का संयम परिपूर्ण होता है। एक श्रावक और साधु में तथा वेषधारी साधु और श्रावक में सरसों और मेरुपर्वत जितना अंतर बताया गया है।

प्र.29 साधु सुशील हो या दुःशील- वह भिक्षाचर्या करके जीवन यापन कर रहा है, फिर वह श्रेष्ठ .

उ. केवल भिक्षाजीविता नरक से नहीं बचा

प्र.30 श्रद्धावान साधक के लिये भगवान का क्या संकेत हैं ?

उ. श्रद्धावान श्रावक गृहस्थ की सामायिक-साधना के सभी अंगों का काया से स्पर्श करे। कृष्ण और शुक्ल दोनों पक्षों में पौषधव्रत को एक रात्रि के लिये भी न छोड़े। इस प्रकार शिक्षा यानि व्रताचरण के अभ्यास से सम्पन्न सुव्रती गृहवास में रहता हुआ भी मनुष्य संबंधी औदारिक शरीर से मुक्त हो जाता है और देवलोक में जाता है।

प्र.31 मृत्यु के मुख में पड़कर शोक कौन मनाता है ?

उ. जैसे कोई गाड़ीवान अनुकूल मार्ग को जानता हुआ भी उसे छोड़कर विषम मार्ग में उतर जाता है, तो गाड़ी के नष्ट हो जाने पर शोक करता है, वैसे ही धर्म का उल्लंघन करके जो अज्ञानी अधर्म को स्वीकार कर लेता है वह मृत्यु के मुख में पड़ने पर शोकग्रस्त हो जाता है। फिर वह अज्ञानी जीव प्राणांत के समय नरक एवं परलोक आदि के भय से व्याकुल हो उठता है और एक ही दांव में सर्वस्व हार जाने वाले जुआरी की तरह शोक करता हुआ अकाम मरण से मर जाता है।

--0--

षष्ठम अध्ययन
निर्ग्रन्थीय

प्र.1 छठे अध्ययन का क्या नाम है ?

उ. क्षुल्लक निर्ग्रंथीय।

प्र.2 क्षुल्लक निर्ग्रन्थ अध्ययन का दूसरा नाम क्या है ?

उ. क्षुल्लक निर्ग्रन्थ सूत्र (निर्युक्ति)।

प्र.3 क्षुल्लक निर्ग्रन्थ किसे कहते हैं ?

उ क्षुल्लक निर्ग्रन्थ यानि छोटा साधु या लघु शिष्य जो कुछ ही दिन हुए मुनि धर्म में दीक्षित हुआ हो, साथ ही निर्ग्रन्थ बना हो।

प्र.4 बौद्ध साहित्य में भगवान महावीर को क्या कहा गया है ?

उ. निग्गंठ (निर्ग्रन्थ)

प्र.5 कितने ग्रंथों का त्याग करने से क्षुल्लक अर्थात् साधु निर्ग्रन्थ होता है ?

उ. सूक्ष्म और स्थूल।

प्र.6 ग्रंथ किसे कहते हैं ?

उ. कषायवश या रागद्वेष, मोहवश, आत्मा जिन पदार्थो से कर्मो द्वारा ग्रंथित हो जाता है, जकड़ जाता है या बंध जाता है उसे ग्रंथ कहते हैं। अथवा जिन क्षेत्र

वस्तु धन धन्यादि के साथ अथवा मिथ्यात्व कषाय आदि के साथ प्राणी आत्मा को कर्म के साथ ग्रंथित संबंद्ध कर देते हैं, उसे भाव ग्रंथ कहते हैं।

प्र.7 ग्रंथ कितने प्रकार का होता है ?

उ. 2 प्रकार का। बाह्य और आभ्यान्तर।

प्र.8 बाह्य ग्रंथ कितने प्रकार का है ?

उ. दस। (1) क्षेत्र, (2) वस्तु (भूमि, आदि), (3) धन, (4) धान्य, (5) संथारा (तृण) काष्ठादि संग्रह, (6) संयोग (स्वजन आदि), (7) यान (वाहन), (8) शय्यासन (पलंग, चौकी आदि), (9) दास-दासी, (10) कुष्य (घर का उपयोगी सामान)

प्र.9 आभ्यान्तर ग्रंथ कितने प्रकार का है ?

उ. 14 प्रकार का। क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, मिथ्यात्व, वेद, अरति, रति, हास्य, शोक, भय, जुगुप्सा।

प्र.10 जैन धर्म का दूसरा नाम क्या है ?

उ. निर्ग्रन्थ धर्म।

प्र.11 निर्ग्रंथीय अध्ययन में मिथ्यात्व के बदले किस शब्द का प्रयोग किया गया है ?

उ. अविद्या।

प्र.12 पांतजल योग दर्शनानुसार अविद्या किसे कहते हैं ?

अनित्य में नित्य की, अशूचि में शूचि की, सुख में

दुःख की, अनात्मा में आत्मा की अनुभूति करना अविद्या है ?

प्र.13 जैन दर्शन में मिथ्यात्व के पर्यायवाची शब्द कौन-कौन से हैं ?

उ. विपरीत दृष्टि, विपरीत श्रद्धा या अविद्या।

प्र.14 दुःखों की जननी और अनन्त संसार भ्रमणकारिणी कौन है ?

उ. अविद्या।

प्र.15 अपने लिए दुःख कौन उत्पन्न करता है ?

उ. जो मन, वचन, काया से शरीर में तथा वर्ण और रुप में सब प्रकार से आसक्त है, वे सभी अविद्यावान पुरुष अपने लिये दुःख उत्पन्न करते हैं।

प्र.16 अविद्यावान पुरुष से क्या आशय है ?

उ. जिनका चित्त मिथ्यात्व से ग्रस्त हो, जिनमें तत्वज्ञान न हो, वे अविद्यावान पुरुष हैं। विद्या शब्द प्रचुर शुद्ध ज्ञान के अर्थ में है। जिसमें विद्या न हो, वे अविद्या पुरुष हैं। अविद्या का अर्थ सर्वथा ज्ञान शून्यता नहीं है अपितु तत्वज्ञान का अभाव है क्योंकि कोई भी सर्वथा ज्ञानशून्य होता ही नहीं।

प्र.17 अविद्यावान से विद्यावान कैसे बना जा सकता है ?

उ. मिथ्यादृष्टि को त्याग कर, अशरण-शरण केन्द्रों का विवेक रखकर तत्वज्ञान द्वारा सार-असार का भेद

करने की क्षमता, दक्षता प्राप्त करते हुए विद्यावान बना जा सकता है। स्वयं ही सत्य की खोज करके विद्यावान बना जा सकता है।

प्र.18 इस संसार में कितने प्रकार की अविद्याजनित मान्यताएँ हैं ?

उ. (1) इस संसार में कुछ लोग यह मानते हैं पापों का त्याग किये बिना ही केवल तत्वज्ञान तथा अपने मत के बाह्य आचार को जानने मात्र से ही मनुष्य सभी दुःखों से मुक्त हो सकता है। संक्षेप में एकान्त ज्ञान से ही दुःखमुक्त हो सकता है, क्रिया आचरण की कोई आवश्यकता नहीं है। (2) कुछ लोग यह मानते हैं कि लच्छेदार भाषा में अपने सिद्धान्तों को प्रस्तुत कर देने मात्र से कल्याण हो जाता है। वे लोग केवल वाणी की वीरता से अपने आप को झूठा आश्वासन देते रहते हैं। (3) कुछ लोग यह मानते हैं कि विविध भाषायें सीख कर, अपने-अपने धर्म के शास्त्रों को मूल भाषा में उच्चारण करने मात्र से अथवा विविध शास्त्रों को सीख लेने-रट लेने मात्र से पापों या दुःखों से रक्षा हो जायेगी।

ऐसे अविद्यावादी स्वयं को पंडित-ज्ञानी मानने वाले अज्ञानीजन पापकर्म रुपी कीचड़ में फँसे हुए हैं।

प्र.19 मुनि किसके समान निरपेक्ष प्रवृत्ति करे ?

उ. मुनि को पक्षी के समान निरपेक्ष प्रवृत्ति करनी चाहिए। जैसे पक्षी अपने पंखों को साथ लिये हुये उड़ता है, उसे पीछे की कोई चिन्ता नहीं रहती, वैसे ही साधु अपने पात्र, वस्त्रादि उपकरणों को जहाँ जाये, वहाँ साथ ले जाये, कहीं रखे-छोड़े नहीं। अर्थात् पीछे की चिंता से मुक्त होकर विचरण करे। जैसे पक्षी दूसरे दिन के लिये संग्रह न करके निरपेक्ष होकर उड़ जाता है, वैसे ही भिक्षु मधुकर वृत्ति से निरपेक्ष-निर्वाह करे।

प्र.20 मुनि को कितने प्रकार के प्रमादों से बचना चाहिये ?

उ. मुनि को निम्नलिखित सात प्रकार के प्रमादों से बचना चाहिये -

(1) शरीर और उसके रूप-रंग आदि पर मन-वचन-काया से आसक्त न हो, शरीरासक्ति प्रमाद है। शरीरासक्ति से मनुष्य अनेक पापकर्म करता है और विविध योनियों में परिभ्रमण करता है, यह लक्ष्य रख कर सदैव अप्रमत्त रहे। (2) शरीर से ऊपर उठकर मोक्षलक्ष्यी या आत्मलक्ष्यी रहे, शारीरिक विषयाकांक्षा न रखे, अन्यथा प्रमादलिप्त हो जाएगा। (3) मिथ्यात्वादि कर्मबंधन के कारणों से बचे, जब भी कर्मबंधन काटने का अवसर आए, न चूके।

(4) संयमयात्रा के निर्वाह के लिये आवश्यकतानुसार उचित मात्रा में आहार ग्रहण-सेवन करे, अनावश्यक तथा अधिक मात्रा में आहार का ग्रहण-सेवन करना प्रमाद है। (5) संग्रह करके रखना प्रमाद है, अतः लेशमात्र भी संगह न रखे, पक्षी की तरह निरपेक्ष रहे। जब भी आहार की आवश्ंयकता हो तब भिक्षापात्र लेकर गृहस्थों से निर्दोष आहार ग्रहण करे। (6) ग्राम, नगर आदि में नियत निवास करके प्रतिबद्ध होकर रहना प्रमाद है, अतः नियत निवासरहित अप्रतिबद्ध होकर विहार करे। (7) संयम मर्यादा को तोड़ना निर्लज्जता है- प्रमाद है, अतः साधु लज्जावान् (संयम मर्यादावान्) रहकर अप्रमत्त होकर विचरण करे।

21 जैन दर्शनानुसार मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

धर्म-अधर्म, अजीव-जीव, साधु-असाधु, संसार मार्ग- मोक्ष मार्ग, कर्म युक्त - अकर्मयुक्त आदि के प्रति विपरीत दृष्टि या श्रद्धा ही मिथ्यात्व है।

22 भाव दिशा कितनी बतायी गयी है ?

अठारह। पृथ्वीकाय, अपकाय, तेऊकाय, वायुकाय, मूलबीज, स्कन्ध बीज, अग्रबीज, पर्वबीज, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, तिर्यंच योनिक, नारक, देव, सम्मूर्च्छिम, कर्मभूमि, अकर्मभूमि, अन्तर्द्वीप।

प्र.23 वैशालिय के कितने अर्थ हैं ?

(1) जिसके विशाल गुण हो, (2) विशाल इक्ष्वांकु वश में उत्पन्न, (3) जिसके शिष्य, तीर्थ (शासन) तथा यश आदि गुण विशाल हो, (4) वैशाली जिसकी माता हो, (5) विशाला - त्रिशला का पुत्र, (6) जिसका प्रवचन विशाल हो।

प्र.24 वैशालिए शब्द का प्रयोग किसके लिये किया जाता है ?

उ. भ. महावीर के लिए।

--0--

सप्तम अध्ययन

उरभ्रीय

प्र.1 सातवें अध्ययन का क्या नाम है ?

उ. उरभ्रीय।

प्र.2 उरभ्र किसे कहते हैं ?

उ. मेड का बच्चा या बकरी का मेमना।

प्र.3 समवायांग अनुयोग द्वार में उरभ्रीय अध्ययन का क्या नाम है ?

उ. एकलीय।

प्र.4 मार्ग कितने हैं ?

उ. दो - श्रेय और प्रेय मार्ग।

प्र.5 श्रेय मार्ग का क्या अर्थ है ?

उ. त्याग, तप एवं विशाल कषायादि के मुक्त आत्म सुख का मार्ग।

प्र.6 प्रेय मार्ग किसे कहते हैं ?

उ. अदूरदर्शी होकर परिमाण मे दुःख वाले क्षणिक विषय सुखों का मार्ग।

प्र.7 इस अध्ययन में सर्वप्रथम किसका वर्णन है ?

उ. सर्वप्रथम उरभ्र (मेड़) का वर्णन है।

प्र.8 श्रमण संस्कृति का मूल आधार क्या है ?

उ. कामयोगों के प्रति अनासक्ति।

प्र.9 क्षणिक सुखों में विशेषतः इस ग्रंथि में फंसने वाले साधक के लिए किसका दृष्टांत दिया गया है ?

उ. मेड़े या बकरे का।

प्र.10 दीर्घायु होने का क्या लक्षण है ?

उ. सात्विक भोजन (पथ्यकारी. सुपाच्य भोजन)

प्र.11 नरकाकांक्षी एवं मरणकाल में शोकग्रस्त जीव की दशा किसके समान होती है ?

उ. मेढ़े या बकरे के समान।

प्र.12 अल्पकालीन सुखों के पीछे दीर्घकालीन सुखों को हारने के लिए कितने दृष्टांत इस अध्ययन में बताये हैं ?

उ. दो दृष्टात : काकिणी तथा आम्र फलासक्त राजा का।

प्र.13 काकिणी किसे कहते हैं ?

उ. एक रु. का 80वाँ भाग, बीस कौड़ियों का एक काकणी। बीस मासों का एक पण, उसके अनुसार 5 मासों की एक काकणी, 20 कौड़ी के मूल्य का एक सिक्का। (आज की भाषा में 20 पैसा)।

प्र.14 क्षणिक विषय सुखों के लिए अज्ञानी जीव क्या करता है ?

उ. क्षणिक विषय सुखों के लिए अज्ञानी जीव हिंसादि करता है। झूठ-फरेब, लुटपाट, चोरी-ठगी करता है, एवं स्त्रियों में आसक्त रहकर मद्य-मांस का सेवन करता है तथा नरकगामी बनता है।

प्र.15 क्षणिक विषय सुख की अभिलाषी आत्मा की उपमा किससे की गयी है ?

उ. मेमने या मेढ के बच्चे से।

प्र.16 महा आरंभी किसे कहते हैं ?

उ. अनेक प्राणियों का घात करने वाली प्रवृत्ति (व्यापार) महा आरम्भ है तथा इस प्रवृत्ति को करने वाले महा आरंभी है।

प्र.17 महापरिग्रही किसे कहते हैं ?

उ. धन-धान्यादि का अत्याधिक संग्रह महापरिग्रह है और इनका संग्रह करने वाला महा परिग्रही है।

प्र.18 आत्मा का मूलधन क्या है ?

उ. मनुष्यत्व।

प्र.19 आत्मा का अतिरिक्त लाभ रुप क्या है ?

उ. देव भव।

प्र.20 आत्मा का मूलधन नष्ट हो जाने से क्या प्राप्त होता हैं ?

उ. नारक एवं तिर्यंच गति।

प्र.21 अज्ञानी जीव की गति कितने प्रकार की है ?

उ. दो प्रकार - नारकी एवं तिर्यंच

--0--

अष्टम अध्ययन

कापिलीय

प्र.1 आठवें अध्ययन का क्या नाम है ?

उ. कापिलीय।

प्र.2 इस अध्ययन का नाम कापिलीय क्यों पड़ा ?

उ. कपिल मुनि का वर्णन होने से।

प्र.3 दुर्गति की ओर चरण बढ़ने का मुख्य कारण क्या है ?

उ. लोभ और काम।

प्र.4 कपिल कहाँ का रहने वाला था ?

उ. कौशाम्बी नगरी ?

प्र.5 कपिल के माता-पिता का क्या नाम था ?

उ. काश्यप पिता, यशा माता।

प्र.6 कपिल पर दुःखों का पहाड़ कब गिरा ?

उ. अल्पायु में ही जब पिता की मृत्यु हो गयी।

प्र.7 कपिल की माता किसे देखकर आँखों में आँसू गिराने लगी ?

उ. अपने पति काश्यप की जगह दूसरे ब्राह्मण को देखकर जो कि काश्यप के स्थान पर राज्यसभा में नियुक्त हुआ।

प्र.8 कपिल ने माँ को क्या कहा ?

उ. मैं भी विद्या पढकर विद्वान बनूंगा।

प्र.9 कपिल विद्याध्ययन करने किस नगर में पहुँचा ?

उ. श्रावस्ती नगर में।

प्र.10 कपिल ने श्रावस्ती नगर में किसके पास अध्ययन किया ?

उ. इन्द्रदत्त उपाध्याय के पास।

प्र.11 कपिल की भोजन व्यवस्था उपाध्याय ने कहाँ की ?

उ. शालिभद्र श्रेष्ठी के यहाँ पर।

प्र.12 श्रेष्ठी ने उसकी व्यवस्था किसे सौंपी ?

उ. एक दासी को।

प्र.13 दासी और कपिल का साथ किस रुप में परिणित हुआ ?

उ. प्रेम रुप में।

प्र.14 दासी की इच्छा का क्या कारण था ?

उ. जन महोत्सव में जाने योग्य वस्त्राभूषण, धन या साधन का नहीं होना।

प्र.15 दासी ने अपनी इच्छा पूरी करने के लिए कपिल को क्या कहा ?

उ. इस नगरी में धन कुबेर राजा है, प्रथम बधाई देने वाले को वह दो मासा सोना देता है।

प्र.16 बधाई देने के लिए कपिल ने क्या किया ?

उ. दो माशा सोना लाने के लिए आधी रात को ही चल दिया।

प्र.17 आधी रात बाजार में घुमते देख पहरेदारों ने क्या किया ?

उ. चोर समझकर पकड़ा तथा जेल में डाल दिया।

प्र.18 किसके पूछने पर कपिल ने अपनी मन की बात बतायी ?

उ. राजा के।

प्र.19 कपिल पर राजा प्रसन्न क्यों हुआ ?

उ. कपिल की स्पष्टता, सरलता एवं चेहरे की शांति देख राजा बहुत प्रभावित हुआ एवं प्रसन्न हो गया।

प्र.20 राजा ने कपिल से क्या मांगने के लिये कहा ?

उ. मनोवांछित वस्तु।

प्र.21 मनोवांछित वस्तु मांगने के लिए कपिल सोचने के लिए कहाँ पहुँचा ?

उ. उद्यान में।

प्र.22 उद्यांन में कपिल की क्या विचारधारा बनी ?

उ. विचारधारा दो माशा से लेकर राज्य मांगने तक की बन गयी।

प्र.23 सहसा विचारधारा ने क्या मोड़ लिया ?

उ. मैं कितना पागल हूँ। सारे संसार का धन भी मिल जाये तो भी क्या मन को संतुष्टिएवं शांति मिल सकती है ?

प्र.24 कपिल की बदली विचारधारा से क्या समाधान मिला ?

उ. धनादि वस्तुओं से निरपेक्षता, संतोष, त्याग, निर्लोभिता ही सच्ची शांति है।

प्र.25 समाधान मिलते ही कपिल का मन किस आध्यात्म चिंतन में डूब गया ?

उ. संतोष और वैराग्य से उसका मन भाव विभोर होकर आध्यात्म चिंतन में डूब गया।

प्र.26 चिंतन करते हुए कपिल को कौन-सा ज्ञान हुआ?

उ. जाति स्मरण ज्ञान।

प्र.27 कपिल ने किससे बोध पाया ?

उ. स्वयं ही।

प्र.28 सिद्ध के कितने भेदों में से कौन-सा भेद कपिल ने पाया ?

उ. पन्द्रह भेदों में से स्वयं बुद्ध का।

प्र.29 कपिल को दीक्षा किसने दी ?

उ. स्वयं ही दीक्षित हुए।

प्र.30 कपिल मुनि को राजा ने क्या पूछा ?

उ. प्रियवर ! क्या सोचा आपने ? जल्दी मांगिये (कहिये)।

प्र.31 राजा को कपिल मुनि ने क्या उत्तर दिया ?

उ. राजन्! मुझे कुछ नहीं चाहिए, जो पाना था, उसे मैंने पा लिया।

प्र.32 कपिल ने राजा को क्या उपदेश दिया ?

उ. लोभ, अलोभ वृत्ति को समझाया।

प्र.33 कपिल मुनि कितने दिन छद्मावस्था में रहे ?

उ. 180 दिन (छः महीने)।

प्र.34 कपिल मुनि को चोरों ने कहाँ पर घेरा ?

उ. श्रावस्ती और राजग्रही के बीच।

प्र.35 उन चोरों के सरदार का क्या नाम था ?

उ. बलभद्र प्रमुख।

प्र.36 बलभद्र के साथ उसके कितने साथी थे ?

. 500 चोर।

प्र.37 चोरों ने कपिल श्रमण से क्या कहा ?

उ. श्रमण ! कुछ गाओ।

प्र.38 कपिल श्रमण ने चोरों को क्या गाकर सुनाया ?

उ. कपिल मुनि ने सुलभ बोधि समझकर "अधुए असासयम्मि..." गायन प्रारंभ किया।

प्र.39 कपिल मुनि के गाने में क्या विशेषता थी ?

उ. कपिल मुनि का गायन अनासक्ति के उपदेश से युक्त था।

प्र.40 चोरों को क्या उपदेश दिया ?

उ. संतोष, संयम, त्याग और अहिंसादि व्रत ही दुर्गति से बचने के मार्ग है।

प्र.41 कपिल मुनि के उपदेशात्मक गायन का चोरों पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उ. कपिल मुनि नें गायन प्रारंभ किया। पहले वे गाते, फिर सभी चोर उनका अनुसरण करते हुए गाते। कई चोर प्रथम गाथा सुनकर कई दूसरी, तीसरी, चौथी आदि गाथा सुनकर प्रबुद्ध हो गये। इस प्रकार पूरा अध्ययन सुनकर के पूरे 500 ही चोर प्रतिबुद्ध हो गये और सभी ने दीक्षा ग्रहण कर ली।

प्र.42 स्थानांग सूत्र में बोधि कितने प्रकार की बतायी है ?

उ. तीन प्रकार की - ज्ञान, दर्शन, चारित्र बोधि।

--0--

नवम अध्ययन

नमि प्रव्रज्या

प्र.1 नवम अध्याय का नाम क्या है ?

उ. नमि प्रव्रज्या।

प्र.2 इस अध्याय का नाम नमि प्रव्रज्या क्यों रखा गया है ?

उ. इस अध्ययन में नमि राजर्षि से संबंधित होने के कारण इस अध्ययन का नाम नमि प्रव्रज्या रखा गया है।

प्र.3 नमि राजर्षि का जन्म कहाँ हुआ था ?

उ. जंगल में।

प्र.4 नमि राजर्षि के माता-पिता का क्या नाम था ?

उ. पिता-युगबाहु, माता-मदनरेखा।

प्र.5 नमि राजर्षि के पालक माता पिता का नाम क्या था ?

उ. पालक पिता- राजा पद्मरथ, माता- रानी पुष्पमाला।

प्र.6 पद्मरथ राजा कहाँ का रहने वाला था ?

उ. मिथिला का।

प्र.7 नमि राजर्षि के बड़े भाई का क्या नाम था ?

उ. चन्द्ररथ।

प्र.8 दोनों भाईयों के युद्ध का क्या कारण था ?

उ. चन्द्रयक्ष।

प्र.9 दोनों भाईयों को किसने समझाया ?

उ. सुव्रता साध्वी (सांसारिक माता मदनरेखा)

प्र.10 नमि राजर्षि ने किन-दिन देशों में राज्य किया ?

उ. मिथिला एवं सुदर्शनपुर में।

प्र.11 नमि राजर्षि मिथिला कैसे पहुँच गये ?

उ. मालव नरेश मणिरथ ने अपने अनुज युगबाहू की हत्या उसकी पत्नी मदनरेखा पर आसक्ति के कारण कर दी थी। मदनरेखा ने वन में पुत्र को जन्म दिया। उस शिशु को मिथिला नरेश पद्मरथ मिथिला ले आये। जिसका नाम रखा गया - नमि।

प्र.12 नमि राजर्षि का नाम नमि क्यों रखा गया ?

उ. पद्मरथ राजा के शत्रु नृप, बालक के प्रभाव से नम्र बनकर उसके अधीन हो गये। इसीलिये बालक का नाम नमि रखा।

प्र.13 विदेह राज्य में कितने नमि हुए ? उनकी क्या विशेषता थी ?

उ. विदेह राज्य में दो नमि हुए। दोनों अपना राज्य त्यागकर अणगार बने थे। एक नमि- इक्कीसवें तीर्थंकर नमिनाथ जी हुए और दूसरे नमि - प्रत्येक बुद्ध नमि राजर्षि।

प्र.14 नमि राजर्षि के वैराग्य का प्रथम कारण

उ. दाह ज्वर।

प्र.15 कितने महीने तक दाह ज्वर से पीड़ित थे ?

उ. छः मास तक।

प्र.16 दाह ज्वर की उपशमन के लिये वैद्य ने क्या परामर्श दिया ?

उ. चन्दन का लेप करने का।

प्र.17 चंदन घिसने का कार्य किसने अपने ऊपर लिया ?

उ. रानियों ने।

प्र.18 नमि राजर्षि को जागृति हेतु दूसरा निमित्त क्या मिला ?

उ. चंदन घिसते हुए निशब्दता के लिये रानियों के हाथों में रहा एक-एक कंकण।

प्र.19 चन्दन घिसने के कार्य से नमि राजर्षि को कैसा लगने लगा ?

उ. कंकणों के टकराहट से उत्पन्न शोर असह्य हो गया।

प्र.20 कंकणों का शोर बंद करने के लिए रानियों ने क्या किया ?

उ. सौभाग्य सूचक एक कंकण को रख बाकी सब उतार दिया।

प्र.21 कंकणों का शोर बंद होने पर नमि राजर्षि ने क्या प्रश्न किया ?

उ. क्या चंदन घिसना बंद हो गया है ?

प्र.22 मंत्री ने इसका क्या जवाब दिया ?

उ. नहीं ! चंदन घिसना बंद नहीं हुआ है।

उ. आत्मा की इस शरीररुपी नगरी में पाँच इंद्रियाँ और चार कषाय रुप चोर बसते हैं। वे इस आत्मा के ज्ञानदर्शन और चारित्र रूप धन का अपहरण करने के लिये हर समय उद्यत रहते हैं। मोहवश पड़े अज्ञान के कारण निरपराध आत्मा को तो दण्डित कर दिया जाता है और अपरांधी स्वरूप कषाय आदि प्रवृत्तियों को स्वतंत्र छोड़ दिया जाता है। अतः जब तक इन चोरों को दण्डित न किया जाये तब तक शांति नहीं हो सकती।

प्र.86 शक्रेन्द्र ने छठा प्रश्न क्या पूछा ?

उ. हे क्षत्रिय ! कई राजा जो आपके सामने नहीं झुकते, आज्ञा नहीं मानते, पहले उन्हें अपने वश में करके, फिर दीक्षा क्यों नहीं लेते ?

प्र.87 नमि राजर्षि ने छठे प्रश्न का क्या उत्तर दिया ?

उ. जो दुर्जय संग्राम में दस लाख राजाओं को जीतता है, उसकी अपेक्षा जो एक आत्मा को जीतकर उसे वश में कर लेता है, उसी की यह विजय उत्कृष्ट है।

प्र.88 नमि राजर्षि ने किससे युद्ध करने के लिये कहा ?

उ. अपने आपके साथ युद्ध करने के लिये कहा।

प्र.89 मुनि किसे जीत कर सुख प्रास करता है ?

उ. विषय कषायों में प्रवृत्त आत्मा को आत्मा द्वारा जीत कर ही शाश्वत सुख को प्रास करता है।

प्र.90 एक आत्मा को जीत लेने पर किस-किस को जीत लिया जाता है ?

उ. पाँच इंद्रिय, चार कषाय, मन को।

प्र.91 सातवाँ प्रश्न शक्रेन्द्र का क्या था ?

उ. हे क्षत्रिय ! पहले ब्राह्मणों द्वारा विपुल यज्ञ कराकर, श्रमणों और ब्राह्मणों को भोजन कराकर तथा ब्राह्मणादि को गौ, भूमि, स्वर्ण आदि का दान देकर मनोज्ञ शब्दादि भोगों का उपयोग कर एवं स्वयं यज्ञ करके दीक्षा क्यों नहीं लेते ?

प्र.92 नमि राजर्षि ने सातवें प्रश्न का क्या उत्तर दिया ?

उ. जो व्यक्ति प्रतिमास दस लाख गायों का दान करता है तथा जो कुछ भी दान न करे, उनके लिये भी संयम पालन करना अधिक श्रेयस्कर है।

प्र.93 दान से भी उच्चतम, श्रेष्ठतम क्या है ?

उ. संयम (त्याग व अनासक्ति)

प्र.94 आठवें प्रश्न में शक्रेन्द्र ने नमि राजर्षि को क्या कहा ?

उ. हे नृप ! आप गृहस्थाश्रम को छोड़कर अन्य आश्रम को ग्रहण करने की अभिलाषा कर रहे हैं। यह अनुचित है। इस आश्रम में ही रहकर पौषध व्रत में रत हो जाओ तो क्या हर्ज है ?

प्र.34 जाति स्मरण ज्ञान से नमि राजा ने क्या जाना ?

उ. राजा ने जाना कि वे पूर्व भव में शुद्ध संयम पालन करने के कारण उत्कृष्ट सत्रह सागरोपम वाले महाशुक्र देवलोक में उत्पन्न हुए थे और इस जन्म में राजा बने हैं।

प्र.35 सिद्धों के 15 भेंदों में से कौन-सा भेद नमि राजर्षि नें पाया ?

उ. प्रत्येक बुद्ध का।

प्र.36 प्रत्येक बुद्ध किसे कहते हैं ?

उ. किसी बाह्य घटना का एक ही निमित्त मिलने पर वैराग्य का जागृत होना।

प्र.37 नमि राजर्षि की वैराग्य भावना जानकर किसका आसन कम्पायमान हुआ ?

उ. शक्रेन्द्र देवराज का।

प्र.38 शक्रेन्द्र नमि राजर्षि के पास क्यों आया ?

उ. उनकी यह परीक्षा लेने के लिये कि उनका त्याग क्षणिक आवेश है या वास्तविक वैराग्यपूर्ण है।

प्र.39 शक्रेन्द्र किस वेश में परीक्षा लेने आया था ?

उ. ब्राह्मण वेश में।

प्र.40 नमि राजर्षि और शक्रेन्द्र का संवाद किस-किस संस्कृति के अंतर को स्पष्ट करता है ?

उ. श्रमण एवं ब्राह्मण संस्कृति का।

प्र.41 ब्राह्मण संस्कृति में सन्यास कब लिया जाता है।

उ. पहले ब्रह्मचर्य, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थान के बाद सन्यासाश्रम स्वीकार किया जाता है।

प्र.42 श्रमण संस्कृति में दीक्षा (सन्यास) कब स्वीकार किया जाता है ?

उ. 'यंद हरेव विरजेत, तद हरेव प्रव्रजेत' इस सूत्रानुसार जिस दिन से संसार में सांसारिक भोगों से विरक्त हो जायें, उसी दिन प्रव्रजित हो जाना चाहिए।

प्र.43 ब्राह्मण संस्कृति में सन्यास ग्रहण करने का अधिकार प्रायः किसे दिया गया है ?

उ. ब्राह्मण वर्ग को।

प्र.44 श्रमण संस्कृति में दीक्षा का अधिकार किस वर्ग को दिया गया है ?

उ. सभी वर्ग को (वर्ग विशेष का नाम नहीं है)

प्र.45 शक्रेन्द्र ने नमि राजर्षि से पहला प्रश्न क्या पूछा ?

उ. हे राजर्षि ! आज मिथिला नगरी के महलों और घरों में कोलाहल से व्याप्त दारूण शब्द क्यों सुनाई पड़ रहे हैं ?

प्र.46 इस प्रश्न का नमि राजर्षि ने क्या उत्तर दिया ?

उ. मिथिला में एक चैत्य उद्यान में बहुगुण सम्पन्न एवं मनोरम वृक्ष था, जो शीतल छाया वाला मनोहर और पत्र-पुष्प एवं फलों से युक्त था तथा बहुत से पक्षियों

के लिये सदा बहुत उपकारक था। वायुवेग से आज उस मनोरम वृक्ष के उखड़ जाने पर हे ब्राह्मण ! ये दुखित, अशरण और पीड़ित पक्षी आक्रन्दन कर रहे हैं।

प्र.47 'चैत्य उद्यान' नमि राजर्षि ने किस तात्पर्य से कहा ?

उ. चैत्य उद्यान राजभवन को कहा है।

प्र.48 नमि राजर्षि ने वृक्ष किसे बताया ?

उ. स्वयं को मनोरम वृक्ष बताया।

प्र.49 वृक्षाश्रित रहने वाले पक्षी किसे बताया ?

उ. पुरजन परिजनों को वृक्षाश्रित रहने वाले पक्षी बताया।

प्र.50 किसके कारण वे आक्रन्दन कर रहे थे ?

उ. स्वार्थ के कारण वे परिजन आक्रन्दन कर रहे थे।

प्र.51 नमि राजर्षि से शक्रेन्द्र ने दूसरा प्रश्न कौन-सा किया ?

उ. हे राजन् ! यह अग्नि है और यह हवा है, इससे आपका राजभवन जल रहा है। फिर आप अपने जलते हुए अन्तःपुर को क्यों नहीं देखते हैं ? उसकी रक्षा क्यों नहीं करते हैं ?

प्र.52 दूसरे प्रश्न के उत्तर में नमि राजर्षि ने क्या उत्तर दिया ?

उ. जिसके पास अपना कुछ भी नहीं है, ऐसे हम लोग

सुख से रहते हैं और सुख में जीते हैं। अतः मिथिला के जलने से मेरा कुछ नहीं जलता है।

प्र.53 दूसरे प्रश्न के उत्तर का आशय क्या है ?

उ. मैं अकेला हूँ, यहाँ मेरा कोई नहीं है। क्योंकि जीव अकेला ही जन्मता है, अकेला ही मरता है। मेरी जो वस्तु है (आंत्मा तथा आत्मा के ज्ञानादि निजगुण) मेरे पास है, उसे कोई नहीं जला सकता।)

प्र.54 तीसरा प्रश्न शक्रेन्द्र ने क्या पूछा ?

उ. हे क्षत्रिय! पहले तुम प्राकार (परकोटा), गोपुर (मुख्य दरवाजा), अट्टालिकायें, दुर्ग की खाई, शतघ्निया (किले के द्वारा पर चढाई हुई तोपें) बनवाकर फिर दीक्षित क्यों नहीं होते ? आप क्षत्रिय हैं और प्रजा राज्य की सुरक्षा करना क्षत्रिय का धर्म है। इसलिए अपने धर्म से विमुखता क्यों ?

प्र.55 तीसरे प्रश्न का नमि राजर्षि ने क्या उत्तर दिया ?

उ. हे विप्र! कर्म रूपी बैरी शत्रुओं से अपने को सुरक्षित रखने के लिये मैंने नगर अर्गल, प्राकार, खाई, अट्टालिकायें, शतघ्नी इत्यादि पहले ही तैयार कर लिया है। अब इस नगरी में किसी शत्रु के आने का भय नहीं है।

प्र.56 नमि राजर्षि ने नगर किसको बताया ?

उ. श्रद्धा को।

प्र.57 नमि राजर्षि ने अर्गला किसको बताया ?

उ. तप और संवर को।

प्र.58 नमि राजर्षि ने प्राकार (परकोटा) किसे बताया ?

उ. क्षमा को निपुण प्राकार बताया है।

प्र.59 नमि राजर्षि ने त्रिगुप्ति किसे बताया ?

उ. मन-वचन-काया की खाई, बुंर्ज (अट्टालिका) और शतघ्नी को।

प्र.60 नमि राजर्षि ने धनुष किसे बताया ?

उ. पराक्रम को।

प्र.61 नमि राजर्षि ने धनुष की डोर किसे बताया ?

उ. ईर्यासमिति रुप धनुष की डोर या प्रत्यांचा को।

प्र.62 नमि राजर्षि ने धनुष की मूठ किसे बताया ?

उ. धृति यानि धैर्यता को।

प्र.63 नमि राजर्षि ने धनुष की डोर किससे बांधे ?

उ. सत्य से।

प्र.64 नमि राजर्षि के अनुसार तप रुपी क्या है ?

उ. बाण।

प्र.65 शतघ्नी शस्त्र किसे कहते हैं ?

उ. एक बार में सैकड़ों व्यक्तियों का संहार करने वाला यंत्र (तोप जैसा अस्त्र)।

प्र.66 सच्चा क्षत्रिय कौन है ?

उ. षटकाय रक्षक एवं आत्म रक्षक।

प्र.67 शक्रेन्द्र ने चौथा प्रश्न क्या किया ?

उ. हे क्षत्रिय ! पहले प्रासाद (महल), वर्धमानग्रह और बालाग्र पोतिकाएं आदि बनवाकर बाद में दीक्षित क्यों नहीं होते ?

प्र.68 देवेन्द्र के चौथे प्रश्न का क्या आशय था ?

उ. देवेन्द्रं ने नमिराज से कहा - प्रजा एवं पर्यटकों के आनन्द के लिये वास्तुशास्त्र के अनुसार नगर का सौन्दर्यीकरण कर दीजिये, उसके बाद दीक्षा ले लेना।

प्र.69 जनसुख के लिये देवेन्द्र ने नमिराज को क्या बनवाने का सुझाव दिया ?

उ. प्रासाद (महल) वर्धमान गृह और बालाग्र पोतिका।

प्र.70 वर्धमान गृह किसे कहते हैं ?

उ. वास्तुशास्त्र में कथित अनेक विद्य गृह।

प्र.71 मत्स्य पुराण में वर्धमान गृह किसे कहते हैं ?

उ. जिसमें दक्षिण की ओर द्वार न हो।

प्र.72 वाल्मिकी रामायण में वर्धमान गृह को क्या कहा गया है ?

उ. धनप्रद।

प्र.73 वर्धमान गृह किसे कहते हैं ?

उ. (1) चौबारे से युक्त तथा आगे बढ़े हुए यानि छज्जे वाले घर (2) सभी ऋतुओं में सुख देने वाला वलभीगृह

प्र.74 बालाग्रपोतिका किसे कहा जाता है ?

उ. बालाग्रपोतिका देशी नाममाला में प्रयुक्त प्राकृत भाषा का शब्द है। यह उस गृह विशेष को कहा जाता था जिसके चारों ओर जल होता था। प्राचीन काल में ऐसे घर बनवाने की प्रथी विशेष रुप से प्रचलित थी।

प्र.75 बालाग्रपोतिका का अर्थ क्या है ?

उ. बलभी अर्थात् चन्द्र शाला या तालाब में निर्मित वस्तु, लघु प्रासाद, हवा महल, जलमहल।

प्र.76 चौथे प्रश्न का नमि राजर्षि ने क्या उत्तर दिया ?

उ. जो मार्ग में घर बनवाता है, वह निश्चय ही संशयशील वाला रहता है कि पता नहीं कब उसे घोडकर जाना पड़े। अतएव जहाँ जाने की इच्छा हो, वहीं शाश्वत घर बनाना चाहिए।

प्र.77 शाश्वत घर कौन सा है ?

उ. जहां से वापस न आना पड़े अर्थात् मोक्ष।

प्र.78 पाँचवे प्रश्न में शक्रेन्द्र ने क्या पूछा ?

उ. हे राजर्षि ! पहले आप आमोषों, लोमहारों, पीड़न पोषकों, ग्रंथि भेदकों और तस्करों का दमन करके नगर का क्षेम (अमन चैन) करके फिर दीक्षा क्यों नहीं लेते ?

प्र.79 आमोष किसे कहते हैं ?

उ. मार्ग में लुटने वाले, सर्वस्व हरण करने वाले को आमोष कहते हैं।

प्र.80 लोमहार किसे कहते हैं ?

उ. मारकर सर्वस्व हरण करने वाले को। जैसे - डाकू आदि।

प्र.81 पीड़न पोषक किसे कहते हैं ?

उ. पीड़ा पहुँचाकर लुटने वाले को।

प्र.82 ग्रंथिभेदक किसे कहते हैं ?

उ. द्रव्य संबंधी गाँठ (तिजोरी, आलमारी आदि) को कैंची आदि के द्वारा कुशलता से काट लेने वाले, या सुवर्ण यौगिक या नकली सोना बनाकर युक्ति से अथवा इसी तरह से दूसरे कौशल से लोगों को ठगने वाले।

प्र.83 तस्कर किसे कहते हैं ?

उ. सदैव चोरी करने वाला।

प्र.84 पाँचवे प्रश्न के उत्तर में नमि राजर्षि ने क्या कहा ?

उ. मनुष्यों के द्वारा अनेक बार मिथ्यादंड का प्रयोग कर दिया जाता है। चोरी, आदि अपराध न करने वाले यहाँ बंधन में डाले जाते हैं और वास्तविक अपराधी छूट जाते हैं।

प्र.85 जगत में मिथ्यादण्ड के प्रयोग की बात कहकर नमि राज ने कौन सा आध्यात्मिक रहस्य समझाया ?

प्र.23 तब राजा ने मंत्री से क्या कहा ?

उ. पहले आवाज हो रही थी, अब आवाज क्यों नहीं हो रही है ?

प्र.24 इस प्रश्न का मंत्री ने क्या जवाब दिया ?

उ. हे राजन्! एक कंकण घर्षण से नहीं होता और घर्षण के बिना आवाज कैसे होगी।

प्र.25 नमि राजर्षि का चिन्तन किस पर चला ?

उ. 'एक कंगन' की एकत्व स्थिति पर।

प्र.26 मंत्री का कथन सुनकर नमि राजर्षि ने क्या विचार किया ?

उ. जहाँ अनेक हैं, वहाॅ संघर्ष है, द्वन्द्व है, दुःख है, पीड़ा है, जहाँ एक है वहाँ संघर्ष, द्वन्द्व, दुःख, पीड़ा और अशांति नहीं। वहाँ पूर्ण सुख-शांति है। जब तक मैं मोहवश स्त्रियों, खजानों, महलों, राजकीय भोगों से सम्बद्ध हूँ, तब तक दुःखी ही रहूँगा। इन सबको छोड़कर एकाकी होने पर ही सुखी हो सकूँगा। इस प्रकार राजा के मन में दीक्षित होने का दृढ़ संकल्प उत्पन्न हुआ।

प्र.27 नमि राजर्षि कौन-सी भावना का चिन्तन करने लगे ?

उ. एकत्व भावना।

प्र.28 नमि राजर्षि को वेदना से शांति किस प्रकार मिली ?

उ. जैसे ही प्रव्रजित होने का संकल्प किया कि दाह ज्वर की वेदना कम हो गयी और राजा गहरी निंद्रा की गोद में चला जाता है।

प्र.29 निद्रावस्था में नमि राजा ने क्या स्वप्न देखा ?

उ. सफेद हाथी पर बैठकर मेरू पर्वत पर चढ़ने का विशिष्ट स्वप्न देखा।

प्र.30 स्वप्न पर चिंतन करते हुए नमि राजा ने क्या प्राप्त किया ?

उ. जातिस्मरण ज्ञान।

प्र.31 जाति स्मरण ज्ञान किस ज्ञान के अन्तर्गत आता है ?

उ. मतिज्ञान का ही एक प्रकार है।

प्र.32 जातिस्मरण ज्ञान कैसे उत्पन्न होता है ?

उ. पूर्व जन्म के संस्कार मस्तिष्क में संचित रहते हैं, उन्हें एकाग्रता पूर्वक बार-बार चिंतन एवं उहापोह से किसी अनुकूल घटना को बार-बार देखने से पूर्वजन्म को जानने की तीव्र इच्छा से जाति स्मरण ज्ञान उत्पन्न होता है।

प्र.33 जाति स्मरण ज्ञान से पूर्व कितने भवों को देख सकते हैं ?

उ. संख्यात भवों को। (700 भवों)

प्र.95 आठवें प्रश्न का नमि राजर्षि ने क्या उत्तर दिया ?

उ. जो बाल अज्ञानी साधक महीने-महीने की तपस्या करता है और पारणे में कुश के अग्रभाग पर आये उतना ही आहार सेवन करता है, वह स्वाख्यात धर्म की 16वीं कला के बराबर भी नहीं होता। अर्थात् वह बाल तप तीर्थंकरोक्त मुनि धर्म के 16वें हिस्से को भी प्राप्त नहीं कर सकता।

प्र.96 स्वाख्यात धर्म किसे कहते हैं ?

उ. सर्व सावद्यविरति चारित्र धर्म को।

प्र.97 घोराश्रम किसे कहते हैं ?

उ. गृहस्थाश्रम को।

प्र.98 वैदिक दृष्टि से कितने आश्रम बताये गये हैं ?

उ. ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम, सन्यासाश्रम।

प्र.99 गृहस्थाश्रम को घोर आश्रम क्यों कहा गया है ?

उ. गृहस्थाश्रम सर्वाधिक भारवाही होने से घोर कहलाता है। क्योंकि अन्य तीनों आश्रमों के भरण-पोषण-रक्षण का दायित्व गृहस्थाश्रम के ऊपर है। वह इन तीनों के अलावा स्वयं के जीवन को चलाने व निभाने के दायित्व का भी पालन करता है। जबकि अन्य आश्रमों में न तो दूसरे आश्रमों को परिपालन की जिम्मेदारी है और न स्त्री-पुरुष-संतान आदि की चिंता।

प्र.100 स्वाख्यात धर्म का पालन कौन कर सकता है ? और क्या कहलाता है ?

उ. चारित्रवान मुनि ही इस सर्वसावद्य निवृत्ति धर्म का पालन कर सकता है। इसका समग्र रुप से आचरण करने वाला स्वाख्यातधर्मा कहलाता है।

प्र.101 शक्रेन्द्र ने नवम् प्रशन किस विषय को लेकर किया ?

उ. चाँदी, सोना, मणि, मुक्ता, कांसे के पात्र, वस्त्र, वाहन और भंडार की वृद्धि करके तत्पश्चात् दीक्षा क्यों नहीं लेते ?

प्र.102 नवमें प्रश्न के उत्तर में नमि राजर्षि ने क्या कहा ?

उ. कदाचित सोने-चाँदी के कैलाश पर्वत के समान असंख्य पर्वत हो फिर भी लोभी मनुष्य की उनसे किञ्चित भी तृप्ति नहीं होती। क्योंकि मनुष्य की इच्छा आकाश के समान अनंत है।

प्र.103 पृथ्वी का सम्पूर्ण हिस्सा कितने मनुष्यो की इच्छा पूर्ण कर सकता है ?

उ. सम्पूर्ण पृथ्वी-धान्य-जौ-स्वर्ण-रजत-हिरण्य-पशु आदि ये सब वस्तुएं एक व्यक्ति की भी इच्छा को पूर्ण करने में असमर्थ है। यह शक्ति अगर है तो सिर्फ निर्लोभ एवं सन्तोष रुपी धन में।

प्र.104 दसवाँ प्रश्न शक्रेन्द्र ने कौन सा किया ?

उ. आश्चर्य है कि तुम सम्मुख आये हुए भोगों को त्याग रहे हो, और अप्राप्त कामभोगों की अभिलाषा कर रहे हो। आप व्यर्थ के संकल्पों में दुःखी क्यों हो रहे हो ?

प्र.105 दसवें प्रश्न का नमि राजर्षि ने क्या उत्तर दिया ?

उ. सांसारिक कामभोग शल्य है, विष है, नाग है। ये तथा कषाय आत्म गुणों का विनाश करके मनुष्य को दुर्गति में ले जाते हैं। अतः निर्ग्रंथ इनका संग नहीं करता।

प्र.106 "नमि राजर्षि ने क्रोध को जीत लिया है" यह किस बात से पता चलता है ?

उ. इन्द्र ने सर्वप्रथम कहा कि "आप पहले शत्रु को जीते, फिर दीक्षा लो", इससे राजर्षि का चित्त जरा भी क्षुभित नहीं हुआ। इससे पता चलता है कि नमि राजर्षि ने क्रोध को जीत लिया है।

प्र.107 "राजर्षि ने अहंकार को जीत लिया है" यह किस प्रश्न से पता चलता है ?

उ. जब इन्द्र ने कहा कि आपका अन्तःपुर एवं राजभवन जल रहा है। तब मेरे जीवित रहते मेरा अन्तःपुर एवं राजमहल आदि जल रहे हैं, क्या मैं इनकी रक्षा नहीं कर सकता ? इस प्रकार राजर्षि के मन में जरा-सा

भी अहंकार उत्पन्न नहीं हुआ। इससे पता चलता है कि नमि राजर्षि ने अहंकार को भी जीत लिया है।

प्र.108 नमि राजर्षि माया विजेता के रुप में किस प्रकार परिचित हुए ?

उ. इन्द्र ने जब राजर्षि को तस्करों आदि उपद्रवकारियों का निग्रह करने के लिए कहा तो उन्हें माया न करके सरलतापूर्वक स्थिति प्रस्तुत की, इससे वे माया विजेता रहे।

प्र.109 लोभ विजेता की प्रतीति किस प्रकार हुयी ?

उ. इन्द्र ने जब कहा कि दीक्षा लेने से पहले आप सोना, चाँदी आदि के कोष में वृद्धि कर लें, किन्तु उन्होंने कहा कि प्राणियों की इच्छाएं आकाश के समान अनन्त है। इससे पता चलता है कि उन्होने लोभ पर भी विजय प्राप्त कर ली थी।

प्र.110 इन्द्र ने नमि राजर्षि का अहोभाव पूर्वक अभिनंदन किन गुणों को देखकर किया ?

उ. सरलता, मृदुता, क्षमा, निर्लोभता इन चारों (गुणों) को देखकर अहोभाव पूर्वक अभिनंदन किया।

प्र.111 नमि राजर्षि अभी कहाँ पर है ?

उ. मोक्ष में।

--0--

दसम अध्ययन

द्रुम पत्रक

प्र.1 दसवें अध्ययन का क्या नाम है ?

उ. द्रुम पत्रक।

प्र.2 द्रुम पत्रक का क्या अर्थ है ?

उ. वृक्ष का पत्ता।

प्र.3 इस अध्ययन का नाम द्रुम पत्रक क्यों रखा गया ?

उ. पहले पद के आधार पर।

प्र.4 भगवान ने गौतम स्वामी को क्या कहा ?

उ. समयं गोयम मा पमायए। (समयमात्र का प्रमाद मत करो)

प्र.5 'समय मात्र का भी प्रमाद मत करो' यह शब्द इस अध्ययन में कितनी बार आया है ?

उ. छत्तीस बार।

प्र.6 मनुष्यों को समय मात्र भी प्रमाद नहीं करने के लिए क्यों कहा गया है ?

उ. क्योंकि मनुष्य भव दुर्लभ है।

प्र.7 मनुष्य जन्म अति दुर्लभ क्यों है ?

उ. एकेन्द्रीय से लेकर पचेन्द्रीय तिर्यच तक तथा देव-नारक तक शुभाशुभ कर्मवश उन-उन गतियों एवं योनियों में बार-बार जन्म-मरण करके भवभ्रमण

करते हुए विषय कषायों-प्रभावों में डूबे हुए जीव को मनुष्य जन्म मिलना दुर्लभ हो जाता है।

प्र.8 आयुष्य कितने प्रकार का है ?

उ. सोपक्रम और निरुपक्रम आयुष्य।

प्र.9 सोपक्रम आयुष्य किसे कहते हैं ?

उ. जो आयुष्य स्थिर नहीं है यानि विष, शस्त्र आदि से बीच में कभी भी समाप्त हो सकता है, उसे सोपक्रम आयुष्य कहते हैं।

प्र.10 निरुपक्रम आयुष्य किसे कहते हैं ?

उ. जो आयुष्य बीच में न टूटता हो, उसे निरुपक्रम आयुष्य कहते हैं।

प्र.11 सोपक्रम और निरुपक्रम आयुष्य में क्या समानता है ?

उ. दोनों अल्प समय के लिये होते हैं। कोई भरोसा नहीं, दोनों टूट सकते हैं।

प्र.12 मनुष्य के जीवन की अस्थिरता के लिए इस अध्ययन में कितने दृष्टान्त दिए हैं ?

उ. दो - पके हुए वृक्ष के पत्तों का एवं ओस बिन्दु का।

प्र.13 वृक्ष के पत्तों से मनुष्य जीवन की तुलना किस प्रकार की गयी है ?

उ. जैसे- वृक्ष का एक दिन जो नया पत्ता था, वह जरा जीर्ण होकर अपने आप गिर जाता है, वैसे ही मनुष्य

की आयु भी समय पाकर एक दिन समाप्त हो जाती है।

प्र.14 वृक्ष के पके पत्ते एवं नये पत्ते का संवाद निर्युक्तिकार ने किस रुप में किया था ?

उ. पके हुए पत्ते के वृक्ष से गिर जाने पर नये पत्ते हंसने लगे। पके हुए पत्ते ने किसलयों (नवोदित पत्तों) से कहा- "एक दिन हम भी वैसे ही थे, जैसे कि तुम हो। और एक दिन तुम भी वैसे ही हो जाओगे, जैसे कि हम हैं।"

प्र.15 ओस की बूंद से जीवन की तुलना किस प्रकार की गयी है ?

उ. कुश के अग्रभाग पर टिकी हुई ओस की बूंद बहुत थोड़ी देर ठहरती है, वैसे ही मनुष्य का भी जीवन भी स्वल्प है।

प्र.16 आयुष्य काल कितने प्रकार का है ?

उ. दो - भव स्थिति, काय स्थिति।

प्र.17 भव स्थिति किसे कहते हैं ?

उ. जीव का एक भव में जितने काल तक जीना होता है, वह उसकी भव स्थिति कहलाती है।

प्र.18 काय स्थिति किसे कहते हैं ?

उ. मृत्यु के पश्चात् अपने उसी जीव निकाय के शरीर में उत्पन्न होना. काय स्थिति है।

प्र.19 पृथ्वीकाय की भव स्थिति कितनी है ?

उ. जघन्य अन्तर्मुहुर्त, उत्कृष्ट-22 हजार वर्ष की।

प्र.20 अपकाय की भव स्थिति कितनी है ?

उ. जघन्य अन्तर्मुहुर्त उत्कृष्ट - 7 हजार वर्ष की।

प्र.21 तेऊकाय की भव स्थिति कितनी है ?

उ. जघन्य अन्तर्मुहुर्त उत्कृष्ट - 3 अहोरात्रि की।

प्र.22 वायुकाय की भव स्थिति कितनी है ?

उ. जघन्य अन्तर्मुहुर्त उत्कृष्ट - 3 हजार वर्ष की।

प्र.23 वनस्पति कार्य की भव स्थिति कितनी है ?

उ. जघन्य अन्तमुर्हुत की उत्कृष्ट - 10 हजार वर्ष की।

प्र.24 चार स्थावर काय की काय स्थिति कितनी है ?

उ. असंख्यात् काल की।

प्र.25 वनस्पति काय की काय स्थिति कितनी है ?

उ. अनंत काल की।

प्र.26 तीन विकलेन्द्रीय की काय स्थिति कितनी है ?

उ. संख्यात काल।

प्र.27 पंचेन्द्रीय की काय स्थिति कितनी है ?

उ. 7-8 भव।

प्र.28 देव नारकी की काय स्थिति कितनी है ?

उ. नहीं होती।

प्र.29 देवता नारकी की काय स्थिति क्यों नहीं होती है ?

उ. देव नारक का जीव वापस देव नारक नहीं बन सकता।

प्र.30 मनुष्य जन्म पाकर भी कौन-सी प्रासियाँ दुर्लभ है ?

उ. आर्यत्व, पंचेन्द्रीय पूर्णता, उत्तम धर्म श्रवण, श्रद्धा, धर्माचरण।

प्र.31 शुद्ध एवं उत्तम धर्म श्रवण का अवसर किसे नहीं मिलता ?

उ. कुतीर्थियों को।

प्र.32 अतत्व में तत्व रुचि क्या है ?

उ. मिथ्यात्व।

प्र.33 श्रोत्रेन्द्रीय बल क्षीण होने पर मनुष्य क्या नहीं कर सकता ?

उ. मनुष्य धर्म श्रवण नहीं कर सकता।

प्र.34 धर्म श्रवण के बिना आत्मा क्या नहीं जान सकती ?

उ. धर्म श्रवण के बिना कल्याण-अकल्याण, श्रेय-प्रेय को नहीं जान पाता।

प्र.35 किसके बिना धर्माचरण अंधा है ?

उ. ज्ञान के बिना।

प्र.36 सम्यक् धर्माचरण किसके बिना नहीं होता है ?

उ. ज्ञान के बिना।

प्र.37 चक्षुन्द्रीय बल क्षीण होने पर आत्मा क्या नहीं कर सकती है ?

उ. चक्षुन्द्रीय बल क्षण होने पर आत्मा जीव दया, प्राणी दया, प्रतिलेखनां, स्वाध्याय, गुरुदर्शन नहीं कर सकती।

प्र.38 घ्राणेन्द्रीय बल रहने पर आत्मा क्या कर सकती है ?

उ. घ्राणेन्द्रीय बल रहने पर ही सुगंध-दुर्गंध के प्रति राग-द्वेष का परित्याग करके समत्व धर्म का पालन किया जा सकता है, इसके अभाव में नहीं।

प्र.39 जिव्हानेन्द्रीय बल रहने पर आत्मा धर्माचरण कैसे कर सकती है ?

उ. जिव्हा में रस ग्राहक बल तथा वचनोच्चारण बल होने पर क्रमशः रस स्वाद के प्रति, राग-द्वेष के त्याग से तथा स्वाध्याय करने से, वाचना देने, उपदेश एवं प्रेरणा देने से निर्दोष और सहज धर्माचरण कर सकता है।

प्र.40 स्पर्शेन्द्रीय बल सबल रहने पर धर्माचरण किस प्रकार हो सकता है ?

उ. स्पर्शेन्द्रीय बल प्राण सबल रहने से शीत-उष्ण आदि

परिषहों पर विजय तथा तप संयम आदि के रुप में उत्तम धर्माचरण हो सकता है।

प्र.41 सर्वबल किसे कहते हैं ?

उ. मन, वचन, काया एवं समस्त अंगोपांगों में अपने-अपने कार्य करने की शक्ति को सर्वबल कहते हैं।

प्र.42 सर्वबल विद्यमान रहने पर साधक क्या कर सकता है ?

उ. सर्वबल रहने पर ही साधक ध्यान, अनुप्रेक्षा, आत्म-चिन्तन, स्वाध्याय, वाचना, उपदेश, भिक्षाचरी, प्रतिलेखन, तप, संयम, त्याग आदि रुप में स्वाख्यात् धर्म का आचरण कर सकता है, अन्यथा नहीं।

प्र.43 समस्त साधकों को भगवान ने क्या उपदेश दिया ?

उ. अप्रमाद का।

प्र.44 दसवें अध्ययन में अप्रमाद के कितने मूलमंत्र बताये ?

उ. नौ मूल मंत्र बताये हैं :- (1) मेरे (भगवान के) प्रति तथा सभी पदार्थों के प्रति स्नेह को विच्छिन्न कर दो। (2) धनादि परित्यक्त पदार्थों एवं योगों को पुनः अपनाने का विचार मत करो, अनगार धर्म पर दृढ रहो। (3) मित्र बांधव आदि के साथ पुनः आसक्ति पूर्ण संबंध जोड़ने की इच्छा मत करो। (4) इस समय

तुन्हें जो न्याय युक्त मोक्षमार्ग प्राप्त हुआ है, उसी पर दृढ रहो। (5) कटीले पथ को छोडकर शुद्ध राजमार्ग पर आ गये हो, तो अब दृढ निश्चयपूर्वक इसी मार्ग पर चलो। (6) दुर्बल भारवाहक की तरह विषय मार्ग पर मत चलो अन्यथा पश्चाताप करना पडेगा। (7) महासमुद्र के किनारे आकर क्यों ठिठक गये ? आगे बढो, शीघ्र पार पहुँचो। (8) एक दिन अवश्य ही तुम सिद्धिलोक को प्राप्त करोगे, यह विश्वास रख कर चलो। (9) प्रबुद्ध, उपशांत एवं संयत होकर शांति मार्ग को बढाते हुए ग्राम नगर में विचरण करो।

प्र.45 भगवान की वाणी सुनकर गौतम स्वामी ने क्या प्राप्त किया ?

उ. केवलज्ञानी भगवान महावीर की वाणी सुनकर राग-द्वेष को छोड़कर गौतम स्वामी सिद्धिगति को प्राप्त हुए।

--0--

ग्यारहवाँ अध्ययन

बहुश्रुत पूजा

प्र.1 ग्यारहवें अध्ययन का क्या नाम है ?

उ. बहुश्रुत पूजा।

प्र.2 उत्तराध्ययन में बहुश्रुत का क्या अर्थ है ?

उ. चौदह पूर्वधारी सर्वाक्षर सन्निपाती निपुण साधक।

प्र.3 दशवैकालिक सूत्र में बहुश्रुत को क्या कहा है ?

उ. आगम वृद्ध।

प्र.4 सूत्र कृतांग सूत्र में बहुश्रुत को क्या कहा है ?

उ. शास्त्रार्थ पारंगत।

प्र.5 वृहतकल्प में बहुश्रुत को क्या कहा है ?

उ. बहुत से सूत्र, अर्थ और तदुभय का धारक।

प्र.6 बहुश्रुत को व्यवहार सूत्र में क्या कहा हैं ?

उ. जिसको अंग बाह्य, अंग प्रविष्ट आदि बहुत प्रकार के श्रुत आगमों का ज्ञान हो तथा जो बहुत से साधनों की चारित्र शुद्धि करने वाला एवं युग प्रधान हो।

प्र.7 स्थानांग सूत्र में बहुश्रुत किसे कहते हैं ?

उ. सूत्र और अर्थ रुप में प्रचुरश्रुत (आगमों) पर जिसका अधिकार हो या जो जघन्य नौवें पूर्व की तृतीय वस्तु का तथा उत्कृष्टतः सम्पूर्ण दस पूर्वों का ज्ञाता हो, वह बहुश्रुत है।

प्र.8 बहुश्रुत की कितनी कोटि है ?

उ. तीन- जघन्य, मध्यम, उत्कृष्ट

प्र.9 जघन्य बहुश्रुत कौन है ?

उ जो आचार प्रकल्प और निशीथ का ज्ञाता हो।

प्र.10 मध्यम बहुश्रुत कौन है ?

उ. जो वृहत्कल्प एवं व्यंवहार सूत्र का ज्ञाता हो।

प्र.11 उत्कृष्ट बहुश्रुत कौन है ?

उ. नौवें एवं दसवें पूर्व के धारक।

प्र.12 बहुश्रुत की तीन कोटियाँ किस शास्त्र में बतायी गयी है ?

उ. निशीथ चूर्णि, वृहत्कल्प आदि में।

प्र.13 अबहुश्रुत किसे कहते हैं ?

उ. जो विद्या पंडित है। विद्यावान होते हुए भी अहंकारी है, जो रसादि में लब्ध, ग्रस्त है। जो अजितेन्द्रिय है, बार-बार असंबद्ध बोलता है तथा जो अविनीत है, वह अबहुश्रुत है।

प्र.14 किन कारणों से आत्मा शिक्षा (ज्ञान) प्राप्त नहीं कर सकती ?

उ. 5 कारणों से - अभिमान, क्रोध, प्रमाद, रोग, आलस्य।

प्र.15 किन कारणों से आत्मा शिक्षाशील कहलाती है ?

उ. आठ कारणों से - (1) सदा हंसी मजाक न करे। (2)

इन्द्रियों और मन को दमन करें। (3) दूसरों का मर्म उद्‌घाटन न करे। (4) अशील (सर्वथा चरित्रहीन) न हो। (5) विशील (दोषों अतिचारों से कलंकित व्रत चारित्र युक्त) न हो। (6) अत्यन्त रसलोलुप न हो। (7) क्रोध के कारण उपस्थित होने पर क्रोध न करे। (8) जो सत्य में अनुरक्त हो।

प्र.16 शिक्षा कितने प्रकार की है ?

उ. दो - ग्रहण शिक्षा, आसेवन शिक्षा।

प्र.17 ग्रहण शिक्षा किसे कहते हैं ?

उ. शास्त्रीय ज्ञान गुरु से प्राप्त करने को ग्रहण शिक्षा कहते हैं।

प्र.18 आसेवन शिक्षा किसे कहते हैं ?

उ. गुरु के सान्निध्य में रहकर तदनुसार आचरण एवं अभ्यास करने को आसेवन शिक्षा कहते हैं।

प्र.19 बहुश्रुत कौन होता है ?

उ. जो शिक्षाशील होता है।

प्र.20 शिक्षाशील के कितने अर्थ होते हैं ?

उ. (1) जिसकी शिक्षा में रुचि हो। (2) जो शिक्षा का अभ्यास करता हो।

प्र.21 कौन सा शिष्य मोक्ष प्राप्त नहीं करता है ?

उ. अविनित शिष्य।

प्र.22 अविनित शिष्य का व्यवहार कैसा होता है ?

उ. (1) जो बार-बार क्रोध करता है। (2) जो क्रोध को निरन्तर लम्बे समय तक बनाये रखता है। (3) जो मैत्री किये जाने पर भी उसे ठुकरा देता है। (4) जो श्रुत प्राप्त करके अहंकार करता है। (5) जो स्खलना रूप पाप को लेकर आचांर्यादि की निंदा करता है। (6) जो मित्रों पर भी क्रोध करता है। (7) जो अत्यन्त प्रिय मित्र का भी एकांत (परोक्ष) में अवर्णवाद बोलता है। (8) जो प्रकीर्णवादी (असंबद्ध भाषी) है। (9) द्रोही है। (10) अभिमानी है। (11) रस लोलुप है। (12) जो अजितेन्द्रिय है। (13) जो असंविभागी (साथी साधुओं में आहार आदि का विभाग नहीं करता) है। (14) जो अप्रीति उत्पादक है।

प्र.23 किन कारणों से शिष्य विनित कहलाता है ?

उ 15 कारणों से - (1) जो नम्र होकर रहता है। (2) जो अचपल (चंचल नहीं) है। (3) जो अमायी है। (4) जो अकुतुहली है। (5) जो किसी का तिरस्कार नहीं करता। (6) जो क्रोध को लंबे समय तक नहीं रखता। (7) मैत्री भाव रखने वाले के प्रति कृतज्ञता रखता है। (8) श्रुत शास्त्र ज्ञान प्राप्त करके मद, अहं नहीं करता। (9) स्खलना होने पर जो दूसरी की निंदा नहीं करता। (10) जो मित्रों पर कुपित नहीं होता। (11)अप्रिय

मित्र का भी एकांत में अवगुणवाद नहीं करता। (12) जो वाक्कलह और मारपीट से दूर रहता है। (13) जो कुलीन होता है। (14) जो लज्जाशील होता है।(15) जो प्रतिसंलीन (अंगोपांगो का गोपन कर्ता) होता है,ऐसा बुद्धिमान साधक सुविनित कहलाता है।

प्र.24 चंपलता (चंचलता) के कितने प्रकार हैं ?

उ. चार - (1) गति चपल (2) स्थान चपल (3) भाषा चपल (4) भाव चपल।

प्र.25 गति चपल किसे कहते हैं ?

उ. उतावला होकर चलने वाला।

प्र.26 स्थान चपल किसे कहते हैं ?

उ. जो बैठा-बैठा भी हाथ-पैर हिलाता रहता है।

प्र.27 भाषा चपल किसे कहते हैं ?

उ. जो बोलने में चपल हो।

प्र.28 भाव चपल किसे कहते हैं ?

उ. प्रारंभ किये हुए सूत्र या अर्थ को पूरा किये बिना ही, जो दूसरे कार्य में लग जाये या अन्य सूत्र, अर्थ का अध्ययन प्रारंभ कर देता है।

प्र.29 भाषा चपल कितने प्रकार के हैं ?

उ. चार - (1) असत्प्रलापी, असंख्यप्रलापी, प्रलापी, अदेशकाल प्रलापी।

प्र.30 लज्जा किसका गुण है ?

उ. विनितता का।

प्र.31 प्रमाद के मुख्य कितने भेद हैं ?

उ. पांच - मद्य, विषय, कषाय, निद्रा, विकथा।

प्र.32 सुविनितता का प्रमुख गुण क्या है ?

उ. लज्जा।

प्र.33 प्रतिसंलीन किसे कहते हैं ?

उ. जो अपने हाथ-पैर आदि अंगोपांगों से या मन और इन्द्रियों से व्यर्थ चेष्टा न करके उन्हें स्थिर करके अपनी आत्मा में संलीन रहता है, उसे प्रति संलीन करते हैं।

प्र.34 वृहदवृत्तिनुसार प्रतिसंलीन का क्या अर्थ है ?

उ. जो साधक गुरु के पास या अन्यत्र भी निःप्रयोजन इधर-उधर की चेष्टा नहीं करता, नहीं भटकता, उसे प्रतिसंलीन कहते हैं।

प्र.35 बहुश्रुत कौन होता है ?

उ. जो सदा गुरु की आज्ञा में रहता है, क्षमाधियुक्त या धर्म प्रवृत्तिमान होता है, उपधान तप में निरत रहता है, जो प्रिय करता है व प्रिय भाषी है, वह शिक्षा प्राप्त करने योग्य होने से बहुश्रुत हो जाता है।

प्र.36 बहुश्रुत की उपमा शंख से किस प्रकार की गयी है ?

उ. जैसे शंख में रखा हुआ दूध अपने और अपने आधार के गुणों के कारण दोनों प्रकार से सुशोभित होता है,

उसी प्रकार बहुश्रुत भिक्षु में धर्म, कीर्ति, श्रुत भी अपने और अपने आधार के गुणों से सुशोभित होते हैं।

प्र.37 किस देश के कौन से घोड़े उत्तम होते हैं ? बहुश्रुत की तुलना उससे किस प्रकार की गयी है ?

उ. कम्बोज देश में उत्पन्न अश्वों में कंथक अश्व शील आदि गुंणों से आकीर्ण (जातिमान) और स्फूर्ति में श्रेष्ठ होता है। उसी प्रकार बहुश्रुत साधक भी श्रुतशीलादि गुणों, जाति और स्फूर्ति वाले गुणों में श्रेष्ठ होता है।

प्र.38 बहुश्रुत किस प्रकार सुशोभित होता है ?

उ. जैसे जातिवान अश्व पर आरुढ़ होकर पराक्रमी शूरवीर योद्धा दोनों ओर से अगल-बगल में या आगे-पीछे होने वाले नदी घोष (विजयवाद्यों या जयकारों) से सुशोभित होता है, वैसे ही बहुश्रुत भी है। वह स्वाध्याय के मांगलिक स्वरों से सुशोभित होता है।

प्र.39 नंदीघोष किसे कहते हैं ?

उ. (1) बारह प्रकार के वाद्यों की एक साथ होने वाली ध्वनि। (2) मंगल पाठकों की आशीर्वचनात्मक ध्वनि।

प्र.40 बहुश्रुत की तुलना हाथी से किस प्रकार की गयी है ?

उ. जिस प्रकार हथिनियों से घिरा साठ वर्ष

हाथी किसी से पराजित नहीं होता। वैसे ही बहुश्रुत साधक औत्पातिकी आदि बुद्धिरुपी हथिनियों से तथा विविध विद्याओं से युक्त होकर किसी से भी पराजित नहीं होता।

प्र.41 बहुश्रुत को बैल (वृषभ) की उपमा क्यों दी गयी है ?

उ. जैसे तीखे सींगो एवं बलिष्ठ स्कन्धों वाला वृषभ यूथ के अधिपति के रुप में सुशोभित होता है, वैसे ही बहुश्रुत स्वशास्त्र, परशास्त्र रुप तीक्ष्ण श्रृंगों से, गच्छ का गुरुत्तर कार्य भार उठाने में समर्थ स्कन्ध से साधु आदि संघ के अधिपति आचार्य के रुप में सुशोभित होता है।

प्र.42 सिंह एवं बहुश्रुत की तुलना किस प्रकार की गयी है ?

उ. जैसे - तीक्ष्ण दाढों वाला, पूर्ण व्यस्क एवं अपराजेय सिंह वन्य प्राणियों में श्रेष्ठ होता है, वैसे ही बहुश्रुत नैगमादि नय रुप दाढों से तथा प्रतिभादि गुणों के कारण दुर्जय एवं श्रेष्ठ होता है।

प्र.43 वासुदेव से बहुश्रुत की तुलना किस प्रकार की गयी है?

उ. जैसे- शंख, चक्र, गदा को धारण करने वाले वासुदेव अप्रतिबाधित बल वाला होता है, वैसे ही बहुश्रुत

सम्यग् दर्शन, ज्ञान, चारित्र रुप त्रिविध आयुधों (शस्त्रों) से युक्त एवं कर्म रिपुओं को पराजित करने में अपराजेय योद्धा की तरह समर्थ होते हैं।

प्र.44 बहुश्रुत जी चक्रवर्ती के समान किस प्रकार की ऋद्धि से सम्पन्न होते हैं ?

उ. जैसे महान ऋद्धिवांन चातुरन्त चक्रवर्ती चौदह रत्नों का स्वामी होता है, वैसे ही बहुश्रुत जी आमर्षोषधि आदि ऋद्धियों तथा पुलाकादि लब्धियों से युक्त, चारों दिशाओं में व्यास कीर्तिवाला चौदह पूर्वो का स्वामी होते हैं।

प्र.45 बहुश्रुत की तुलना इन्द्र से किस प्रकार की गयी है ?

उ. जिस प्रकार सहस्राक्ष, वज्रपाणि एवं पुरन्दर शक्र इन्द्र देवों का अधिपति होता है, वैसे ही बहुश्रुत भी देवों के द्वारा पूज्य होने से देवों का स्वामी होता है।

प्र.46 बहुश्रुत सूर्य के समान किस तेज में दीसिमान होते हैं ?

उ. जैसे अंधकार का विध्वंसक उदीयमान दिवाकर (सूर्य) तेज से जाज्वल्यमान होता है. वैसे ही बहुश्रुत अज्ञानान्धकार नाशक होकर तप के तेज से जाज्वल्यमान होते हैं।

प्र.47 चन्द्रमा और बहुश्रुत की क्या समानता है ?

उ. जैसे नक्षत्रों के परिवार से परिवृत नक्षत्रों का स्वामी चंद्रमा पूर्णमासी को परिपूर्ण होता है, उसी प्रकार बहुश्रुत जिज्ञासु साधकों से परिपूर्ण (परिवृत), साधुओं का अधिपति एवं ज्ञानादि सकल कलाओं से परिपूर्ण होता है।

प्र.48 कोष्ठागार से बहुक्षुत की तुलना किस प्रकार की गयी ?

उ. जैसे कृषकवर्ग या व्यावसायिक गण का कोष्ठागार (कोठार) सुरक्षित और अनेक प्रकार से धान्यों से परिपूर्ण होता है, वैसे ही बहुश्रुत गच्छवासीजनों के लिए सुरक्षित ज्ञान भँडार की तरह अंग, उपांग, मूल, छेद आदि विविध श्रुत ज्ञान विशेष से परिपूर्ण होता है।

प्र.49 वृक्ष में जम्बू वृक्ष श्रेष्ठ है, उसी प्रकार साधुओं में श्रेष्ठ कौन है ?

उ. जिस प्रकार अनादृत देव का सुदर्शन नामक सर्वश्रेष्ठ जम्बू वृक्ष है, उसी प्रकार बहुश्रुत अमृत फल तुल्य श्रुतज्ञान युक्त, देव पूज्य एवं समस्त साधुओं में श्रेष्ठ होता है।

प्र.50 नीलवान् वर्षधर पर्वत से बहुश्रुत किस प्रकार श्रेष्ठ है ?

उ. जैसे नीलवान् वर्षधर पर्वत से निःसृत जलप्रवाह से परिपूर्ण एवं समुद्रगामिनी शीता नदी सब नदियों से श्रेष्ठ है, उसी प्रकार बहुश्रुत भी वीर-हिमांचल से निःसृत निर्मल श्रुतज्ञान रुप जल से पूर्ण, मोक्ष रुप महासमुद्रगामी एवं समस्त श्रुतज्ञानी साधुओं में श्रेष्ठ है।

प्र.51 बहुश्रुत मेरु पर्वत के समान किस तरह हैं ?

उ. जिस प्रकार मंदर (मेरु) पर्वत स्थिर एवं सबसे श्रेष्ठ व ऊँचा पर्वत है, यहीं से दिशाओं का प्रारंभ होता है। यह विभिन्न औषधियों से प्रज्जवलित है, उसी प्रकार बहुश्रुत भी श्रुत महात्म्य के कारण स्थिर आमर्ष औषधि आदि लब्धियों से प्रज्जवलित एवं सर्वश्रेष्ठ होते हैं।

प्र.52 स्वयंभूरमण समुद्र से बहुश्रुत की तुलना किस प्रकार की गयी है ?

उ. जिस प्रकार अक्षय-जल निधि स्वयंभूरमण समुद्र नानाविध रत्नों से परिपूर्ण होता है, उसी प्रकार बहुश्रुत भी अक्षय सम्यक् ज्ञान रुपी जलनिधि अर्थात् नानाविध रत्नादि से परिपूर्ण होता है।

प्र.53 चातुरन्त किसे कहते हैं ?

उ. (1) जिसके राज्य में एक दिशा में हिमवान पर्वत तथा शेष तीन दिशाओं में समुद्र हो, उसे चातुरन्त कहते हैं।

(2) हाथी, घोड़ा, रथ, पैदल इन चारों सेनाओं के द्वारा शत्रु का अंत करने वाला चातुरन्त है।

प्र.54 बहुश्रुत का क्या फल है ?

उ. सागर के समान गंभीर, दुरासत अर्थात् जिनका पराभूत होना दुष्कर है, परिषहादि से अविचलित, परवादियों द्वारा अत्रासित अर्थात् अजेय विपुल श्रुतज्ञान से परिपूर्ण और त्राता (षट्काय रक्षक) ऐसे बहुश्रुत मुनि कर्मों का क्षय करके उत्तमगति से मोक्ष पहुँचते हैं।

प्र.55 बहुश्रुतता प्राप्ति के लिए क्या उपदेश है ?

उ. बहुश्रुतता मुक्ति प्राप्त कराने वाली है, इसलिए मोक्ष पुरुषार्थ का अन्वेषक श्रुत आगम का अध्ययन-श्रवण-चिन्तन आदि का आश्रय ले, जिससे श्रुत के आश्रय से वह स्वयं को और दूसरे साधकों को भी सिद्धि प्राप्त करा सके।

--0--

बारहवाँ अध्ययन

हरिकेशीय

प्र.1 उत्तराध्ययन का बारहवाँ अध्ययन क्या है।

उ. हरिकेशीय।

प्र.2 इस अध्ययन में किसका वर्णन है ?

उ. हरिकेशी मुनि का।

प्र.3 हरिकेशी मुनि पूर्व भव में कौन थे ?

उ. सोमदत्त पुरोहित।

प्र.4 सोमदत्त पुरोहित कहाँ का रहने वाला था ?

उ. हस्तिानापुर का।

प्र.5 सोमदत्त को किससे द्वेष था ?

उ. जैन मुनियों से।

प्र.6 सोमदत्त ने एक बार किसे देखा ?

उ. भिक्षा के लिये घुमते हुए शंख मुनि को।

प्र.7 शंखमुनि कहाँ के राजा थे ?

उ. मथुरा के।

प्र.8 शंख मुनि ने सोमदत्त से क्या पूछा ?

उ. जनसंचार न होने से जाने का मार्ग पूछा।

प्र.9 सोमदत्त ने जिस गली का नाम बताया, उस का नाम क्या था ?

उ. हुतवह रथ्या।

प्र.10 हुतवह रथ्या की क्या विशेषता थी ?

उ. वह ग्रीष्म ऋतु के सूर्य के ताप से तपे हुए लोहे के समान गर्म रहती थी। कदाचित् कोई अनजान व्यक्ति उस गली के मार्ग से चला जाता तो वह उसकी उष्णता से मूर्च्छित होकर वहीं मर जाता।

प्र.11 हुतवह रथ्या गली का रास्ता सोमदत्त ने क्यों बताया ?

उ. जैन मुनियों से द्वेष के कारण।

प्र.12 शंख मुनि के उस गली में जाने पर क्या हुआ ?

उ. उष्ण मार्ग शीतल हो गया।

प्र.13 उष्ण मार्ग शीतल कैसे हो गया ?

उ. लब्धि सम्पन्न मुनि के प्रभाव से उनका चरणस्पर्श होते ही उष्ण मार्ग शीतल हो गया।

प्र.14 मुनिराज को धीरे-धीरे गली पार करते देख सोमदत्त की क्या हालत हुई ?

उ. उसके आश्चर्य का पार नहीं रहा, उसे भारी पश्चाताप हुआ।

प्र.15 सोमदत्त के मन में पश्चाताप क्यों हुआ ?

उ. मुनि के तपोबल से तप्त गली का चन्दन सा शीतल स्पर्श देखकर उसे मुनि के प्रति अपने कृत्य से पश्चाताप हुआ।

प्र.16 शंखमुनि ने सोमदत्त को क्या दिया ?

उ. धर्मोपदेश।

प्र.17 धर्मोपदेश सुनकर सोमदत्त ने क्या किया ?

उ. विरक्त होकर मुनि धर्म धारण किया।

प्र.18 मुनि बन जाने पर भी सोमदत्त क्या करता रहा ?

उ. जातिमद और रुपमद।

प्र.19 सोमदत्त मुनि ने अन्तिम समय में भी क्या नहीं किया ?

उ. जातिमद - रुपमद का प्रतिक्रमण-आलोचना नहीं किया।

प्र.20 चारित्र पालन कर सोमदत्त कहाँ उत्पन्न हुआ ?

उ. देवलोक में।

प्र.21 देव आयु पूर्ण कर सोमदत्त का जीव किस कुल में उत्पन्न हुआ ?

उ. चांडाल कुल में।

प्र.22 वहाँ पर सोमदत्त के जीव का क्या नाम रखा गया था ?

उ. बल।

प्र.23 बल के माता-पिता का क्या नाम था ?

उ. पिता - बल कोट्ट. माता - गौरी।

प्र.24 बल का गौत्र क्या था ?

उ. हरिकेष।

प्र.25 गौत्र के नाम से बल का नाम क्या पड़ा ?

उ. हरिकेषी।

प्र.26 हरिकेषी का रुप कैसा था ?

उ. काला-कलुटा, कुरुप और बेडौल।

प्र.27 हरिकेषी ने बदसूरत रुप क्यों पाया ?

उ. पूर्वभव में रुप का अहंकार करने के कारणं।

प्र.28 हरिकेषी का स्वभाव कैसा था ?

उ. क्रोधी एवं झगड़ालू।

प्र.29 बसंतोत्सव में हरिकेषी के साथ लोगों ने कैसा व्यवहार किया ?

उ. हरिकेषी को सबसे दूर अलग से बैठा दिया।

प्र.30 दूर बैठे हुए हरिकेषी ने क्या देखा ?

उ. एक विषधर सर्प को देखा जिसे लोगों ने तुरन्त मार दिया तथा उसके बाद दुमुँही सर्प को देखा जिसे लोगों ने विषरहित कह कर छोड़ दिया।

प्र.31 दोनों घटनाओं का हरिकेषी ने क्या चिंतन किया ?

उ. प्राणी अपने ही दोषों के कारण दुःखी बनता है तथा अपने ही गुणों के कारण प्रीतिभाजन बनता है। मेरे ही सामने विषधर को तो मार डाला एवं निर्विष को छोड़ दिया गया। मेरे बंधुजन मेरे दोषयुक्त व्यवहार के कारण ही मुझसे घृणा करते हैं। यदि मैं भी दोषरहित

बन जाऊँ तो सबका प्रीतिभाजन बन सकता हूँ।

प्र.32 विचार करते-करते हरिकेषी को कौन-सा ज्ञान उत्पन्न हुआ ?

उ. जातिस्मरण ज्ञान।

प्र.33 जातिस्मरण ज्ञान से हरिकेषी ने क्या देखा ?

उ. पूर्वभव में किया हुआ जातिमद एवं रुपमद का चित्र तैरने लगा तथा विरक्त होकर भागवती दीक्षा अंगीकार किया।

प्र.34 मुनि हरिकेषी ने कर्मक्षय करने के लिये क्या किया ?

उ. घोर तपश्चर्या।

प्र.35 हरिकेषी मुनि विहार करते हुए कहाँ पधारे ?

उ. वाराणसी नगरी।

प्र.36 वाराणसी नगरी के किस वन में रुके।

उ. तिंदुक वन में।

प्र.37 तिंदुक वन में कौन रहता था ?

उ. गंडी तिंदुक नामक यक्ष।

प्र.38 मुनि के गुणों से कौन प्रभावित हुआ ?

उ. गंडी तिंदुक यक्ष।

प्र.39 वाराणसी नगरी के राजा कौन थे ?

उ. कौसलिक राजा।

प्र.40 कौसलिक राजा की पुत्री का क्या नाम था ?

उ. भद्रा।

प्र.41 राजकुमारी भद्रा तिंदुक वन में क्यों आई थी ?

उ. तिंदुक यक्ष की पूजा करने के लिये।

प्र.42 यक्ष की प्रदक्षिणा करते राजकुमारी ने किसे देखा ?

उ. हरिकेषी मुनि को।

प्र.43 हरिकेषी मुनि को देखकर राजकुमारी भद्रा ने क्या किया ?

उ. तिरस्कार सूचक मुँह बनाकर घृणाभाव से उन पर थूक दिया।

प्र.44 राजकुमारी का असभ्य व्यवहार किसने देखा ?

उ. यक्ष ने।

प्र.45 असभ्य व्यवहार देखकर यक्ष ने क्या किया ?

उ. यक्ष कुपित होकर राजकुमारी के शरीर में प्रविष्ट हो गया।

प्र.46 यक्षविष्ट राजकुमारी क्या करने लगी ?

उ. राजपुत्री पागलों की तरह असम्बद्ध प्रलाप एवं विकृत चेष्टाएँ करने लगी।

प्र.47 यक्ष ने राजा से क्या कहा ?

उ. इस कन्या ने घोर तपस्वी महामुनि का अपमान किया है अतः मैंने उसका फल चखाने के लिए ही इसे पागल

कर दिया है। अगर आप इसे जीवित देखना चाहते हो तो इस अपराध के प्रायश्चित स्वरुप उन्हीं मुनि के साथ इसका विवाह कर दीजिए। अगर यह विवाह स्वीकार नहीं किया तो मैं राजपुत्री को जीवित नहीं रहने दूंगा।

प्र.48 यक्ष की बात सुनकर राजा ने क्या सोचा ?

उ. यदि मुनि के साथ विवाह कर देने से यह जीवित रहती है तो हमें क्या आपत्ति है ? राजा ने यह बात स्वीकार कर ली।

प्र.49 राजा ने मुनि की सेवा में पहुँचकर क्या किया ?

उ. अपने अपराध की क्षमा मांगी।

प्र.50 राजा ने मुनि से क्या प्रार्थना की ?

उ. भगवन् ! इस कन्या ने आपका अपराध किया है। अतः मैं आपकी सेवा में इसे परिचारिका के रूप में देता हूँ। अतः आप इसे स्वीकार कीजिये।

प्र.51 राजा की बात सुन मुनि ने क्या कहा ?

उ. राजन् ! मेरा कोई अपराध नहीं हुआ है, परन्तु मैं धन-धान्य, स्त्री, पुत्र आदि समस्त सांसारिक संबंधों से विरक्त हूँ। ब्रह्मचर्य महाव्रती हूँ। किसी भी स्त्री के साथ विवाह करना तो दूर रहा। स्त्री के साथ एक मकान में निवास करना भी हमारे लिये अकल्पनीय है। संयमी पुरुषों के लिए संसार की समस्त स्त्रियाँ माता,

बहिन एवं पुत्री के समान है। आपकी पुत्री से मेरा कोई प्रयोजन नहीं है।

प्र.52 राजकुमारी ने मुनि से क्या अनुनय-विनय किया?

उ. पाणिग्रहण करने के लिये।

प्र.53 राजकुमारी ने मुनि से पाणिग्रहण करने की अनुनय-विनय क्यों की ?

उ. अपने यक्ष प्रकोप को दूर करने के लिये।

प्र.54 मुनि द्वारा वैवाहिक प्रस्ताव अस्वीकार करने पर यक्ष ने क्या कहा ?

उ. यदि मुनि तुम्हें नहीं चाहते हैं, तो तुम अपने घर चली जाओ।

प्र.55 यक्ष का वचन सुनकर राजकुमारी ने क्या किया?

उ. निराश होकर राजकन्या अपने पिता के साथ वापस लौट गयी।

प्र.56 अन्य व्यक्तियों ने राजा से क्या कहा ?

उ. यदि मुनि नहीं चाहते हैं तो 'ब्राह्मण भी ऋषि का ही रुप है।'

प्र.57 भद्रा राजकुमारी का विवाह किससे हुआ ?

उ. रुद्रदेव के साथ।

प्र.58 रुद्रदेव कौन था ?

उ. राजा का राजपुरोहित।

प्र.59 रुद्रदेव किसका अधिपति था ?

उ. यज्ञशाला का।

प्र.60 यज्ञशाला की व्यवस्था रुद्रदेव ने किसको सौंपी ?

उ. अपनी नवविवाहिता पत्नी भद्रा को।

प्र.61 मुनि हरिकेषी मासखमण के पारणे के लिये कहाँ पधारे ?

उ. मध्यम, उच्च, नीच कुलों में परिभ्रमण करते हुए रुद्रदेव की यज्ञशाला में पधारे।

प्र.62 हरिकेषी मुनि को देखकर ब्राह्मण क्या करने लगे ?

उ. तपस्या से कृष शरीर, जीर्ण एवं मलीन वस्त्र वाले मुनि को देखकर वे ब्राह्मण उनका उपहास करने लगे।

प्र.63 मुनि को देखकर वे ब्राह्मण मुनि के विषय में क्या सोचने लगे ?

उ. वे सोचने लगे कि वीभत्स (भयानक) रूप वाले काले-कलुटे, विकराल, बेडौल नाक वाले, अल्प एवं मलीन वस्त्र वाले, धूलि धूसरित शरीर होने से भूत समान दिखायी देने वाले और कूढे के ढेर उठाकर लाये हुए जीर्ण एवं मलीन वस्त्र धारण किये हुए यह कौन आ रहा है ?

प्र.64 मुनि को देखकर ब्राह्मण क्या कहने लगे ?

उ. अरे अदर्शनीय ! तू कौन है ? यहाँ तू किसलिये आया है। जीर्ण और मैले वस्त्र होने से अर्धनंगे तथा धूल के कारण पिशाच जैसे शरीर वाले ! चल हट जा यहाँ से। यहाँ क्यों खड़ा है ?

बहिन एवं पुत्री के समान है। आपकी पुत्री से मेरा कोई प्रयोजन नहीं है।

प्र.52 राजकुमारी ने मुनि से क्या अनुनय-विनय किया?

उ. पाणिग्रहण करने के लिये।

प्र.53 राजकुमारी ने मुनि से पाणिग्रहण करने की अनुनय-विनय क्यों की ?

उ. अपने यक्ष प्रकोप को दूर करने के लिये।

प्र.54 मुनि द्वारा वैवाहिक प्रस्ताव अस्वीकार करने पर यक्ष ने क्या कहा ?

उ. यदि मुनि तुम्हें नहीं चाहते हैं, तो तुम अपने घर चली जाओ।

प्र.55 यक्ष का वचन सुनकर राजकुमारी ने क्या किया?

उ. निराश होकर राजकन्या अपने पिता के साथ वापस लौट गयी।

प्र.56 अन्य व्यक्तियों ने राजा से क्या कहा ?

उ. यदि मुनि नहीं चाहते हैं तो 'ब्राह्मण भी ऋषि का ही रूप है।'

प्र.57 भद्रा राजकुमारी का विवाह किससे हुआ ?

उ. रुद्रदेव के साथ।

प्र.58 रुद्रदेव कौन था ?

उ. राजा का राजपुरोहित।

प्र.59 रुद्रदेव किसका अधिपति था ?

उ. यज्ञशाला का।

प्र.60 यज्ञशाला की व्यवस्था रुद्रदेव ने किसको सौंपी ?

उ. अपनी नवविवाहिता पत्नी भद्रा को।

प्र.61 मुनि हरिकेषी मासखमण के पारणे के लिये कहाँ पधारे ?

उ. मध्यम, उच्च, नीच कुलों में परिभ्रमण करते हुए रुद्रदेव की यज्ञशाला में पधारे।

प्र.62 हरिकेषी मुनि को देखकर ब्राह्मण क्या करने लगे ?

उ. तपस्या से कृष शरीर, जीर्ण एवं मलीन वस्त्र वाले मुनि को देखकर वे ब्राह्मण उनका उपहास करने लगे।

प्र.63 मुनि को देखकर वे ब्राह्मण मुनि के विषय में क्या सोचने लगे ?

उ. वे सोचने लगे कि वीभत्स (भयानक) रूप वाले काले-कलुटे, विकराल, बेडौल नाक वाले, अल्प एवं मलीन वस्त्र वाले, धूलि धूसरित शरीर होने से भूत समान दिखायी देने वाले और कूढ़े के ढेर उठाकर लाये हुए जीर्ण एवं मलीन वस्त्र धारण किये हुए यह कौन आ रहा है ?

प्र.64 मुनि को देखकर ब्राह्मण क्या कहने लगे ?

उ. अरे अदर्शनीय ! तू कौन है ? यहाँ तू किसलिये आया है। जीर्ण और मैले वस्त्र होने से अर्धनंगे तथा धूल के कारण पिशाच जैसे शरीर वाले ! चल हट जा जहाँ से। यहाँ क्यों खड़ा है ?

प्र.65 ब्राह्मणों की बात सुनकर मुनि का परिचय किसने दिया ?

उ. तिंदुकवासी यक्ष ने।

प्र.66 तिंदुकवासी यक्ष ने ब्राह्मणों की बात का उत्तर किस प्रकार दिया ?

उ. यक्ष ने अपनी शरीर को छिपाकर (महामुनि के शरीर में प्रविष्ट होकर) ब्राह्मणों के प्रश्न का उत्तर दिया।

प्र.67 यक्ष ने मुनि की तरफ से ब्राह्मणों को क्या उत्तर दिया ?

उ. मैं मुनि - संयत, ब्रह्मचारी, धन, परिग्रह से निवृत्त हूँ। मैं भिक्षाकाल में दूसरों के द्वारा अपने लिये बनाये हुए आहार में से कुछ पाने के लिये यहाँ (यज्ञशाला) में आया हूँ।

प्र.68 यक्षाधिपति रुद्रदेव ने मुनि के भिक्षा मांगने पर क्या कहा ?

उ. यह भोजन ब्राह्मणों के लिये तैयार किया गया है। यह एकपक्षीय है। अतः ऐसा अन्न-पान हम तुझे नहीं देंगे। अतः यहाँ क्यों खड़ा है ?

प्र.69 एकपक्षीय आहार किसे कहते हैं ?

उ. एक पक्ष के लिये तैयार भोजन। एकपक्षीय अर्थात् यज्ञ में निष्पन्न भोजन केवल ब्राह्मणों के लिये है। अर्थात् यज्ञ में सुसंस्कृत भोजन ब्राह्मण जाति के

अतिरिक्त अन्य किसी जाति को नहीं दिया जाता है। विशेषतः शुद्र को तो बिल्कुल नहीं दिया जा सकता।

प्र.70 मुनि शरीरस्थ यक्ष ने किसे पुण्य क्षेत्र बताया ?

उ. अच्छी उपज की आकांक्षा से कृषक उच्च एवं निम्न भू-भागों में बीज बोते हैं। कृषक की श्रद्धा के समान आशां रखकर मुझे दान दो, यही पुण्य क्षेत्र है और इसी की आराधना करो।

प्र.71 रुद्रदेव ने आहार देने से मना करते हुआ क्या कहा ?

उ. हमें मालूम है कि कहाँ बीज उगते हैं। यह अन्न पान भले ही सड़ जाये, नष्ट हो जाये पर तुझे नहीं देंगे।

प्र.72 रुद्रदेव ब्राह्मण ने पाप क्षेत्र किसे बताया ?

उ. जगत में पुण्य क्षेत्र कौन-से हैं, यह हमें मालूम है। जहाँ बोये हुए बीज पूर्ण रुप से उग जाते हैं, जो ब्राह्मण जाति और विद्याओं से युक्त है। वे ही पुण्यक्षेत्र है और तेरे सरीखे शुद्ध जातीय तथा चतुर्दश विद्यारहित भिक्षु पापक्षेत्र है।

प्र.73 मुनि के शरीर में प्रवेश यक्ष ने किसे पाप क्षेत्र बताया ?

उ. जिनके जीवन में क्रोध और अभिमान है, हिंसा, असत्य, अदत्तादान और परिग्रह है, वे ब्राह्मण जाति और विद्यारहित है, वे क्षेत्र स्पष्ट रुप से पाप क्षेत्र हैं।

प्र.74 मुनि ने उत्तम क्षेत्र किसे कहा ?

उ. हे ब्राह्मणों ! तुम तो इस जगत में केवल शास्त्रवाणी का भार वहन करने वाले हो। वेदों को पढ़कर भी उसके वास्तविक अर्थ को नहीं जानते हो और जो मुनि ऊँच-नीच-मध्यम घरों में समभावपूर्वक भिक्षाटन करते हैं, वे ही वास्तव में उत्तम क्षेत्र है।

प्र.75 मुनि को पीटने का आदेश किसने दिया ?

उ. रुद्रदेव ब्राह्मण ने।

प्र.76 रुद्रदेव ने किसे पीटने का आदेश दिया ?

उ. हरिकेषी मुनि को।

प्र.76 रुद्रदेव ने मुनि को पीटने के लिये किसे कहा ?

उ. ब्राह्मण कुमारों को।

प्र.77 उन ब्राह्मण कुमारों ने मुनि को किससे पीटा ?

उ. डंडों, बेतों और चाबुकों से पीटा।

प्र.78 मुनि को पीटते हुए किसने देखा ?

उ. पीटते मुनि को देखकर राजकुमारी ने देखा।

प्र.79 पीटते मुनि को देखकर राजकुमारी ने क्या किया ?

उ. वह कुमारों को शांत करने लगी।

प्र.80 भद्रा ने ब्राह्मण कुमारों को मुनि का क्या परिचय दिया ?

उ. देव की प्रेरणा से प्रेरित होकर मेरे पिता ने मुझे इन मुनि को दी थी, किन्तु इस मुनि ने मुझे मन से भी नहीं

चाहा और मेरा परित्याग कर दिया। ऐसे निस्पृह तथा देवेन्द्रों तथा नरेन्द्रों द्वारा पूजित ये वही ऋषि हैं।

प्र.81 भद्रा ने मुनि की किन विशेषताओं को उजागर किया ?

उ. ये मुनि उग्र तपस्वी, महात्मा, जितेन्द्रिय, संयमी और ब्रह्मचारी आदि अनेक विशेषताओं से सुशोभित हैं।

प्र.82 भद्रा के समझाने पर यक्ष ने कुमारों के साथ क्या किया ?

उ. भद्रा के सुभाषित वचनों को सुनकर तपस्वी ऋषि की वैयावृत्य के लिये उपस्थित यक्ष ने उन ब्राह्मण कुमारों को भूमि पर गिरा दिया और मुनि को पीटने से रोक दिया।

प्र.83 भद्रा के समझाने पर भी कुमार नहीं माने तो यक्ष ने क्या कहा ?

उ. भयंकर रूप वाले यक्ष ने आकाश में स्थित होकर वहाँ खड़े उन कुमारों को मारने लगा तथा उनके शरीर को क्षत-विक्षत कर दिया।

प्र.84 ब्राह्मण कुमारों की दशा देखकर भद्रा ने क्या कहा ?

उ. तुम भिक्षु की अवज्ञा कर रहे हो तो मानो नखों पर्वत खोद रहे हो। यह महर्षि [illegible] है, घोर तपस्वी, घोर पराक्रमी है।

काल में भिक्षु को व्यथित करते हैं, वे पतंगों की सेना की तरह अग्नि में गिर रहे हैं। यदि तुम अपना जीवन और धन सुरक्षित रखना चाहते हो तो सभी लोग मिलकर नतमस्तक होकर इनकी शरण में आ जाओ। तुम्हें मालूम होना चाहिए कि यह ऋषि यदि कुपित हो जाए तो समग्र लोक को भी भस्म कर सकते हैं।

प्र.85 मुनि को प्रताड़ित करने वाले कुमारों की क्या दशा हुई ?

उ. मुनि को प्रताड़ित करने वाले छात्रों के मस्तक पीठ की ओर झुक गये। उनकी बाँहें फैल गयी, इससे वे प्रत्येक क्रिया के लिए निश्चेष्ट हो गये। और उनकी आँखें खुली की खुली रह गयी। मुख से रक्त बहने लगे। मुँह ऊपर की ओर हो गए और उनकी जिव्हाएँ और आँखें बाहर निकल आयी।

प्र.86 छात्रों की दुर्दशा से दुखी रुद्रदेव ने क्या किया ?

उ. मुनि से क्षमायाचना की।

प्र.87 रुद्रदेव ने क्षमायाचना करते हुए मुनि से क्या कहा ?

उ. भगवन् ! इन अज्ञानी, गूढ़, बालकों ने आपकी जो अवहेलना की है, उसके लिये क्षमा करें। क्योंकि ऋषिजन महान प्रसाद प्रसन्नता से युक्त होते हैं वे कभी कोप परायण नहीं होते।

प्र.88 रुद्रदेव की बात का मुनि ने क्या जवाब दिया ?

उ. मेरे मन में न पहले कोई द्वेष था न अब है और न ही भविष्य में होगा, किन्तु तिन्दुकवासी यक्ष मेरी सेवा करता है, उसने ही इन कुमारों को प्रताड़ित किया है।

प्र.89 मुनि की बात सुनकर रुद्रदेव ने क्या कहा ?

उ. अर्थ और धर्म को विशेष रुप से जानने वाले भूतिप्रज्ञ (मंगल बुद्धि) आप क्रोध न करें। हम सब लोग मिलकर आपके चरणों की शरण स्वीकार करते हैं।

प्र.90 रुद्रदेव ने मुनि को आहार ग्रहण करने के लिए क्या कहा ?

उ. हे मुनि! हम आपकी अर्चना करते हैं, आपके शरीर का ऐसा कोई भी अंग, यहाँ तक कि चरणरज आदि कुछ भी ऐसा नहीं है जिसकी अर्चना हम न करें। अर्थात् अर्चना योग्य न हो। हम आपसे यही विनती करते हैं कि दही आदि अनेक प्रकार के व्यंजनों से सम्मिश्रित एवं शालि चाँवलों से विष्पन्न भोजन ग्रहण करके उसका उपयोग करें।

प्र.91 हरिकेषी मुनि के कितने की तपस्या थी ?

उ. मासखमण।

प्र.92 रुद्रदेव के आहार पान ग्रहण करने की प्रार्थना पर मुनि ने क्या कहा ?

उ. अपनी स्वीकृति दी और आहार पानी ग्रहण कर

तपस्या का पारणा किया।

प्र.93 मुनि के आहार ग्रहण करने पर देवताओं ने क्या किया ?

उ. पंच दिव्य की वृष्टि की।

प्र.94 ब्राह्मणों द्वारा मुनि की महिमा किस प्रकार गायी गयी ?

उ. ब्राह्मण आश्चर्यचकित होकर कहने लगे- तप की विशेषता महत्ता तो प्रत्यक्ष दिखायी दे रही है, जाति की कोई विशेषता नहीं दिखती। जिसकी ऐसी बुद्धि है, अर्हती चमत्कारी अचिन्त्य शक्ति है, वह हरिकेषी मुनि चांडाल पुत्र है। यदि जाति की महत्ता विशेषता होती तो देव हमारी सेवा और सहायता करते। इस चांडाल पुत्र की क्यों करते ?

प्र.95 मुनि एवं ब्राह्मणों की किस विषय पर चर्चा हुई ?

उ. यज्ञ, स्नानादि विषय में।

प्र.96 रुद्रदेव ने हरिकेषी मुनि से क्या पूछा ?

उ. हे भिक्षु ! हम कैसी प्रवृत्ति करें ? कैसे यज्ञ करें ? जिससे हम पाप कर्मों को दूर कर सकें। हे मुनि ! आप हमें यह बताइये कि कुशल पुरुष श्रेष्ठ यज्ञ किसे कहते हैं ?

प्र.97 रुद्रदेव के प्रश्नों का मुनि ने क्या उत्तर दिया ?

उ. मन और इन्द्रियों को वश में रखने वाले मुनि षटजीव

निकाय का आरंभ नहीं करते, असत्य नहीं बोलते, चोरी नहीं करते, परिग्रह, स्त्री, मान और माया के स्वरूप को जानकर एवं उन्हें त्याग कर प्रवृत्ति करते हैं। जो पाँच संवरों से पूर्णतया संवृत्त होते हैं, इस मनुष्य जन्म में असंयमी जीवन की आकांक्षा नहीं करते, जो काया का व्युत्सर्ग करते हैं, जो पवित्र है, जो देह भाव रहित हैं, वे महाजय रूप श्रेष्ठ यज्ञ करते हैं।

प्र.98 आपकी ज्योति कौन सी है - रुद्रदेव के इस प्रश्न का हरिकेषी मुनि ने क्या उत्तर दिया ?

उ. तपश्चर्या ज्योति है।

प्र.99 रुद्रदेव ने मुनि से पूछा - आपका ज्योति स्थान क्या है ?

उ. मुनि ने कहा - जीव (आत्मा) ज्योति स्थान है।

प्र.100 कुडछियाँ (घी आदि को आहूति में डालने का पात्र) कौन-सी हैं ?

उ. मन, वचन, काया की शुभ प्रवृत्तियाँ कुडछियाँ हैं।

प्र.101 अग्नि को उद्दीप्त करने वाले करीषांग (कंडे) कौन-से हैं ?

उ. शरीर (शरीर के अवयव) अग्नि प्रदीप्त करने के कंडे हैं।

प्र.102 अग्नि को जलाने का ईंधन क्या है ?

उ. कर्म रुपी ईंधन है ?

प्र.103 शांतिपाठ कौन-सा है ?

उ. संयम के योग शांति पाठ हैं।

प्र.104 किस होम विधि से आप ज्योति को (आहुति द्वारा) तृप्त करते हैं ?

उ. मैं ऋषियों के लिए प्रशस्त जीवोपघात रहित होने से विवेकी मुनियों द्वारा प्रशंसित होम प्रधान यज्ञ करता हूँ।

प्र.105 ह्रद (जलाशय) कौन सा है ?

उ. आत्मा की प्रसन्न और अकलुषित लेश्या धर्म मेरा जलाशय है।

प्र.106 आप कहाँ स्नान कर रजमल को झाड़ते हो ?

उ. शांति तीर्थ में स्नान कर मैं विमल, विशुद्ध और सुशांत होकर कर्मरुप दोष को दूर करता हूँ।

प्र.107 आपका शांति तीर्थ कौन सा है ?

उ. ब्रह्मचर्य मेरा शांति तीर्थ है।

प्र.108 शुद्धि किसे कहते हैं ?

उ. निर्मलता को।

प्र.109 शुद्धि कितने प्रकार की है ?

उ. द्रव्य शुद्धि, भाव शुद्धि।

प्र.110 द्रव्य शुद्धि किसे कहते हैं ?

उ. पानी से मलिन वस्त्र आदि धोना द्रव्य शुद्धि है।

प्र.111 भाव शुद्धि क्या है ?

उ. तप संयमादि के द्वारा अष्टविध कर्म मैल को धोना भाव शुद्धि है।

प्र.112 हरिकेषी मुनि संयम पालकर कहाँ उत्पन्न हुएं ?

उ. शुद्ध संयम का पालन कर अंतिम समय में संथारा संलेखना कर सिद्ध गति को प्राप्त हुए।

--0--

तेरहवाँ अध्ययन

चित्त सम्भूतीय

प्र.1 तेरहवें अध्ययन का क्या नाम है ?

उ. चित्त सम्भूतीय।

प्र.2 इस अध्ययन में किसका वर्णन है ?

उ. चित्त संभूति के छः भवों का।

प्र.3 चित्त और संभूति छः भवों तक किस रुप में जन्में ?

उ. (1) गौपालक पुत्र (2) दासी पुत्र (3) हिरण पुत्र (4) राजहंस युगल (5) चांडाल पुत्र - इन पाँच भवों में एक ही स्थान पर जन्म लिया और छठवें भव ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती और गुणसार मुनि के रुप में अलग स्थानों में जन्म लिया।

प्र.4 चित्त और संभूति अध्ययन के माध्यम से किसे क्या प्रेरणा दी गई है ?

उ. इस अध्ययन में संयम की आराधना और विराधना का फल बताकर साधु-साध्वियों एवं भवी जनों को प्रेरणा दी गई है।

प्र.5 प्रथम भव में चित्त संभूति कौन थे ?

उ. गोपालक पुत्र।

प्र.6 गोपालक पुत्रों नें जंगल में किसे देखा ?

उ. सागर चंद्रमुनि को।

प्र.7 सागरचंद्र मुनि विहार कर कहाँ पहुँचे ?

उ. भयानक अटवी में।

प्र.8 भयानक अटवी में मुनि की दुर-अवस्था किसने देखी ?

उ. चार गोपालक पुत्रों ने।

प्र.9 मुनि की दुरवस्था देख गोपालक पुत्रों के मन में क्या उत्पन्न हुआ ?

उ. करुणा उत्पन्न हुयी।

प्र.10 मुनि ने स्वस्थ होकर गोपालक पुत्रों को क्या दिया?

उ. धर्मोपदेश दिया।

प्र.11 चार बालकों ने धर्मोपदेश पाकर क्या किया ?

उ. प्रतिबोध पाकर दीक्षित हो गये।

प्र.12 चारों मुनियों की मनोवृत्ति कैसी थी ?

उ. दो मुनियों के मन में अन्त तक साधुओं के मलिन वस्त्रों से घृणा बनी रही और अन्य दो मुनि संयम पालन में निमग्न हुए।

प्र.13 मुनि वस्त्रों से घृणा करने वाले दोनों मुनि मरकर कहाँ उत्पन्न हुये।

उ. दासी की कुक्षि से युगल रुप में।

प्र.14 दासी का क्या नाम था ?

उ. यशोमति।

प्र.15 यशोमति किस के यहाँ दासी थी ?

उ. शांडिल्य ब्राह्मण के यहाँ।

प्र.16 शांडिल्य ब्राह्मण कहाँ का रहने वाला था ?

उ. दशार्ण नगर (दशपुर) का ।

प्र.17 दासी की कुक्षि में क्यों उत्पन्न होना पड़ा ?

उ. जुगुप्सा (घृणा) वृत्ति के कारण।

प्र.18 दासी पुत्रों की मृत्यु कैसे हुई ?

उ. सर्पदंश से।

प्र.19 दोनों भाई मरकर कहाँ उत्पन्न हुए ?

उ. हिरनी के ऊदर में युगल रूप में।

प्र.20 हिरनी के बच्चों की मृत्यु कैसे हुई ?

उ. एक शिकारी के बाण से।

प्र.21 हिरन जन्म के बाद उनका जन्म कहाँ हुआ ?

उ. मृतगंगा किनारे राजहंस के रुप में।

प्र.22 राजहंस की मृत्यु कैसे हुयी ?

उ. एक मछुआरे के द्वारा गर्दन पकड़ कर मरोड़ने से।

प्र.23 दोनों हंस मरकर कहाँ उत्पन्न हुए ?

उ. वाराणसी में।

प्र.24 वाराणसी में किसके यहाँ उत्पन्न हुए ?

उ. चांडालों के अधिपति के यहाँ।

प्र.25 चांडालों का अधिपति कौन था ?

उ. भूतदत्त।

प्र.26 दोनों कुमारों का भूतदत्त ने क्या नाम रखा ?

उ. चित्त और सम्भूत।

प्र.27 वाराणसी नगरी के राजा कौन थे ?

उ. शंख।

प्र.28 शंख का मंत्री कौन था ?

उ. नमुचि।

प्र.29 राजा ने क्रुद्ध होकर नमुचि को क्या दंड दिया था ?

उ. प्राणदण्ड।

प्र.30 प्राणवध का कार्य किसे सौंपा गया ?

उ. भूतदत्त चांडाल को।

प्र.3[illegible] भूतदत्त ने नमुचि के सामने क्या शर्त रखी ?

[illegible] दोनों पुत्रों को पढ़ाने की।

प्र.32 नमुचि ने यह शर्त क्यों स्वीकार की ?

उ. जीवित रहने की आशा में।

प्र.33 नमुचि को चांडाल ने कहाँ पर रखा ?

उ. अपने घर में छिपा दिया।

प्र.34 नमुचि की सेवा कौन करती थी ?

उ. भूतदत्त की पत्नी।

प्र.35 नमुचि किस पर आसक्त था ?

उ. भूतदत्त की पत्नी पर।

प्र.36 नमुचि की नीयत मालूम पड़ने पर मूक्षदत्त ने क्या निश्चय किया ?

उ. नमुचि को मारने का।

प्र.37 दोनों कुमारों को नमुचि को मारने का पता चलने पर उन्होंने क्या किया ?

उ. नमुचि को वहाँ से भगा दिया।

प्र.38 नमुचि प्राण बचाकर भागकर कहाँ गया ?

उ. हस्तिनापुर।

प्र.39 हस्तिनापुर में किसका राज्य था ?

उ. सनत् चक्रवर्ती का।

प्र.40 नमुचि सनत चक्रवर्ती का क्या बना ?

उ. मंत्री।

प्र.41 चित्त और संभूति किस कला में प्रवीण थे ?

उ. नृत्य और संगीत कला में।

प्र.42 वाराणसी के कौन से महोत्सव में दोनों भाई शामिल हुये ?

उ. बसन्त महोत्सव में।

प्र.43 बसन्तोत्सव में कौन आकर्षण के केन्द्र थे ?

उ. दोनों भाई - चित्त और सम्भूति।

प्र.44 दोनों भाई की कला देखकर जनता किसका भेद भूल गयी ?

उ. स्पृश्य-अस्पृश्य (छुआछूत) का भेद।

प्र.45 दोनों कुमारों को देखकर किसे ईर्ष्या उत्पन्न हुयी ?

उ. कट्टरपंथी ब्राह्मणों को।

प्र.46 ब्राह्मणों ने राजा से किसकी शिकायत की ?

उ. चित्त-संभूति दोनों भाईयों की।

प्र.47 ब्राह्मणों ने दोनों भाईयों की क्या शिकायत की ?

उ. इन्होंने हमारा धर्म भ्रष्ट कर दिया है ?

प्र.48 ब्राह्मणों की शिकायत पर राजा ने क्या किया ?

उ. दोनों भाईयों को वाराणसी से निकाल दिया।

प्र.49 कौन से महोत्सव पर दोनों भाई रुप बदलकर आये ?

उ. कौमुदी महोत्सव।

प्र.50 ईर्ष्यालु लोगों ने दोनों भाईयों के साथ क्या व्यवहार किया ?

उ. नगर से बाहर निकाल दिया।

प्र.51 अपमानित भाईयों को अपने जीवन के प्रति क्या होने लगी ?

उ. घृणा होने लगी।

प्र.52 अपमानित भाईयों ने क्या निश्चय किया ?

उ. आत्महत्या का।

प्र.53 आत्महत्या करने के लिये कहाँ पहुँचे ?

उ. दोनों पर्वत पर पहुँचे।

प्र.54 पर्वत से गिरने की तैयारी में थे तब दोनों भाईयों को किसने देखा ?

उ. निर्ग्रन्थ श्रमण ने।

प्र.55 निर्ग्रन्थ श्रमण ने दोनों भाईयों को क्या समझाया?

उ. आत्महत्या करना कायरों का काम है। इससे दुःखों का अन्त होने के बजाय वे बढ़ जायेंगे। तुम जैसे विमल बुद्धि वाले व्यक्तियों के लिये यह उचित नहीं। अगर शारीरिक और मानसिक समस्त दुःखों के सदा के लिये मिटाना चाहते हो तो मुनिधर्म की शरण में आओ।

प्र.56 मुनि की बात सुनकर दोनों भाईयों ने क्या किया ?

उ. दोनों प्रतिबद्ध हुये और मुनिधर्म को स्वीकार किया।

प्र.57 तपस्या से उन्हें क्या प्राप्त हुआ ?

उ. अनेक लब्धियाँ प्राप्त हुई।

प्र.58 ग्रामानुग्राम विचरण करते हुए मुनि कहाँ पधारे ?

उ. हस्तिनापुर में।

प्र.59 हस्तिनापुर में दोनों मुनि कहाँ पधारे ?

उ. नगर के बाहर।

प्र.60 हस्तिनापुर पधारे तब कितनी तपस्या थी ?

उ. मासखमण की।

प्र.61 मासखमण के पारणे के लिये कौन पधारे ?

उ. सम्भूति मुनि।

प्र.62 सम्भूति मुनि को भिक्षा के लिये घूमते हुए किसने देखा ?

उ. नमुचि मंत्री ने।

प्र.63 नमुचि ने मुनि को देखकर क्या संदेह हुआ ?

उ. यह मुनि मेरा अतीत जानता है। अगर इसने मेरा रहस्य प्रकट कर दिया तो मेरी महत्ता नष्ट हो जायेगी।

प्र.64 किसके कहने पर लोगों ने मुनि को पीटा ?

उ. नमुचि के कहने पर।

प्र.65 क्रोध के कारण उनके शरीर में कौन सी लेश्या निकली ?

उ. तेजोलेश्या।

प्र.66 तेजोलेश्या निकलते ही क्या हुआ ?

उ. धुँए के घने बादलों से सारा नगर आच्छादित हो गया।

प्र.67 भयभीत लोग मुनि से क्या मांगने लगे ?

उ. अपने अपराध की क्षमा मांग कर मुनि को शांत करने लगे।

प्र.68 सूचना पाकर घटना स्थल पर कौन पहुँचे ?

उ. सनत चक्रवर्ती।

प्र.69 महांराज सनत कुमार ने मुनि संभूति से क्या कहा ?

उ. भगवन्! आपको उपसर्ग देने वाला तो नीच व्यक्ति है किन्तु आप तो महान हैं, महात्मा हैं, सभी जीवों पर अनुकम्पा करने वाले हैं, और सभी का हित चाहने वाले हैं। आप पापियों, दुष्टों और अहित करने वालों का भी हित करते हैं। फिर कुपित होकर तेजोलेश्या फैलाकर लाखों जीवों को पीड़ित करना आपके लिये उचित कैसे हो सकता है ? सन्त तो क्षमा के सागर होते हैं, आप भी क्षमा धारण कर सभी को अभयदान दीजिए।

प्र.70 राजा की प्रार्थना पर मुनि पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उ. कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा एवं उनकी प्रार्थना व्यर्थ गयी।

प्र.71 संभूति मुनि का क्रोध किसने शांति किया ?

उ. चित्र मुनि ने।

प्र.72 इस घटना से दोनों मुनियों ने क्या सोचा ?

उ. धिक्कार है, इस शरीर और इसमें रही हुई जठराग्नि

को, जिसे शान्त करने के लिये आहार की आवश्यकता होती है और याचना के लिये नगर में जाना पड़ता है। जिससे ऐसे निमित्त खड़े होते हैं। यदि आहार के लिये नगर में जाने की आवश्यकता नहीं होती तो न तो यह उपद्रव होता और न ही मुझे दोष सेवन करना पड़ता। इसलिए अब जीवन भर के लिये आंहार का त्याग करना ही श्रेयस्कर है। दोनों मुनिवरों ने संलेखनापूर्वक अनशन कर लिया और धर्मभाव में रमण करने लगे।

प्र.73 राज्य भवन पहुँचकर सनत चक्रवर्ती ने किसे क्या आदेश दिया ?

उ. सनत चक्रवर्ती ने नगर रक्षक को आदेश दिया और कहा कि- जिस अधम ने तपस्वी भक्त से अकारण उपद्रव किया उसे शीघ्र ही पकड़कर मेरे सामने हाजिर करो। इस नराधम को मैं उचित दण्ड दूंगा।

प्र.74 नगर रक्षक ने किसे पकड़ा ?

उ. नमुचि को।

प्र.75 महाराजाधिराज ने नमुचि से क्या कहा ?

उ. हे अधमाधम ! तू राज्य का प्रधान होकर भी इतना दुष्ट है कि तपस्वी महात्मा को, जिनके चरणों में इन्द्रों के मुकुट झुकते हैं, और परम वंदनीय है, उन्हें तुम अकारण ही पीटवाकर निकलवा दिया। बोल, यह पाप क्यों किया तूने ?

प्र.76 महाराजाधिराज की ज्ञान का नमुचि ने क्या उत्तर दिया ?

उ. कुछ भी उत्तर न देकर मौन रहा।

प्र.77 सनत चक्रवर्ती ने नमुचि के लिये क्या आज्ञा दी ?

उ. इस दुष्ट को बंदी दशा में ही सारे नगर में घुमाओ और उद्घोषणा करो कि अधम ने तपस्वी महात्मा को पीड़ित किया है। इसे राजा ने मंत्री पद से गिराकर दण्डित किया है।

प्र.78 नमुचि को सारे नगर में घुमाकर कहाँ लाया गया ?

उ. नगर में घुमाकर मुनियों के पास लाया गया।

प्र.79 नमुचि को मुनियों के पास ले जाकर राजा ने मुनियों से क्या कहा ?

उ. आपका अपराधी आपके सामने उपस्थित है। आप इसे जैसा चाहे, दण्ड देवें।

प्र.80 मुनियों ने नमुचि को क्या दण्ड दिया ?

उ. राजन् ! आप इसे छोड़ दीजिये, अपनी करनी का फल यह अपने आप भोगेगा।

प्र.81 महाराज सनत ने नमुचि को क्या दण्ड दिया ?

उ. नगर से बाहर निकलवा दिया।

प्र.82 चक्रवर्ती सनतकुमार की पद महिषी कौन थी ?

उ. सुनन्दा महारानी।

प्र.83 सुनन्दा महारानी अपने परिवार सहित कहाँ आयी ?

उ. मुनि के दर्शनार्थ।

प्र.84 संतों की वंदना करते हुए क्या हुआ ?

उ. महारानी की केश राशि का स्पर्श तपस्वी संत के चरणों से हो गया।

प्र.85 केश राशि स्पर्श होने की महात्मा संभूति को क्या हुआ ?

उ. उनका मन विचलित हो गया और निदान करने का विचार करने लगा।

प्र.86 संभूति मुनि को निदान करने से किसने रोका ?

उ. चित्तमुनि ने ।

प्र.87 चित्तमुनि की शिक्षा का क्या असर हुआ ?

उ. कुछ असर नहीं हुआ।

प्र.88 संभूति मुनि महारानी सुनंदा को देख क्या निदान किया ?

उ. मेरे उग्र तप का फल हो तो आगामी भव में मैं भी ऐसी परम सुंदरी का समृद्धिवान पति बनूं।

प्र.89 चित्र मुनि आयुष्य पूर्ण कर कहाँ उत्पन्न हुये ?

उ. सौधर्म देवलोक में।

प्र.90 सौधर्म देवलोक का आयुष्य पूर्ण कर चित्र मुनि का जीव कहाँ उत्पन्न हुआ ?

पुरिमताल नगर में सेठ धुनसार के यहाँ।

प्र.91 चित्रमुनि के जीव का सेठ के यहाँ का क्या नाम रखा गया ?

उ. गुणसार।

प्र.92 संभूतिमुनि का जीव सौधर्म देवलोक से च्यवकर कहाँ जन्म लिया ?

उ. कापिल्य नगर में ब्रह्म राजा की रांनी चुलनी माता के गर्भ से।

प्र.93 संभूति मुनि के जीव का ब्रह्म राजा के यहाँ क्या नाम रखा गया ?

उ. ब्रह्मदत्त।

प्र.94 12वें चक्रवर्ती कौन थे ?

उ. ब्रह्मदत्त।

प्र.95 एक दिन ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती क्या देख रहे थे ?

उ. नाटक।

प्र.96 नाटक देखते हुए बह्मदत्त को कौन सा ज्ञान हुआ ?

उ. जातिस्मरण ज्ञान।

प्र.97 जातिस्मरण ज्ञान से ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती ने क्या देखा ?

उ. उन्होंने जाना कि ऐसा नाटक मैंने प्रथम देवलोक के पद्मगुल्म विमान में भी देखा था। साथ ही उन्होंने अपने पूर्व पॉच जन्मों को भी देखा।

प्र.98 जाति स्मरण ज्ञान से ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती मूर्च्छित क्यों हुये ?

उ. पाँच जन्मों के साथी और अपने भाई चित्त के स्मरण से। इस छठे भव में पृथक-पृथक स्थानों में जन्म की स्मृति से राजा शोकमग्न हो गया और मूर्च्छित होकर भूमि पर गिर पड़ा।

प्र.99 पूर्व जन्म के भाई को ढूंढने के लिये ब्रह्मदत्त ने किससे परामर्श किया ?

उ. अपने मंत्री वरधनु से।

प्र.100 चक्रवर्ती ने अपने भाई को ढूंढने के लिए कौन-सा अर्द्धश्लोक रचा ?

उ. "आस्व दासौ मृगौ हंसौ, मातंगावमरौ तथा।"

प्र.101 अर्द्धश्लोक की पूर्ति के लिये ब्रह्मदत्त राजा ने क्या घोषणा करवाई ?

उ. जो इस अर्द्धश्लोक की पूर्ति करेगा, उसे आधा राज्य दूंगा।

प्र.102 अर्द्धश्लोक को किसने पूर्ण किया ?

उ. गुणसार मुनि ने।

प्र.103 गुणसार मुनि कौन थे ?

उ. चित्त मुनि का जीव।

प्र.104 चित्त मुनि के जीव ने कहाँ जन्म लिया ?

उ. पुरिमताल नगर में धनसार सेठ के यहां जन्म लिया।

प्र.105 चित्तमुनि के जीव का धनसार सेठ ने क्या नाम रखा ?

उ. गुणसार।

प्र.106 गुणसार किससे प्रतिबोधित हुए ?

उ. जैनाचार्य शुभचंद्र से।

प्र.107 बोध पाकर गुणसार ने क्या किया ?

उ. मुनिधर्म की दीक्षा ग्रहण की।

प्र.108 गुणसार मुनि विहार करते हुए कहाँ पहुँचे ?

उ. कापिल्य नगर में।

प्र.109 कापिल्य नगर में गुणसार मुनि ने क्या सुना ?

उ. ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती द्वारा रचित अर्द्धश्लोक।

प्र.110 गुणसार मुनि ने यह श्लोक किसके मुँह से सुना ?

उ. रहट चलाते हुए किसान से।

प्र.111 अर्द्धश्लोक को सुनकर गुणसार मुनि ने क्या किया ?

उ. उस श्लोक को पूरा किया।

प्र.112 श्लोक को पूरा कर गुणसार मुनि ने वह श्लोक किसे दिया ?

उ. रहट चलाने वाले किसान को।

प्र.113 वह श्लोक लेकर किसान कहाँ पहुँचा ?

उ. श्लोक को पत्ते पर लिखकर राजा के पास राजसभा में।

प्र.114 गुणसार मुनि ने श्लोक पूर्ण किया, वह क्या था?

उ. "एषा नौ षष्टिका जातिः, अन्योऽन्याभ्यां वियुक्त्योः।"

प्र.115 राजा श्लोक सुनते ही मूर्च्छित क्यों हुआ ?

उ. स्नेहवश मूर्च्छित हो गये।

प्र.116 रहट चलाने वाले ने राजा को क्या बताया ?

उ. यह गाथा मैने पूरी नहीं की है बल्कि उद्यान में ठहरे हुए मुनि ने पूरी की है।

प्र.117 ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती गुणसार मुनि से क्या पूछा ?

उ. हे चित्र ! मैंने पूर्व जन्म में सत्य और आत्मशुद्धि करके शुभ अनुष्ठानों से प्रकट शुभदायक कर्म किये थे, उनका फल मैं चक्रवर्तीत्व के रूप में भोग रहा हूँ। क्या तुम भी उनका वैसा ही फल भोग रहे हो ?

प्र.118 गुणसार मुनि ने ब्रह्मदत्त की बात का क्या उत्तर दिया ?

उ. मनुष्यों के समस्त समाचरित सत्कर्म सफल होते हैं क्योंकि किये हुए कर्मो का फल भोगे बिना छुटकारा नहीं है। मेरी आत्मा भी उत्तम कार्य और कामों के द्वारा पुण्य फल से युक्त रही है। जिस प्रकार तुम अपने आपको महान ऋद्धि सम्पन्न समझते हो, वैसे ही राजन् मुझे भी समझो।

प्र.119 ब्रह्मदत्त ने गुणसार मुनि को किस बात के लिये आमंत्रित किया ?

उ. नाट्य, संगीत, वाद्यों के साथ, कामयोगों का उपयोग करने के लिए आमंत्रित किया।

प्र.120 गुणसार मुनि ने गीत, नाट्य, आभूषण, कामयोग को किस रूप में बताया ?

उ. गीत विलाप रूप, नाट्य विडम्बना से भरे हुए, आभूषण भार रूप और कामयोग दुःखावह अर्थात् दुखोत्पादक है।

प्र.121 गुणसार मुनि ब्रह्मदत्त को कामयोगों के विषय में क्या कहते हैं ?

उ. हे राजन् ! अज्ञानियों को रमणीय प्रतीत होने वाले किन्तु वस्तुत. दुःखजनक काम योगों में वह सुख नहीं है जो सुख शील गुणों में रत, कामयोगों से विरत तपोधन भिक्षुओं को प्राप्त है।

प्र.122 ब्रह्मदत्त गुणसार मुनि के समझाने पर क्या कहते हैं ?

उ. मैं सब जानता हुआ भी दलदल में फंसे हुए हाथी की तरह कामभोगों में फंसकर उनके अधीन होकर निष्क्रिय हो गया हूँ। त्याग मार्ग के शुभ परिणामों को देखता हुआ भी उस ओर एक भी कदम नहीं बढा सकता।

प्र.123 गुणसार मुनि ने ब्रह्मदत्त को क्या समझाया ?

उ. जीवन नाशवान् है। मृत्यु प्रतिक्षण आ रही है। अतः कम से कम आर्य कर्म करो। मार्गानुसारी बनो, सम्यग् दृष्टि तथा व्रती श्रमणोपासक बनो, जिससे कि तुम मुक्ति प्राप्त कर सको।

प्र.124 ब्रह्मदत्त की दुर्गति टालने के लिएं चित्र मुनि ने क्या कहा ?

उ. गुणसार मुनि कहते हैं कि माना कि तुम्हें पूर्व जन्म में आचरित तप संयम एवं निदान के फलस्वरुप चक्रवर्ती की ऋद्धि प्राप्त हुई एवं भोग सामग्री मिली है। परन्तु इनका उपयोग सत्कर्म में करो, आसक्ति रहित होकर इनका उपयोग करोगे तो तुम्हारी दुर्गति टल सकती है।

प्र.125 ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती कामभोगों का त्याग न कर सकने के कारण मरकर कहाँ उत्पन्न हुआ ?

उ. सप्तम नरक (अनुत्तर)।

प्र.126 गुणसार मुनि संयम का शुद्ध रुप में पालन कर कहाँ उत्पन्न हुए ?

उ. सिद्ध गति अर्थात् मोक्ष में।

प्र.127 चित्त-संभूति के साथ जो दो अन्य गोपालक पुत्र दीक्षित हुए थे वे कहाँ गये ?

उ. वे दोनों संयम पालन करके मरकर देवलोक में देव

हुए। वहाँ से च्यव कर क्षिति प्रतिष्ठित नगर में वे दोनों इभ्य कुल में जन्में।

प्र.128 क्षिति प्रतिष्ठित नगर में नवजन्में दोनों गोपालक पुत्रों ने कैसा जीवन-यापन किया ?

उ. नगर में चार श्रेष्ठी पुत्र उनके मित्र बने। एक बार उन सभी छहों मित्रों ने स्थविर संतों से धर्मश्रवण कर विरक्त हो प्रव्रजित हुए। चिरकाल तक संयम पालन कर समाधिमरण पूर्वक देह त्यागकर छहों मित्र सौधर्म देवलोक के पद्मगुल्म नामक विमान में चार पल्योपम स्थिति वाले देव हुए।

प्र.129 छहों मित्रों का देवलोक से किस रुप में च्युतिकरण हुआ ?

उ. दोनों भूतपूर्व गोपाल पुत्रों को छोड़कर शेष चारों जीव कुरुजनपद के ईषुकार नगर में एक जीव इषुकार राजा, दूसरा जीव उसी राजा की रानी कमलावती, तीसरा जीव भृगु नामक पुरोहित और चौथा जीव भृगु पत्नी यशा के रूप में जन्म लिया। कालान्तर में दोनों पूर्व गोपालक पुत्रों ने भृगु पुरोहित के पुत्र देवभद्र और यशोभद्र के रूप में जन्म लिया।

(चौदहवें अध्ययन में इन छहों जीवों का वर्णन किया जा रहा है।)

--0--

चौदहवाँ अध्ययन

इषुकारिय

प्र.1 चौदहवें अध्ययन का क्या नाम है ?

उ. इषुकारिय।

प्र.2 इस अध्ययन का नाम इषुकारिय क्यों रखा गया है ?

उ. इषुकार राजा का वर्णन होने से।

प्र.3 इषुकार राजा पूर्व भव में कितने मित्र थे ?

उ. छः मित्र।

प्र.4 इषुकार अध्ययन में कितनी आत्माओं का वर्णन किया गया है ?

उ. छः आत्माओं का।

प्र.5 इषुकार अध्ययन में वर्णित छः आत्मायें कौन-कौन हैं ?

उ. इषुकार राजा, कमलावती रानी, भृगु पुरोहित, पत्नी यशा, दो पुत्र- देवभद्र, यशोभद्र।

प्र.6 भृगु पुरोहित चिंता में क्यों रहते थे ?

उ. क्योंकि उनका कोई पुत्र नहीं था। पति-पत्नी दोनों वंश कैसे चलेगा ? इसी चिंता में रहते थे।

प्र.7 दो गोपाल पुत्रों जो देव भव में थे, उन्होंने अवधि ज्ञान से क्या जाना ?

. हम दोनों इषुकार नगर में भृगु पुरोहित के पुत्र होंगे।

प्र.8 देव भृगुपुरोहित के पास किस रुप में आय ?

उ. श्रमण (साधु) के रुप में।

प्र.9 श्रमणवेशी देव ने भृगु पुरोहित को क्या दिया ?

उ. धर्मोपदेश।

प्र.10 धर्मोपदेश सुनकर पुरोहित दम्पत्ति ने क्या किया ?

उ. श्रावंक व्रत ग्रहण किया।

प्र.11 पुरोहित दंपत्ति ने श्रमण वेशी देवों से क्या कहा ?

उ. मुनिवर ! हमें कोई पुत्र होगा या नहीं ?

प्र.12 श्रमण युगल ने दंपत्ति से क्या कहा ?

उ. तुम्हें दो पुत्र होंगे, किन्तु वे बचपन में ही दीक्षित होंगे। उनकी दीक्षा में तुम कोई विघ्न उपस्थित मत करना। वे मुनि बनकर शासन की धर्म प्रभावना करेंगे।

प्र.13 श्रमणवेशी देवों की बात सुनकर पुरोहित दम्पत्ति को क्या हुआ ?

उ. अति प्रसन्नता हुई लेकिन पुत्रों की दीक्षा के समाचार से भयभीत भी हुए।

प्र.14 पुत्रों की दीक्षा भय से पुरोहित दम्पत्ति कहाँ रहने लगे ?

उ. पुरोहित दम्पत्ति पुत्रों के दीक्षा के भय से नगर छोड़कर गाँव (भीलों की बस्ती) में रहने लगे।

प्र.15 पुरोहित पत्नी के गर्भ से कौन-सी आत्मा आयी ?

उ. देवलोक से चलकर दो देव (गोपाल पुत्र) पुरोहित पत्नी के गर्भ में आये।

प्र.16 भृगु पुरोहित के यहाँ जन्में पुत्रों का क्या नाम रखा गया ?

उ. देवभद्र, यशोभद्र।

प्र.17 पुरोहित दम्पत्ति अपने युगल पुत्रों को क्या शिक्षा देते थे ?

उ. देखो बच्चों ! साधुओं के पास कभी मत जाना। वे छोटे बच्चों को उठाकर ले जाते हैं और उन्हें मारकर उनका माँस खा जाते हैं। उनसे बात भी मत करना।

प्र.18 पुरोहित दम्पत्ति ने बच्चों को ऐसी शिक्षा क्यों दी ?

उ. बड़े होने पर ये दीक्षा ने ले ले, इसीलिये ऐसी शिक्षा दी।

प्र.19 पुरोहित दम्पत्ति बच्चों के मन में कैसी भावना भरते थे ?

उ. साधुओं के प्रति भय व घृणा की भावना भरते थे।

प्र.20 माता-पिता की बात सुनकर बच्चों पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उ. माता-पिता की इस शिक्षा के फलस्वरुप दोनों बालक साधुओं से डरते थे और उनके पास तक नहीं जाते थे।

प्र.21 बच्चों ने एक दिन गाँव में क्या देखा ?

उ. साधुओं को गाँव की आते देखा।

प्र.22 साधुओं को देखकर बच्चे क्या सोचने लगे ?

उ. वे एकदम घबरा गये कि अब क्या करें ? ये तो हमें मार देंगे।

प्र.23 साधुओं को देखकर दोनों बच्चों ने क्या किया ?

उ. पास ही के एक वृक्ष पर चढ गये और छिपकर चुपचाप देखने लगे कि साधु क्या करंते हैं ?

प्र.24 चलते हुए साधु कहाँ ठहरे ?

उ. चलते हुए साधु उसी वृक्ष के नीचे ठहरे।

प्र.25 वृक्ष पर बैठे बच्चों ने क्या देखा ?

उ. बच्चों ने देखा कि मुनियों ने इधर-उधर देखा फिर रजोहरण से चींटी आदि जीवों को धीरे-धीरे से एक ओर किया और बड़ी यतना से छाया में बैठकर झोली में से पात्र निकाले और आहार करने लगे।

प्र.26 वृक्ष पर बैठे बच्चों ने क्या देखा ?

उ. बच्चों ने देखा उनके पात्रों में माँस जैसी कोई वस्तु नहीं है, बल्कि सादा सात्विक भोजन है।

प्र.27 बालकों का भय कैसे कम हुआ ?

उ. मुनियों की दयाशील, व्यवहारशील तथा करूणाशील वार्तालाप सुनकर बच्चों का भय दूर हुआ।

प्र.28 मुनियों को देखकर बच्चे मन में क्या विचार करने लगे ?

उ. ऐसे साधु तो हमने पहले भी कहीं देखें हैं. ये नहीं हैं।

प्र.29 विचार करते हुए बच्चों को कौन-सा ज्ञान हुआ ?

उ. जातिस्मरण ज्ञान।

प्र.30 जातिस्मरण ज्ञान से बच्चों ने क्या जाना ?

उ. पूर्व जन्म को, जिसमें वे साधु थे।

प्र.31 दोनों बच्चों ने मुनियों के पास क्या किया ?

उ. श्रद्धापूर्वक वंदना की।

प्र.32 मुनियों ने क्या किया ?

उ. प्रतिबोध दिया।

प्र.33 मुनियों के उपदेश का बच्चों पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उ. संसार से विरक्त होकर मुनि बनने का निर्णय किया।

प्र.34 मुनियों के पास से हटकर वे सीधे कहाँ पहुँचे ?

उ. अपने माता-पिता के पास।

प्र.35 माता-पिता के पास आकर दोनों बच्चों ने क्या कहा ?

उ. दीक्षा की आज्ञा मांगने लगे।

प्र.36 दीक्षा की बात से पुरोहित ने अपने बच्चों को क्या कहा ?

उ. पुत्रों ! वेदों के ज्ञाता यह कहते हैं कि जिनके पुत्र नहीं होगा, उनकी उत्तम गति नहीं होती है। इसलिये हे पुत्रों ! पहले वेदों का अध्ययन करके, ब्राह्मणों को भोजन कराकर स्त्रियों के साथ भोग भोगो, फिर पुत्रों को घर भार सौंप कर मुनि बनना।

प्र.37 पुरोहित अपने पुत्रों को किस बात का निमंत्रण दे रहा था ?

उ. पुरोहित अपने पुत्रों को धन का और क्रम प्राप्त कामभोगों का निमंत्रण दे रहा था।

प्र.38 पिता की बात सुनकर दोनों पुत्रों ने क्या कहा ?

उ. वेदों का अध्ययन आत्म रक्षक (त्राण रुप) नहीं होता, ब्राह्मणों को भोजन कराने पर भी वे घोर अंधकार (तमस्तम) में ले जाते हैं। अंगजात पुत्र भी शरण रुप नहीं होते। अतः आपके इस कथन की कौन अनुमोदना करेगा ?

प्र.39 पुरोहित द्वारा धन और कामभोग का निमंत्रण देने पर पुत्रों ने क्या कहा ?

उ. ये काम भोग क्षण मात्र के लिये सुखदायी होते हैं। किन्तु बहुत काल तक दुःखदायी होते हैं। अतः ये कामभोग अल्प सुख और अति दुःख देते हैं। ये संसार से मुक्त होने में बाधक है और अनर्थों की खान है।

प्र.40 काम में लिप्त आत्मा कैसे मरण को प्राप्त होती है ?

उ. जो काम से निवृत्त नहीं है, वह अतृप्ति की ज्वाला से संतप्त होता हुआ दिन रात भटकता है। दूसरों, स्वजनों के लिये प्रमत्त (आसक्त चित्त) होकर विविध उपायों से धन की खोज में लगा हुआ पुरुष एक दिन जरा और मृत्यु को प्राप्त होता है।

प्र.29 विचार करते हुए बच्चों को कौन-सा ज्ञान हुआ ?

उ. जातिस्मरण ज्ञान।

प्र.30 जातिस्मरण ज्ञान से बच्चों ने क्या जाना ?

उ. पूर्व जन्म को, जिसमें वे साधु थे।

प्र.31 दोनों बच्चों ने मुनियों के पास क्या किया ?

उ. श्रद्धापूर्वक वंदना की।

प्र.32 मुनियों ने क्या किया ?

उ. प्रतिबोध दिया।

प्र.33 मुनियों के उपदेश का बच्चों पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उ. संसार से विरक्त होकर मुनि बनने का निर्णय किया।

प्र.34 मुनियों के पास से हटकर वे सीधे कहाँ पहुँचे ?

उ. अपने माता-पिता के पास।

प्र.35 माता-पिता के पास आकर दोनों बच्चों ने क्या कहा ?

उ. दीक्षा की आज्ञा मांगने लगे।

प्र.36 दीक्षा की बात से पुरोहित ने अपने बच्चों को क्या कहा ?

उ. पुत्रों ! वेदों के ज्ञाता यह कहते हैं कि जिनके पुत्र नहीं होगा, उनकी उत्तम गति नहीं होती है। इसलिये हे पुत्रों ! पहले वेदों का अध्ययन करके, ब्राह्मणों को भोजन कराकर स्त्रियों के साथ भोग भोगो, फिर पुत्रों को घर भार सौंप कर मुनि बनना।

प्र.37 पुरोहित अपने पुत्रों को किस बात का निमंत्रण दे रहा था ?

उ. पुरोहित अपने पुत्रों को धन का और क्रम प्राप्त कामभोगों का निमंत्रण दे रहा था।

प्र.38 पिता की बात सुनकर दोनों पुत्रों ने क्या कहा ?

उ. वेंदों का अध्ययन आत्म रक्षक (त्राण रुप) नहीं होता, ब्राह्मणों को भोजन कराने पर भी वे घोर अंधकार (तमस्तम) में ले जाते हैं। अंगजात पुत्र भी शरण रुप नहीं होते। अतः आपके इस कथन की कौन अनुमोदना करेगा ?

प्र.39 पुरोहित द्वारा धन और कामभोग का निमंत्रण देने पर पुत्रों ने क्या कहा ?

उ. ये काम भोग क्षण मात्र के लिये सुखदायी होते हैं। किन्तु बहुत काल तक दुःखदायी होते हैं। अतः ये कामभोग अल्प सुख और अति दुःख देते हैं। ये संसार से मुक्त होने में बाधक है और अनर्थों की खान है।

प्र.40 काम में लिप्त आत्मा कैसे मरण को प्राप्त होती है ?

उ. जो काम से निवृत्त नहीं है, वह अतृप्ति की ज्वाला से संतृप्त होता हुआ दिन रात भटकता है। दूसरों, स्वजनों के लिये प्रमत्त (आसक्त चित्त) होकर विविध उपायों से धन की खोज में लगा हुआ पुरुष एक दिन जरा और मृत्यु को प्राप्त होता है।

प्र.41 प्रमाद क्यों नहीं करना चाहिये ?

उ. यह मेरा है, यह मेरा नहीं है, यह मुझे करना है और यह मुझे नहीं करना है। इस प्रकार व्यर्थ की बातें करने वाले व्यक्ति को आयुष्य का अपहरण करने वाला काल एक दिन उठा ले जाता है। ऐसी स्थिति का चिंतन करते हुए समयमात्र का भी प्रमाद नहीं करना चाहिए।

प्र.42 पुत्रों की बात सुनकर पुरोहित दम्पत्ति ने क्या कहा ?

उ. जिनकी प्राप्ति के लिये लोग तप करते हैं। वह प्रचुर धन है, स्त्रियाँ है, माता-पिता आदि स्वजन भी हैं तथा इन्द्रियों के मनोज्ञ विषय भोग भी हैं। ये सभी तुम्हें स्वतः ही प्राप्त है, फिर परलोक के इन सुखों के लिये तुम मुनि क्यों बनना चाहते हो ?

प्र.43 पिता की बात का पुत्रों ने क्या उत्तर दिया ?

उ. दस प्रकार के श्रमण धर्म की धुरा को वहन करने वाले को धन से, स्वजन से या काम गुणों से क्या प्रयोजन है ? हम तो शुद्ध भिक्षा का आश्रय लेकर गुण समूह के धारक अप्रतिबद्ध विहारी श्रमण बनेंगे। इसमें हमें धन आदि की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

प्र.44 पुत्रों की बात सुनकर पुरोहित के जीव (आत्मा) के विषय में क्या कहा ?

उ. पुत्रों ! जैसे अरणि के काष्ठ में से अग्नि, दूध में से घी, तिलों में से तेल विद्यमान न होते हुए भी उत्पन्न होता है, उसी प्रकार शरीर में से जीव भी पहले असत् था, फिर पैदा हो जाता है और शरीर के नाश, के साथ ही नष्ट हो जाता है फिर जीव का कुछ भी अस्तित्व नहीं रहता।

प्र.45 आत्मा के अस्तित्व के विषय में पुत्रों ने क्या कहा ?

उ. पिताजी ! आत्मा अमूर्त है, वह इन्द्रियों के द्वारा जाना नहीं जा सकता और जो अमूर्त होता है, वह नित्य होता है। आत्मा के आंतरिक रागादि दोष ही निश्चित रुप से उसके बंध का कारण है और बंध को ही ज्ञानी पुरुषों ने संसार का हेतु कहा है।

प्र.46 यह लोक किसके द्वारा आहत है ?

उ. मृत्यु से आहत (पीड़ित) है।

प्र.47 यह लोक किससे घिरा हुआ है ?

उ. वृद्धावस्था से।

प्र.48 अमोघा किसे कहा गया है ?

उ. रात और दिन में समय चक्र की गति को।

प्र.49 किस आत्मा की रात्रियाँ निष्फल है ?

उ. अधर्म करने वालों की।

प्र.41 प्रमाद क्यों नहीं करना चाहिये ?

उ. यह मेरा है, यह मेरा नहीं है, यह मुझे करना है और यह मुझे नहीं करना है। इस प्रकार व्यर्थ की बातें करने वाले व्यक्ति को आयुष्य का अपहरण करने वाला काल एक दिन उठा ले जाता है। ऐसी स्थिति का चिंतन करते हुए समयमात्र का भी प्रमाद नहीं करना चाहिए।

प्र.42 पुत्रों की बात सुनकर पुरोहित दम्पत्ति ने क्या कहा ?

उ. जिनकी प्राप्ति के लिये लोग तप करते हैं। वह प्रचुर धन है, स्त्रियाँ है, माता-पिता आदि स्वजन भी हैं तथा इन्द्रियों के मनोज्ञ विषय भोग भी हैं। ये सभी तुम्हें स्वतः ही प्राप्त है, फिर परलोक के इन सुखों के लिये तुम मुनि क्यों बनना चाहते हो ?

प्र.43 पिता की बात का पुत्रों ने क्या उत्तर दिया ?

उ. दस प्रकार के श्रमण धर्म की धुरा को वहन करने वाले को धन से, स्वजन से या काम गुणों से क्या प्रयोजन है ? हम तो शुद्ध भिक्षा का आश्रय लेकर गुण समूह के धारक अप्रतिबद्ध विहारी श्रमण बनेंगे। इसमें हमें धन आदि की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

प्र.44 पुत्रों की बात सुनकर पुरोहित के जीव (आत्मा) के विषय में क्या कहा ?

उ. पुत्रों ! जैसे अरणि के काष्ठ में से अग्नि, दूध में से घी, तिलों में से तेल विद्यमान न होते हुए भी उत्पन्न होता है, उसी प्रकार शरीर में से जीव भी पहले असत् था, फिर पैदा हो जाता है और शरीर के नाश, के साथ ही नष्ट हो जाता है फिर जीव का कुछ भी अस्तित्व नहीं रहता।

प्र.45 आत्मा के अस्तित्व के विषय में पुत्रों ने क्या कहा?

उ. पिताजी ! आत्मा अमूर्त है, वह इन्द्रियों के द्वारा जाना नहीं जा सकता और जो अमूर्त होता है, वह नित्य होता है। आत्मा के आंतरिक रागादि दोष ही निश्चित रुप से उसके बंध का कारण है और बंध को ही ज्ञानी पुरुषों ने संसार का हेतु कहा है।

प्र.46 यह लोक किसके द्वारा आहत है ?

उ. मृत्यु से आहत (पीड़ित) है।

प्र.47 यह लोक किससे घिरा हुआ है ?

उ. वृद्धावस्था से।

प्र.48 अमोघा किसे कहा गया है ?

उ. रात और दिन में समय चक्र की गति को।

प्र.49 किस आत्मा की रात्रियाँ निष्फल है ?

उ. अधर्म करने वालों की।

प्र.50 किस आत्मा की रात्रियाँ सफल हुई है ?

उ. धर्म करने वालों की।

प्र.51 समझाने पर भी नहीं समझने पर पिता ने पुत्रों को क्या कहा ?

उ. पुत्रों ! पहले तुम और हम सब एक साथ रहकर सम्यक्त्व और व्रतों से युक्त होकर पश्चातं ढलती उम्र में दीक्षित होकर घर-घर से भिक्षा ग्रहण करते विचरेंगे।

प्र.52 पिता की इस बात का पुत्रों ने क्या उत्तर दिया ?

उ. पिताजी ! जिसकी मृत्यु से मैत्री हो, या जो मृत्यु आने पर भाग कर बच सकता हो, या जो यह जानता है कि मैं कभी मरूँगा नहीं, वह सोच सकता है कि आज नहीं कल धर्माचरण कर लूंगा।

प्र.53 मुनि धर्म अंगीकार करने के लिये पुत्रों ने पिता के क्या कहा ?

उ. हम तो आज ही राग को दूर करके श्रद्धा से सक्षम होकर मुनि धर्म को अंगीकार करेंगे। जिसकी शरण पाकर इस संसार में फिर से जन्म न लेना पड़े। कोई भी भोग हमारे लिये अनागत-अप्रास-अयुक्त नहीं है। क्योंकि वे अनंत बार भोगे जा चुके हैं।

प्र.54 पुत्रों की बात सुनकर भृगु पुरोहित ने क्या किया ?

र. वह भी वैराग्य रंग से रंजित होकर अणगार धर्म प्रास करने की इच्छा करने लगा।

प्र.55 भृगु पुरोहित ने अपनी पत्नी से क्या कहा ?

उ. हे वाशिष्ठी ! पुत्रों के बिना मैं इस घर में नहीं रह सकता। अब मेरा भिक्षाचर्या का काल आ गया है।

प्र.56 भृगु पुरोहित क्यों दुःखी हो रहा था ?

उ. जैसे वृक्ष शाखाओं से ही शोभा पाता है। शाखाओं के कट जाने पर वही वृक्ष ठूँठ कहलाने लगता है। इस लोक में जैसे पंखों से रहित पक्षी तथा रणक्षेत्र में समूहों के बिना राजा एवं टूटे जलपोत के कारण स्वर्णादि द्रव्य नष्ट हो जाने पर वणिक असहाय होकर दुःख पाता है वैसे ही पुरोहित भी पुत्रों के बिना असहाय होकर दुखी हो रहा था।

प्र.57 यशा अपने पति की बात सुनकर अपने पति से क्या कहती है ?

उ. तुम्हारे घर में सुसंस्कृत और सम्यक् रुप से संग्रहित प्रधान श्रृंगारादि में रसमय जो कामभोग हमें प्राप्त है। इन कामभोगों को अभी हम खूब भोग लें. उसके पश्चात् हम मुनिधर्म के मार्ग पर चलेगे।

प्र.58 अपने पत्नी की बात सुनकर भृगु पुरोहित ने क्या कहा ?

उ. प्रिये ! हम विषय रसों को भोग चुके हैं। अभिष्ट क्रिया करने में असमर्थ वय भी हमें छोड़ता जा रहा है। मै असंयमी या स्वर्गीय जीवन पाने के लिये भोगों को

प्र.50 किस आत्मा की रात्रियाँ सफल हुई है ?

उ. धर्म करने वालों की।

प्र.51 समझाने पर भी नहीं समझने पर पिता ने पुत्रों को क्या कहा ?

उ. पुत्रों ! पहले तुम और हम सब एक साथ रहकर सम्यक्त्व और व्रतों से युक्त होकर पश्चातं ढलती उम्र में दीक्षित होकर घर-घर से भिक्षा ग्रहण करते विचरेंगे।

प्र.52 पिता की इस बात का पुत्रों ने क्या उत्तर दिया ?

उ. पिताजी ! जिसकी मृत्यु से मैत्री हो, या जो मृत्यु आने पर भाग कर बच सकता हो, या जो यह जानता है कि मैं कभी मरूँगा नहीं, वह सोच सकता है कि आज नहीं कल धर्माचरण कर लूंगा।

प्र.53 मुनि धर्म अंगीकार करने के लिये पुत्रों ने पिता के क्या कहा ?

उ. हम तो आज ही राग को दूर करके श्रद्धा से सक्षम होकर मुनि धर्म को अंगीकार करेंगे। जिसकी शरण पाकर इस संसार में फिर से जन्म न लेना पड़े। कोई भी भोग हमारे लिये अनागत-अप्राप्त-अयुक्त नहीं है। क्योंकि वे अनंत बार भोगे जा चुके हैं।

प्र.54 पुत्रों की बात सुनकर भृगु पुरोहित ने क्या किया ?

उ. वह भी वैराग्य रंग से रंजित होकर अणगार धर्म प्राप्त करने की इच्छा करने लगा।

प्र.55 भृगु पुरोहित ने अपनी पत्नी से क्या कहा ?

उ. हे वाशिष्ठी ! पुत्रों के बिना मैं इस घर में नहीं रह सकता। अब मेरा भिक्षाचर्या का काल आ गया है।

प्र.56 भृगु पुरोहित क्यों दुःखी हो रहा था ?

उ. जैसे वृक्ष शाखाओं से ही शोभा पाता है। शाखाओं के कट जाने पर वही वृक्ष ठूँठ कहलाने लगता है। इस लोक में जैसे पंखों से रहित पक्षी तथा रणक्षेत्र में समूहों के बिना राजा एवं टूटे जलपोत के कारण स्वर्णादि द्रव्य नष्ट हो जाने पर वणिक असहाय होकर दुःख पाता है वैसे ही पुरोहितं भी पुत्रों के बिना असहाय होकर दुखी हो रहा था।

प्र.57 यशा अपने पति की बात सुनकर अपने पति से क्या कहती है ?

उ. तुम्हारे घर में सुसंस्कृत और सम्यक् रुप से संग्रहित प्रधान श्रृंगारादि में रसमय जो कामभोग हमें प्राप्त है। इन कामभोगों को अभी हम खूब भोग लें, उसके पश्चात् हम मुनिधर्म के मार्ग पर चलेंगे।

प्र.58 अपने पत्नी की बात सुनकर भृगु पुरोहित ने क्या कहा ?

उ. प्रिये ! हम विषय रसों को भोग चुके हैं। अभिष्ट क्रिया करने में असमर्थ वय भी हमें छोड़ता जा रहा है। मैं असंयमी या स्वर्गीय जीवन पाने के लिये भोगों को

नहीं छोड़ रहा हूँ। लाभ-अलाभ, सुख और दुख को समभाव में देखता हुआ मुनिधर्म का आचरण करूँगा अर्थात् मुक्ति के लिये ही मुझे दीक्षा लेनी है, कामभोगों के लिए नहीं।

प्र.59 अपने पति को समझाने के लिये यशा ने किसका उदाहरण दिया ?

उ. उल्टे प्रवाह में बहने वाले बूढ़े हंस का।

प्र.60 इसके उत्तर में भृगु पुरोहित ने किसके उदाहरण रखे ?

उ. जैसे सर्प शरीर से उत्पन्न हुई केंचुली को छोड़कर मुक्त मन से आगे चल पड़ता है तथा रोहित मच्छ कमजोर जाल को तीक्ष्ण पूँछ आदि से काटकर बाहर निकल जाता है। वैसे ही जाल के समान बंधन रुप कामयोगों को छोड़कर धारण किये हुए गुरुत्तर भार को वहन करने के लिए उदार, तपस्वी और धीर साधक भिक्षाचर्या रुप महाव्रत को अंगीकार करते हैं। अतः मैं भी उसी मार्ग का अनुसरण करूँगा।

प्र.61 यशा को वैराग्य का क्या निमित्त मिला ?

उ. जैसे क्रौंच पक्षी एवं हंस बहेलियों द्वारा फैलाये हुये जालों को तोड़कर आकाश में स्वतंत्र उड़ जाते हैं। उसी प्रकार मेरे पति एवं पुत्र प्राप्त कामभोगों एवं सुख-समृद्धि को छोड़कर जा रहे हैं। तब मैं अकेली रहकर

क्या करूँगी। मैं भी क्यों न उनका अनुगमन करूँ और वह भी प्रतिबोधित हो गयी।

प्र.62 यशा ने क्रौंच पक्षी की उपमा किस अपेक्षा से दी है ?

उ. क्रौंच पक्षी की उपमा स्त्री-पुत्रादि के बंधन से रहित अपने पुत्रों की अपेक्षा से दी है।

प्र.63 हंस की उपमा किस अपेक्षा से यशा ने दी है ?

उ. हंस की उपमा इसके विपरीत स्त्री-पुत्रादि के बंधन से युक्त अपने पति के लिये दी है।

प्र.64 भृगु पुरोहित के परिवार के प्रव्रजित होने का समाचार किसे मिला ?

उ. इषुकार राजा को।

प्र.65 इषुकार राजा ने दीक्षित पुरोहित परिवार का सुनकर क्या निर्णय लिया ?

उ. भृगु पुरोहित द्वारा त्यागे हुए धन को राजा ने अपने भंडार में लाने का निश्चय किया।

प्र.66 राजा के निर्णय को सुनकर रानी कमलावती ने राजा से क्या कहा ?

उ. हे राजन ! जो वमन किये हुए आहार का उपयोग करता है वह पुरुष प्रशंसनीय नहीं होता। तुम ब्राह्मण के द्वारा त्यागे हुए धन को लेने की इच्छा रखते हो। लेकिन सारे जगत का धन भी तुम्हारा हो जाये तो भी

वह तुम्हारे लिये अपर्याप्त ही होगा। पर यह धन तुम्हारी रक्षा नहीं करेगा।

प्र.67 रानी कमलावती ने राजा इषुकार को एकमात्र रक्षक किसे बताया ?

उ. धर्म को ही एकमात्र रक्षक बताया।

प्र.68 कमलावती ने अपने लिये पक्षिणी का उदाहरण किस प्रकार दिया ?

उ. जैसे पक्षिणी पिंजरे में सुख का अनुभव नहीं करती है उसी प्रकार मैं भी यहाँ आनंद का अनुभव नहीं करती। अतः ये स्नेह परंपरा का बंधन काटकर अकिंचन सरल, निराश्रित तथा परिग्रह और आरम्भी दोषों से निवृत्त होकर मुनिधर्म का आचरण करुंगी।

प्र.69 "हम जगत को नहीं समझ रहे हैं।" इस विषय को समझाने कमलावती ने इषुकार को किसका उदाहरण दिया ?

उ. जैसे वन में लगे हुए दावानल को जलते हुए जन्तुओं को देखकर रागद्वेषवश अन्य जीव प्रमुदित होते हैं, इसी प्रकार कामभोगों में मूर्च्छित हम अज्ञानी लोग भी रागद्वेष की अग्नि में जलते हुए जगत को नहीं समझ पा रहे हैं।

प्र.70 कमलावती रानी के समझाने पर राजा ने क्या किया ?

उ. वह भी प्रतिबोधित्व को प्राप्त हो गया।

प्र.71 इस अध्ययन में आयी छहों आत्मा मरण प्राप्त कहाँ पहुँची ?

उ. शाश्वत सुख मोक्ष में।

--0--

पंद्रहवाँ अध्ययन

सभिक्षुकम्

प्र.1 उत्तराध्ययन सूत्र का पंद्रहवां अध्ययन कौन-सा है ?

उ. सभिक्षुकम्।

प्र.2 उत्तराध्ययन सूत्र के पंद्रहवें अध्ययन में किसका वर्णन है ?

उ. भिक्षु के लक्षणों का।

प्र.3 सभिक्षु नाम का एक और अध्ययन किसमें है ?

उ. दशवैकालिक सूत्र में (दसवाँ अध्ययन)।

प्र.4 दशवैकालिक और उत्तराध्ययन के सभिक्षु अध्ययनों में क्या अंतर है ?

उ. दशवैकालिक में 21 गाथा है और उत्तराध्ययन गाथा है। दोनों के वर्णन में भी

प्र.5 मोक्ष प्राप्ति में बाधक किन तत्वों से मुनि को दूर रहने के लिये कहा गया है ?

उ. (1) रागद्वेष (2) माया कपट पूर्वक आचरण दम्भ (3) निदान (4) कामभोगों की अभिलाषा (5) अपना परिचय देकर भिक्षादि ग्रहण (6) प्रतिबद्ध विहार (7) रात्रि भौजन एवं रात्रि विहार (8) सदोष आहार (9) आश्रव रति (10) सिद्धान्त का अज्ञान (11) आत्मरक्षा के प्रति लापरवाही (12) अप्राज्ञता (13) परिषहों से पराजित होना (14) आत्मौदय भावना विहीनता (15) सजीव-निर्जीव पदार्थो के प्रति मूर्च्छा।

प्र.6 सच्चा भिक्षु किसे बताया गया है ?

उ. जो भिक्षु आक्रोश, वध, शील, उष्ण, दंशमशक, निषद्या, शैय्या, सत्कार-पुरस्कार आदि अनुकूल प्रतिकूल परिषहों में हर्ष शोक से दूर रहकर उन्हें समभाव से सहन करता है, जो संयत, सुव्रत, सुतपस्वी एवं ज्ञान दर्शन युक्त आत्मगवेषक है तथा उन स्त्री-पुरुषों से दूर रहता है जिनके संग से असंयम में पड़ जायें और मोह बंधन में बंध जायें। कुतुहल वृत्ति तथा व्यर्थ के संपर्क एवं भ्रमण से दूर रहता है वही सच्चा भिक्षु है।

प्र.7 भिक्षु को कौन से मंत्रादि नहीं करना का मना है ?

उ. छिन्न निमित्त आदि विद्याओं, मंत्र, जड़ी-बूटी, वमन, विरेचन औषधि एवं चिकित्सादि के प्रयोगों से जीविका नहीं करने का कहा है। साथ ही रोग आदि होने पर स्वजनों का स्मरण नहीं करने को कहा है। आगम युग में आजीवक आदि श्रमण इन विद्याओं तथा मंत्र चिकित्सा आदि का प्रयोग करते थे। भगवान ने इन सबको दोषयुक्त जानकर इनके प्रयोग का निषेध किया है और कहा है **"परिन्नाय परिव्वए स भिक्खू"** - जो इन मंत्र आदि क्रियाओं को जानकर भी त्याग करता है, वहीं भिक्षु है।

प्र.8 सच्चा भिक्षु किसकी चापलुसी नहीं करता ?

उ. सच्चा भिक्षु अपनी आवश्यकता पूर्ति के लिये धनिकों सत्ताधारियों या उच्च पदाधिकारियों की प्रशंसा या चापलुसी नहीं करता, न पूर्व परिचितों की प्रशंसा करता है और न निर्धनों की निंदा एवं छोटे व्यक्तियों का तिरस्कार करता है।

प्र.9 सच्चा भिक्षु कहाँ भय नहीं खाता ?

उ. सच्चा भिक्षु किसी भी समय, स्थान या परिस्थिति में भय नहीं खाता चाहे कितने ही भयंकर शब्द सु
वह भयमुक्त रहता है।

प्र.10 आहार एवं भिक्षा के विषय में सच्चा भिक्षु कौन है ?

उ. आहार एवं भिक्षा के विषय में सच्चा भिक्षु बहुत सावधान रहता है। वह न देने वाले या मांगने पर इंकार करने वाले के प्रति मन में द्वेष भाव नहीं लाता। और न आहार पाने के लोभ में गृहस्थ का किसी प्रंकार का उपकार करता है। वह नीरस एवं तुच्छ भिक्षा मिलने पर दाता की निंदा नहीं करता और न ही सामान्य घरों को टालकर उच्च घरों से भिक्षा लाता है।

प्र.11 निर्युक्तिकार ने सच्चे भिक्षु के कौन से लक्षण बताये ?

उ. भद्र भिक्षु रागद्वेष विजयी, मानसिक वाचिक कायिक दण्ड प्रयोग से सावधान, सावद्य प्रवृत्ति का मन, वचन, काया से तथा कृत-कारित-अनुमोदित रुप से त्यागी होता है। वह ऋद्धि रस और साता को पाकर भी उसके गौरव से दूर कहता है, माया निदान और मिथ्यात्व रुप शल्य से रहित होता है। विकथाएं नहीं करता, आहारादि संज्ञाओं, कषायों और विविध प्रमादों से दूर रहता है। मोह एवं राग द्वेष बढ़ाने वाली प्रवृत्तियों से दूर रहकर कर्म बंधन को तोड़ने के लिए सदा प्रयत्नशील रहता है। ऐसा सुव्रत ऋषि ही समस्त ययों का भेदन कर अजर-अमर पद प्राप्त करते हैं।

प्र.12 प्रस्तुत अध्ययन में कितनी विद्याओं का उल्लेख मिलता है ?

उ. दस विद्याओं का (1) छिन्न निमित्त (2) स्वर निमित्त (3) भौम निमित्त (4) अंतरिक्ष निमित्त (5) स्वप्न निमित्त (6) लक्षण निमित्त (7) दण्ड विद्या (8) वास्तु विद्या (9) अंग विकार निमित्त (10) स्वर विचय।

प्र.13 अष्टांग निमित्त कौन-कौन से हैं ?

उ. अंग, स्वर, लक्षण, व्यंजन, स्वप्न, छिन्न, भौम और अंतरिक्ष।

प्र.14 छिन्न विद्या किसे कहते हैं ?

उ. वस्त्र, दाँत, लकड़ी आदि में किसी भी प्रकार के छेद या दरार के विषय में शुभाशुभ निरूपण करने वाली विद्या।

प्र.15 स्वर विद्या किसे कहते हैं ?

उ. षड्ज, वृषभ, गांधार, मध्यम आदि सात स्वरों में से किसी स्वर का स्वरूप एवं फलादि कहना-बताना या गाना।

प्र.16 भौम विद्या क्या है ?

उ. भूमि कम्पादि का लक्षण एवं शुभाशुभ फल बताना अथवा भूमिगत धन आदि द्रव्यों को जान।

प्र.17 अंतरिक्ष विद्या क्या है ?

उ. आकाश मे गन्धर्व नगर, दिग्दाह, धू

प्र.10 आहार एवं भिक्षा के विषय में सच्चा भिक्षु कौन है?

उ. आहार एवं भिक्षा के विषय में सच्चा भिक्षु बहुत सावधान रहता है। वह न देने वाले या मांगने पर इंकार करने वाले के प्रति मन में द्वेष भाव नहीं लाता। और न आहार पाने के लोभ में गृहस्थ का किसी प्रंकार का उपकार करता है। वह नीरस एवं तुच्छ भिक्षा मिलने पर दाता की निंदा नहीं करता और न ही सामान्य घरों को टालकर उच्च घरों से भिक्षा लाता है।

प्र.11 निर्युक्तिकार ने सच्चे भिक्षु के कौन से लक्षण बताये?

उ. भद्र भिक्षु रागद्वेष विजयी, मानसिक वाचिक कायिक दण्ड प्रयोग से सावधान, सावद्य प्रवृत्ति का मन, वचन, काया से तथा कृत-कारित-अनुमोदित रुप से त्यागी होता है। वह ऋद्धि रस और साता को पाकर भी उसके गौरव से दूर कहता है, माया निदान और मिथ्यात्व रुप शल्य से रहित होता है। विकथाएं नहीं करता, आहारादि संज्ञाओं, कषायों और विविध प्रमादों से दूर रहता है। मोह एवं राग द्वेष बढ़ाने वाली प्रवृत्तियों से दूर रहकर कर्म बंधन को तोड़ने के लिए सदा प्रयत्नशील रहता है। ऐसा सुव्रत ऋषि ही समस्त ग्रंथियों का भेदन कर अजर-अमर पद प्राप्त करते हैं।

प्र.12 प्रस्तुत अध्ययन में कितनी विद्याओं का उल्लेख मिलता है ?

उ. दस विद्याओं का (1) छिन्न निमित्त (2) स्वर निमित्त (3) भौम निमित्त (4) अंतरिक्ष निमित्त (5) स्वप्न निमित्त (6) लक्षण निमित्त (7) दण्ड विद्या (8) वास्तु विद्या (9) अंग विकार निमित्त (10) स्वर विचय।

प्र.13 अष्टांग निमित्त कौन-कौन से हैं ?

उ. अंग, स्वर, लक्षण, व्यंजन, स्वप्न, छिन्न, भौम और अंतरिक्ष।

प्र.14 छिन्न विद्या किसे कहते हैं ?

उ. वस्त्र, दाँत, लकड़ी आदि में किसी भी प्रकार के छेद या दरार के विषय में शुभाशुभ निरुपण करने वाली विद्या।

प्र.15 स्वर विद्या किसे कहते हैं ?

उ. षड्ज, वृषभ, गांधार, मध्यम आदि सात स्वरों में से किसी स्वर का स्वरुप एवं फलादि कहना-बताना या गाना।

प्र.16 भौम विद्या क्या है ?

उ. भूमि कम्पादि का लक्षण एवं शुभाशुभ फल बताना अथवा भूमिगत धन आदि द्रव्यों को जानना।

प्र.17 अंतरिक्ष विद्या क्या है ?

उ. आकाश में गन्धर्व नगर, दिग्दाह, धूलि वृष्टि आदि के

द्वारा अथवा ग्रह-नक्षत्रों के या उनके युद्धों तथा उदय अस्त के द्वारा शुभाशुभ फल जानना।

प्र.18 लक्षण विद्या किसे कहते हैं ?

उ. स्त्री-पुरुष के शरीर के लक्षणों को देखकर शुभाशुभ फल बताना।

प्र.19 दण्ड विद्या किसे कहते हैं ?

उ. बॉस के दण्ड या लाठी आदि को देखकर उनका स्वरुप व फल बताना।

प्र.20 वास्तु विद्या किसे कहते है ?

उ. प्रासाद आदि आवासों के लक्षण स्वरुप एवं तद्विषयक शुभाशुभ का कथन करना।

प्र.21 अंग विकार विद्या क्या है ?

उ. नेत्र,मस्तक, भुजा आदि फड़कने पर उनका शुभाशुभ फल कहना।

प्र.22 स्वर विषय विद्या क्या है ?

उ. कोचरी (दुर्गा), श्रृंगाली, पशु-पक्षी आदि का स्वर जानकर शुभाशुभ फल कहना।

प्र.23 दस विद्याओं में से कितनी विद्याओं का प्रयोग मुनि कर सकते हैं ?

उ. मुनि दसों ही विद्याओं का प्रयोग स्वयं के ज्ञान विकास के लिये कर सकते हैं, लेकिन इनमें से एक का भी प्रयोग लोगों को प्रभावित करने, आजीविका चलाने

आदि के लिये नहीं कर सकते हैं और जो ऐसा करते हैं, वह तीर्थंकर की आज्ञा में चलने वाले भिक्षु नहीं हैं। "जो विज्जाहिं न जीवइ स भिक्खू- जो इन विद्याओं द्वारा जीविका नहीं करता है वह भिक्षु है।

--0--

सोलहवाँ अध्ययन

ब्रह्मचर्य समाधिस्थल

प्र.1 उत्तराध्ययन का सोलहवाँ अध्ययन कौन सा है ?

उ. ब्रह्मचर्य समाधि स्थान।

प्र.2 सोलहवें अध्ययन में किसका वर्णन है ?

उ. ब्रह्मचर्य सुरक्षा के लिए समाधि स्थान बताये हैं।

प्र.3 साधना का मेरुदण्ड क्या है ?

उ. ब्रह्मचर्य।

प्र.4 साधु जीवन की समस्त साधनाएं किस पर आधारित है ?

उ. ब्रह्मचर्य पर।

प्र.5 ब्रह्मचर्य की किससे तुलना की गयी है ?

उ. सूर्य की।

प्र.6 ब्रह्मचर्य का क्या अर्थ है ?

उ. मैथुन सेवन का त्याग या वसति निग्रह।

प्र.7 भारतीय धर्मों की परम्परा में ब्रह्मचर्य का क्या अर्थ है ?

उ. ब्रह्म में विचरण करना।

प्र.8 ब्रह्म का क्या अर्थ है ?

उ. ब्रह्म का अर्थ परमात्मा, आत्मा, आत्मविद्या या वृहद ध्येय है।

प्र.9 ब्रह्म में विचरण किसके बिना नहीं हो सकता ?

उ. ब्रह्म में विचरण सर्वेन्द्रिय संयम एवं मन संयम के बिना नहीं हो सकता।

प्र.10 ब्रह्मचर्य समाधि स्थानों की सुदृढ़ता के कितने सूत्र बताये गये हैं ?

उ. नौ - (1) समाधि स्थानों का भली-भांति श्रवण (2) अर्थ पर विचार (3) संयम का (4) संवर का (5) समाधि का अधिकाधिक अभ्यास (6) तीन गुप्तियों से मन, वाणी और शरीर का गोपन। (7) इंद्रियों की विषयों से रक्षा (8) नवविध गुप्तियों से ब्रह्मचर्य का सुरक्षा (9) सदैव अप्रमत्त अप्रतिबद्ध विहार।

प्र.11 स्थानांग और समवायांग में ब्रह्मचर्य के समाधि स्थान की जगह क्या कहा है ?

उ. नौ गुप्ति कहा है।

प्र.12 मूलाचार में शील विराधना के कितने कारण बताये हैं ?

दस (1) स्त्री संसर्ग (2) प्रणीत रस भोजन (3) गंध

माल्य स्पर्श (4) शयनासन गृद्धि (5) भूषण मण्डन (6) गीतवाद्यादि की अभिलाषा (7) अर्थ सम्प्रयोजन (8) कुशील संसर्ग (9) राजसेवा (यशोलिप्सा आदि विषयों की पूर्ति हेतु राजा-वर्तमान अपेक्षा से नेता-मंत्री आदि की प्रशंसा करना) (10) रात्रि संचरण।

प्र.13 ब्रह्मचर्य सुरक्षा के लिये कितने समाधि स्थान बताये गये हैं ?

उ. दस।

प्र.14 पहला ब्रह्मचर्य समाधि स्थान कौन सा है ?

उ. स्त्री-पुरुष-नपुंसक-पशु से संसक्त शयन और आसन का सेवन नहीं करना।

प्र.15 दूसरा ब्रह्मचर्य समाधि स्थान कौन सा है ?

उ. स्त्री संबंधी कथा न करना।

प्र.16 तीसरा समाधि स्थान कौन सा है ?

उ. स्त्रियों के साथ एक साथ न बैठना। (स्त्री जाति के लिये ये पुरुष)

प्र.17 चौथा समाधि स्थान कौन सा है ?

उ. स्त्रियों की मनोहर एवं मनोरम इंद्रियों को दृष्टि गड़ा कर न देखे, न चिंतन करे।

प्र.18 पाँचवा समाधि स्थान कौन सा है ?

उ. दीवार आदि की ओट में स्त्रियों के काम विकारजनक शब्द न सुने।

प्र.19 छठा समाधि स्थान कौन सा है ?

उ. पूर्वावस्था में की हुई रति एवं क्रीड़ा का स्मरण न करें।

प्र.20 सातवाँ समाधि स्थान कौन सा है ?

उ. प्रणीत (सरस, स्वादिष्ट, पौष्टिक) आहार न करना।

प्र.21 आठवाँ समाधि स्थान कौन सा है ?

उ. मात्रा से अधिक आहार पानी न करें।

प्र.22 नवमा समाधि स्थान कौन सा है ?

उ. शरीर की विभूषा न करें।

प्र.23 दसवाँ समाधि स्थान कौन सा है ?

उ. पंचेन्द्रिय विषयों में आसक्त न हों।

प्र.24 आत्मान्वेषक ब्रह्मचर्य निष्ठ के लिये तालपुट विष के समान क्या है ?

उ. आत्मान्वेषक के लिये दस बातें तालपुट विष के समान है - (1) स्त्रियों से घिरे हुए निवास स्थान (2) मनोरम स्त्री कथा (3) स्त्रियों का परिचय (4) उनकी इन्द्रियों का राग भाव से अवलोकन (5) उनके क्रंदन, रुदन, गीत तथा हास्य आदि को सुनना (6) पहले भोगे हुए कामभोगों को याद करना (7) प्रणीत पान भोजन (8) अतिमात्रा में पान भोजन (9) स्त्रियों के लिए इष्ट शरीर की विभूषा करना (10) दुर्जय कामभोग। ये दस स्थितियाँ आत्मान्वेषक मनुष्यों के लिए तालपुट विष के समान है।

प्र.25 ब्रह्मचर्य साधक का क्या कर्तव्य है ?

. प्रणिधानवान यानि स्थिर चित्त वाला ब्रह्मचारी साधक

दुर्जय कामभोगों का सदैव त्याग करे। सभी शंकाशील स्थानों से दूर रहे।

प्र.26 धर्मसारथी किसे कहा गया है ?

उ. भिक्षु को।

प्र.27 भिक्षु को धर्मसारथी क्यों कहा गया है ?

उ. क्योंकि वह स्वयं धर्म में स्थिर होकर दूसरों को भी धर्म रथ में स्थित करता है।

प्र.28 धर्मसारथी कहाँ विचरण करें ?

उ. धर्मसारथी ब्रह्मचर्य के रथ में आरुढ होकर धर्म के आराम यानि धर्म के बाग में विचरण करे।

प्र.29 ब्रह्मचर्य की महिमा बताइये ?

उ. दुष्कर ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने वाला देव, दानव, गधर्व, यक्ष, राक्षस, किन्नर सभी द्वारा पूजित होता है। यह ब्रह्मचर्य रुप धर्म, ध्रुव (प्रमाण प्रतिष्ठित), नित्य, शाश्वत और जिनोपदिष्ट है। इस धर्म के द्वारा अनेक सिद्ध हुए हैं, सिद्ध हो रहे हैं और भविष्य में भी होंगे।

प्र.30 तालपुट विष किसे कहते हैं ?

उ. जिसे होंठ पर रखते ही ताली बजाने जितने समय में मृत्यु हो जाती है उसे तालपुट विष कहते हैं। आधुनिक प्रचलित भाषा में इसे साइनाइड कहते हैं।

प्र.31 देवता भी किसे नमस्कार करते हैं ?

उ. जो दुष्कर ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते

सत्रहवाँ अध्ययन

पाप श्रमणीय

प्र.1 उत्तराध्ययन सूत्र का सत्रहवाँ अध्ययन कौन सा है ?

उ. पाप श्रमणीय।

प्र.2 इस अध्ययन में किसका वर्णन है ?

उ. पाप श्रमण के स्वरूप का निरुपण किया है।

प्र.3 श्रमण कितने प्रकार के बताये गये हैं ?

उ. दो (1) सुविहित श्रमण (2) पाप श्रमण।

प्र.4 सुविहित श्रमण किसे कहते हैं ?

उ. जो दीक्षा सिंह की तरह लेता है, और सिंह की तरह पालन करता है। अहर्निश ज्ञान, दर्शन, चारित्र तप की साधना में पुरुषार्थ करता है। प्रमाद को जरा भी स्थान नहीं देता। उसका आत्म मान जागृत रहता है। वह निरतिचार संयम का व महाव्रतों का पालन करता है। समता उसके जीवन के कण-कण में रमी रहती है। क्षमादि दस धर्मों के पालन में वह सदा जागरुक रहता है।

प्र.5 पाप श्रमण किसे कहा गया है ?

उ. श्रमण बन जाने के बाद यदि व्यक्ति यह सोचता है कि अब मुझे और कुछ करने की आवश्यकता नहीं है, न तो मुझे ज्ञान वृद्धि के लिये शास्त्रीय अध्ययन की

जरुरत है, न जप-तप-ध्यानादि, अहिंसा व्रत पालन या दशविध श्रमण धर्म के आचरण की अपेक्षा है तो यह बहुत बड़ी भ्रांति है। इसी भ्रांति का शिकार होकर साधक यह सोचने लगता है कि मैं महान गुरु का शिष्य हूँ। मुझे सम्मानपूर्वक शिक्षा मिल जाती है, धर्मस्थान, वस्त्र, पात्र या अन्य सुख-सुविधाएँ भी प्राप्त है। अब तप या अन्य साधना करके आत्मपीड़न से क्या प्रयोजन है। इस प्रकार विवेक भ्रष्ट होकर सोचने वाले श्रमण को पाप श्रमण कहा गया है।

प्र.6 कितने प्रकार के पाप श्रमण बताये हैं ?

उ. ज्ञानाचार में प्रमादी पाप श्रमण, दर्शनाचार में प्रमादी पाप श्रमण, चारित्रचार में प्रमादीपाप श्रमण, तपाचार में प्रमादी पाप श्रमण, वीर्याचार में प्रमादी पाप श्रमण- ये पाँच प्रकार के बताये गये हैं।

प्र.7 शास्त्राध्ययन में प्रमादी पाप श्रमण के क्या लक्षण हैं?

उ. (1) स्वच्छन्द विहारी (2) धृष्टतापूर्वक कुतर्कयुक्त दुर्वचनी (3) अतिनिद्राशील (4) खा-पीकर निश्चिन्त शयनशील (5) शास्त्रज्ञान दानदाता का निंदक और (6) विवेक भ्रष्ट अज्ञानी।

प्र.8 दर्शनाचार में प्रमादी पाप श्रमण के क्या लक्षण हैं ?

उ. जो आचार्य और उपाध्याय के सेवादि कार्यों की

सत्रहवाँ अध्ययन

पाप श्रमणीय

प्र.1 उत्तराध्ययन सूत्र का सत्रहवाँ अध्ययन कौन सा है ?

उ. पाप श्रमणीय।

प्र.2 इस अध्ययन में किसका वर्णन है ?

उ. पाप श्रमण के स्वरुप का निरूपण किया है।

प्र.3 श्रमण कितने प्रकार के बताये गये हैं ?

उ. दो (1) सुविहित श्रमण (2) पाप श्रमण।

प्र.4 सुविहित श्रमण किसे कहते हैं ?

उ. जो दीक्षा सिंह की तरह लेता है, और सिंह की तरह पालन करता है। अहर्निश ज्ञान, दर्शन, चारित्र तप की साधना में पुरुषार्थ करता है। प्रमाद को जरा भी स्थान नहीं देता। उसका आत्म मान जागृत रहता है। वह निरतिचार संयम का व महाव्रतों का पालन करता है। समता उसके जीवन के कण-कण में रमी रहती है। क्षमादि दस धर्मों के पालन में वह सदा जागरुक रहता है।

प्र.5 पाप श्रमण किसे कहा गया है ?

उ. श्रमण बन जाने के बाद यदि व्यक्ति यह सोचता है कि अब मुझे और कुछ करने की आवश्यकता नहीं है, न तो मुझे ज्ञान वृद्धि के लिये शास्त्रीय अध्ययन की

जरूरत है, न जप-तप-ध्यानादि, अहिंसा व्रत पालन या दशविध श्रमण धर्म के आचरण की अपेक्षा है तो यह बहुत बड़ी भ्रांति है। इसी भ्रांति का शिकार होकर साधक यह सोचने लगता है कि मैं महान गुरु का शिष्य हूँ। मुझे सम्मानपूर्वक शिक्षा मिल जाती है, धर्मस्थान, वस्त्र, पात्र या अन्य सुख-सुविधाएँ भी प्राप्त है। अब तप या अन्य साधना करके आत्मपीड़न से क्या प्रयोजन है। इस प्रकार विवेक भ्रष्ट होकर सोचने वाले श्रमण को पाप श्रमण कहा गया है।

प्र.6 कितने प्रकार के पाप श्रमण बताये हैं ?

उ. ज्ञानाचार में प्रमादी पाप श्रमण, दर्शनाचार में प्रमादी पाप श्रमण, चारित्रचार में प्रमादीपाप श्रमण, तपाचार में प्रमादी पाप श्रमण, वीर्याचार में प्रमादी पाप श्रमण- ये पाँच प्रकार के बताये गये हैं।

प्र.7 शास्त्राध्ययन में प्रमादी पाप श्रमण के क्या लक्षण हैं?

उ. (1) स्वच्छन्द विहारी (2) धृष्टतापूर्वक कुतर्कयुक्त दुर्वचनी (3) अतिनिद्राशील (4) खा-पीकर निश्चिन्त शयनशील (5) शास्त्रज्ञान दानदाता का निंदक और (6) विवेक भ्रष्ट अज्ञानी।

प्र.8 दर्शनाचार में प्रमादी पाप श्रमण के क्या लक्षण हैं ?

उ. जो आचार्य और उपाध्याय के सेवादि कार्यों की

चिन्ता नहीं करता अपितु उनसे विपरीत हो जाता है, जो अहंकारी होता है वह दर्शनाचार में प्रमादी पाप श्रमण कहलाता है।

प्र.9 चारित्राचार में प्रमादी में पाप श्रमण के क्या लक्षण है ?

उ. (1) जो बेइन्द्रिय आदि जीव, बीज और हरी वनस्पति का सम्मर्दन करता रहता है (2) उन्हें कुचलता है (3) असंयत होते हुए भी स्वयं को संयत भावना है। (4) बिना पूँजे पार, चौकी, आदि पर बैठ जाता है (5) जो जल्दी-जल्दी चलता है (6) जो बार-बार प्रमादाचरण करता है (7) जो मर्यादाओं का उल्लंघन करता है (8) अति क्रोधी होता है (9) जो असावधान होकर प्रतिलेखन करता है (10) जो भंडोपकरण को जहाँ-तहाँ रख देता है (11) जो उपयोगरहित प्रतिलेखन करता है। (12) जो इधर-उधर की बातों को सुनता हुआ प्रतिलेखन करता है (13) गुरु की सदा अवहेलना करता है (14) जो बहु मायावी है (15) जो वाचाल है (16) लुब्ध है (17) जिसका मन एवं इन्द्रियों पर नियंत्रण नहीं है (18) जो प्राप्त वस्तुओं का संविभाग नहीं करता (19) जिसे अपने गुरु आदि के प्रति प्रेम नहीं है (20) शान्त हुए विवाद को भड़काता है (21) जो अधर्म में अपनी बुद्धि को नष्ट करता है

(22) जो विग्रह तथा कलह करने में रत रहता है (23) जो स्थिरता से नहीं बैठता (24) जो हाथ-पैर आदि की चपल व विकृत चेष्टाएँ करता है (25) जो जहाँ-तहाँ बैठ जाता है (26) जिसे आसन पर बैठने का विवेक नहीं (27) जो सचित्र रज से लिप्त पैरों से सो जाता है (28) जो शय्या का प्रतिलेखन नहीं करता (29) तथा संस्तारक में भी असावधान रहता है, **पावसमणे त्ति वुच्चई** - वे चारित्राचार में प्रमादी में पाप श्रमण कहलाते हैं।

प्र.10 तपाचार में प्रमादी पाप श्रमण कौन है ?

उ. (1) जो दूध-दही आदि विगयों का बार-बार सेवन करता है (2) जिसकी तप क्रिया में रुचि नहीं है (3) जो सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक बार-बार आहार करता हो, (4) जो समझाने वाले शिक्षक गुरु को उल्टे उपदेश देने लगता है वह तपाचार में प्रमादी पाप श्रमण है।

प्र.11 वीर्याचार में प्रमादी पाप श्रमण कौन है ?

उ. (1) जो अपने गुरु का परित्याग करके अन्य मतपरम्परा को स्वीकार करता है (2) जो एक गण को छोड़कर दूसरे गण में चला जाता है य. ~
(गच्छ) बना लेता है और गुरु के गण का
करता है। (3) जो अपने साधु संघ को छ

गृहस्थी के धंधों में लग जाता है (4) जो शुभाशुभ फल निमित्त बताकर व्यवहार चलाता है (5) द्रव्योपार्जन करता है (6) जो अपने ज्ञाति जनों-पूर्व परिचित स्वजनों से ही आहार लेता है (7) सभी घरों से सामुदायिक भिक्षा लेना नहीं चाहता (8) गृहस्थ की बैठने की गद्दी पर बैठता है वह वीर्याचार में प्रमादी पाप श्रमण है।

प्र.12 सुविहित श्रमण द्वारा उभयलोक आराधना किस प्रकार होती है ?

उ. जो साधु पाप श्रमण के दोषों का त्याग करता है वह मुनियों में सुव्रत होता है। वह इस लोक में अमृत के समान पूजा जाता है। अतः वह इस लोक और परलोक, दोनों लोकों की आराधना करता है।

--0--

अठारहवाँ अध्ययन

संजयीय (संयतीय)

प्र.1 अठारहवाँ अध्ययन कौन सा है ?

उ. संजयीय (संयतीय)

प्र.2 इस अध्ययन का नाम संजयीय (संयतीय) नाम क्यों पड़ा ?

उ. संजय (संयति) राजर्षि के नाम पर।

प्र.3 संजय कहाँ का राजा था ?

उ. काम्पिल्य पुर का।

प्र.4 संजय राजा किसका शौकिन था ?

उ. शिकार का।

प्र.5 एक बार संजय राजा शिकार खेलने कहाँ पहुँचे ?

उ. जंगल में।

प्र.6 जंगल में उसने किसका पीछा किया ?

उ. हिरणों का।

प्र.7 सेना ने हिरणों को किस तरफ भगाया ?

उ. केसर उद्यान की ओर।

प्र.8 केसर उद्यान में कौन विद्यमान था ?

उ. एक मुनि।

प्र.9 मुनि का नाम क्या था ?

उ. गर्दभाली।

प्र.10 गर्दभाली मुनि उद्यान में क्या कर रहे थे ?

उ. ध्यान साधना

प्र.11 हिरण भागते हुए कहाँ पहुँचे ?

उ. गर्दभाली मुनि के पास।

प्र.12 हिरणों के पीछे भागते हुए संयती राजा कहाँ पहुँचा ?

उ. केसर उद्यान में।

प्र.13 केसर उद्यान में संयति राजा ने किसे देखा ?

उ. गर्दभाली मुनि को।

प्र.14 गर्दभाली को देखकर संयति राजा को क्या हुआ ?

उ. भय उत्पन्न हुआ।

प्र.15 गर्दभाली मुनि को देखकर संयति राजा भयभीत क्यों हुआ ?

उ. उसने सोचा कि शायद ये हिरण मुनि के थे, जिन्हें मैंने मार डाला है।

प्र.16 मुनि को देखकर संयति राजा ने क्या सोचा ?

उ. यदि मुनि क्रुद्ध हो गये तो क्षणभर में मुझे ही नहीं अपितु लाखों व्यक्तियों को भस्म कर सकते हैं।

प्र.17 भयभीत संयति राजा ने गर्दभाली मुनि से क्या मांगी ?

उ. भयभीत होकर राजा ने विनय पूर्वक मुनि से अपने अपराध की क्षमा मांगी।

प्र.18 संयति राजा की बात का गर्दभाली मुनि ने उत्तर क्यों नहीं दिया ?

उ. क्योंकि वे ध्यान में थे।

प्र.19 गर्दभाली मुनि के मौन रहने पर संयति राजा को क्या हुआ ?

उ. वह और अधिक भय से त्रस्त हो गया।

प्र.20 गर्दभाली राजा ने गर्दभाली मुनि से क्या कहा ?

उ. भगवन् ! मैं संजय हूँ। आप मुझसे वार्तालाप करें।

प्र.21 गर्दभाली मुनि के मौन रहने से राजा अधिक भयभीत क्यों हुआ ?

उ. क्योंकि न जाने ये ऋषि कुपित होकर क्या करेंगे।

प्र.22 गर्दभाली मुनि के ध्यान खोलने पर राजा ने क्या कहा ?

उ. मैं इसलिये भयत्रस्त हूँ कि आप मुझसे बात नहीं कर रहे हैं। मैंने सुना है कि तपोधन मुनि कुपित हो जायें तो अपने तेज से सैकड़ों हजारों ही नहीं करोड़ों मनुष्यों को भस्म कर सकते हैं।

प्र.23 राजा की बात का गर्दभाली मुनि ने क्या उत्तर दिया ?

उ. हे राजन् ! तुझे अभय है, किन्तु तू भी अभय दाता बन। इस अनित्य जीवलोक में तू क्यों हिंसा में रचा पचा है।

प्र.24 गर्दभाली मुनि ने राजा को किस बात का उपदेश दिया ?

उ. अनासक्ति एवं अनित्यता आदि का।

प्र.25 गर्दभाली मुनि से उपदेश सुन राजा संयति ने क्या किया ?

उ. राज्य का परित्याग करके वह गर्दभाली अनगार के पास प्रव्रजित हो गया।

प्र.26 प्रतिमाधारी एकल विहारी संयति मुनि को विहार करते हुए कौन मिले ?

उ. क्षत्रिय मुनि।

प्र.27 क्षत्रिय मुनि का परिचय दीजिये।

उ. किसी क्षत्रिय राजा ने दीक्षा ग्रहण की थी। वह पूर्व जन्म में वैमानिक देव था। उस मुनि का नाम न लेकर शास्त्रकार ने क्षत्रिय कुल में जन्म होने से क्षत्रिय मुनि नाम का ही उल्लेख किया है।

प्र.28 क्षत्रिय मुनि ने संयति मुनि से कितने प्रश्न पूछे ?

उ. पाँच प्रश्न।

प्र.29 क्षत्रिय मुनि ने कौन-कौन से प्रश्न पूछे ?

उ. (1) आपका नाम क्या है। (2) आपका गौत्र कौन सा है (3) आप किसलिये मुनि बने हो (4) आप आचार्यों की सेवा किस प्रकार से करते हो (5) आप विनयशील क्यों कहलाते हो ?

प्र.30 संयति मुनि ने उन प्रश्नों का क्या उत्तर दिया ?

उ. मेरा नाम संजय (संयति) है, गौत्र गौतम है और मैं मुक्ति प्राप्त करने के उद्देश्य से मुनि बना हूँ। मेरे आचार्य गर्दभाली हैं। आचार्य जी का जैसा मेरे लिए उपदेश आदेश है, तद्नुसार चलता हूँ। यही उनकी सेवा है और उन्हीं के कथनानुसार मैं समस्त मुचिर्या करता हूँ, यही मेरी विनम्रता है।

प्र.31 क्षत्रिय मुनि द्वारा कितने वादों पर चर्चा-विचारणा की गयी ?

उ. क्रियावाद, अक्रियावाद, विनयवाद, अज्ञानवाद।

प्र.32 ये चारों वाद किस समय के हैं ?

उ. ये चारों वाद भगवान महावीर के समकालीन एकान्तवादियों के हैं।

प्र.33 क्रियावाद क्या है ?

उ. क्रियावाद आत्मा के अस्तित्व मानते हुए भी, "वह व्यापक है अथवा अव्यापक है, अकर्ता है, मूत है या अमूर्त ?" इस विषय में संशयग्रस्त हैं।

प्र.34 अक्रियावादी क्या मानते हैं ?

उ. अक्रियावादी वे हैं, जो आत्मा के अस्तित्व को नहीं मानते हैं। वे आत्मा और शरीर को एक मानते हैं। अस्तित्व मानने पर शरीर के साथ एकत्व है या अन्यत्व है, इस विषय में वे अव्यक्त्व्य रहना चाहते हैं। एकत्व मानने पर शरीर के अविनष्ट स्थिति में कभी मरण का प्रसंग नहीं आयेगा। अन्यत्व मानने पर शरीर को छेद आदि करने पर वेदना के अभाव प्रसंग आ जायेगा इसलिये अव्यक्त्व हैं। कई अक्रियावादी उत्पत्ति के अनन्तर ही आत्मा का प्रलय मानते हैं।

प्र.35 विनयवाद का क्या कहना है ?

उ. विनयवादी विनय से ही मुक्ति मानते हैं। विनयवादियों का कहना है कि सुर-असुर, नृप, तपस्वी, हाथी, घोड़ा, मृग, गाय, भैंस, कुत्ता, सियार, जलचर, कबूतर, चिड़िया आदि को नमस्कार करने से क्लेश नाश होता है। विनय से ही श्रेय होता है, अन्यथा नहीं। किन्तु ऐसे विनय से न तो कोई पारलौकिक हेतु सिद्ध होता है, न इहलौकिक। लौकिक लोकोत्तर जगत में, गुणों में अधिक व्यक्ति ही विनय के योग्य पात्र माना जाता है।

प्र.36 अज्ञानवाद किसे मानता है ?

उ. अज्ञानवादी मानते हैं कि अज्ञान ही श्रेयस्कर है। ज्ञान होने से कोई जगत को ब्रह्मादि विवर्तरूप, कोई प्रकृति पुरुषात्मक, दूसरे द्रव्यादि षट भेद, कोई चार आर्य सच्च रुप, कोई विज्ञानमय, कोई शून्य रुप या विभिन्न मत पंथ है फिर आत्मा को कोई नित्य कहता है, कोई अनित्य। यों तो अनेक रुप बताते हैं। अतः इनको जानने से क्या प्रयोजन है। मोक्ष के प्रति ज्ञान का कोई उपयोग नहीं है। केवल कष्टरूप तपश्चर्या करना पड़ता है। घोर तप, व्रत आदि से मोक्ष प्राप्त होता है। अतः ज्ञान अकिञ्चितकर है।

प्र.37 इन वादों के विषय में क्षत्रिय मुनि का क्या कहना है ?

उ. क्षत्रिय मुनि कहते हैं - क्रिया, अक्रिया, विनय और अज्ञान - इन चार स्थानों के द्वारा कई एकान्तवादी तत्वज्ञ असत्य प्ररुपणा करते हैं। यह हमने अपने मन से नहीं कहते बल्कि बुद्ध उपशान्त विद्या और चरण से सम्पन्न सत्यभाषी, सत्य पराक्रमीय महावीर ने प्रकट की है। जो एकान्त क्रियावादी आदि असत्य व्यक्ति पाप करते हैं, वे घोर नरक में जाते हैं। जो मनुष्य आर्य धर्म का आचरण करते हैं, वे दिव्य गति को प्राप्त करते हैं। क्रियावादी आदि एकान्तवादियों का कथन मायापूर्वक है। अतः वह मिथ्यावचन है, निरर्थक है। मैं उन मायापूर्ण एकान्त वचनों से बच कर रहता और चलता हूँ। वे सब मेरे जाने हुए हैं जो मिथ्यादृष्टि और अनार्य है। मैं परलोक के अस्तित्व से अपनी आत्मा को भलीभांति जानता हूँ।

प्र.38 क्षत्रिय मुनि की आत्मा कहाँ से आयी थी ?

उ. पाँचवे ब्रह्मलोक देवलोक के महाप्राण नामक विमान से।

प्र.39 क्षत्रिय मुनि ने संयति मुनि को क्रियावाद सम्बन्धित क्या उपदेश दिया ?

उ. नाना प्रकार की रुचि अर्थात् क्रियावादी आदि के मत

वाली इच्छा का तथा छन्दों यानि स्वमति द्वारा कल्पित विकल्पों का और सब प्रकार के हिंसादि अनर्थक व्यापारों का संयतात्मा मुनि को सर्वत्र परित्याग करना चाहिए। इस प्रकार सम्यक तत्वज्ञान रुप विद्या का लक्ष्य करके तदनुरुप संयम पथ संचरण करे। क्षत्रिय मुनि कंहते हैं कि शुभाशुभ सूचक प्रश्नों से, गृहस्थों की मंत्रणाओं से मैं दूर रहता हूं। कोई विरला महात्मा ही अहर्निशधर्म के प्रति उद्यत रहता है। इस प्रकार जानकर तपश्चरण करो। जो तुम मुझे सम्यक शुद्धि चित्त से काल के विषय में पूछ रहे हो, उसे (भ.महावीर) बुद्ध सर्वज्ञ श्री ने प्रकट किया है। अतः वह ज्ञान जिन शासन में विद्यमान है। धीर साधक क्रियावाद में रुचि रखे और अक्रियावाद का त्याग करे। सम्यक् दृष्टि से सम्पन्न होकर तुम दुःश्चर धर्म का आचरण करो।

✓प्र.40 क्षत्रिय मुनि ने कितनी महान आत्माओं का वर्णन संयति मुनि को सुनाया ?

उ. 19 आत्माओं का। (1) भरत चक्रवर्ती (2) सगर चक्रवर्ती (3) मघवा चक्रवर्ती (4) सनत् चक्रवर्ती (5) शांतिनाथ चक्रवर्ती (6) कुंथुनाथ चक्रवर्ती (7) अरनाथ चक्रवर्ती (8) महापद्म चक्रवर्ती (9) हरिषेण चक्रवर्ती (10) जय चक्रवर्ती (11) दशार्णभद्र राजा

(12) नमि राजर्षि (13) करकण्डू (14) द्विमुख (15) नग्गति (16) सौवीर नरेश उदायन राजा (17) काशीराज नंदन (18) विजय राजर्षि (19) महाबल राजर्षि।

प्र.41 क्षत्रियमुनि वर्णित 19 महात्माओं क्या विशेषता रही ?

उ. ये सभी परम ऐश्वर्य सम्पन्न, कीर्ति सम्पन्न, ऋद्धिमान, यशस्वी, मनुष्येन्द्र, ऋद्धि सम्पन्न, नृपश्रेष्ठ, धृतिमान, शत्रु मानमर्दक महान आत्माओं ने अर्थ एवं धर्म से शोभित पवित्र उपदेश वचन को सुनकर प्रतिबोधित होकर कामभोगों का सम्पूर्ण त्याग कर अनाकुल चित्त से तप त्यागपूर्वक कर्म रुपी महावन को ध्वस्त कर दिया।

(इन सभी 19 महान आत्माओं का सारगर्भित वर्णन प्रश्नोत्तर रुप में आगे प्रस्तुत किये जाने का प्रसंग है। - मित्र)

प्र.42 भरत चक्रवर्ती कौन से उपदेश से प्रव्रजित हुये ?

उ. अर्थ और धर्म से सुशोभित पुण्यपद-पवित्र उपदेश को सुनकर भरत चक्रवर्ती भारत वर्ष एवं कामभोगों को त्याग कर प्रव्रजित हुए।

प्र.43 भरत चक्री का चिंतन किधर से किधर

उ. शरीर श्रृंगार से आत्मश्रृंगार की ओर।

प्र.44 किस पर आसक्ति हटने से भरत ने चिंतन बदला ?

उ. शरीर।

प्र.45 शरीर के किस हिस्से को देखकर भरत का चिंतन प्रारम्भ हुआ ?

उ. अंगूठी रहित अंगुली।

प्र.46 भरत चिंतन करते हुए कहाँ चढ़ गये ?

उ. क्षपक श्रेणी पर।

प्र.47 क्षपक श्रेणी में चढ़ने पर भरत ने कितने शत्रुओं का नाश कर दिया ?

उ. 4 घनघाती कर्मरुपी शत्रुओं का।

प्र.48 4 कर्म शत्रुओं पर विजय पाकर भरत ने क्या पाया ?

उ. केवल ज्ञान।

प्र.49 केवल ज्ञान प्राप्त होने पर कौन उपस्थित हुए ?

उ. शक्रेन्द्र।

प्र.50 शक्रेन्द्र ने भरत केवली से क्या अनुरोध किया ?

उ. हे पूज्य ! आप अब द्रव्यलिंग धारण करे, जिससे हम दीक्षा महोत्सव व केवल ज्ञान महोत्सव करें।

प्र.51 शक्रेन्द्र का अनुरोध सुनकर भरत केवली ने क्या किया ?

उ. मुनिवेष धारण कर मस्तक का पंचमुष्ठि लोच किया और दीक्षा ग्रहण की।

प्र.52 भरत चक्रवर्ती के साथ कितनी आत्माओं ने दीक्षा ली ?

उ. 10 हजार आत्माओं ने।

प्र.53 भरत केवली कितने समय तक भू-मण्डल पर विचरण करते रहे ?

उ. कुंछ कम एक लाख पूर्व तक भू-मण्डल पर भव्य जीवों को सद्धर्मपान कराते हुए अन्त में सिद्ध बुद्ध मुक्त हुए।

प्र.54 पुत्र शोक से दुखी किसे वैराग्य उत्पन्न हुआ ?

उ. सगर चक्रवर्ती को।

प्र.55 सगर चक्रवर्ती के कितने पुत्र थे ?

उ. 60 हजार।

प्र.56 सगर चक्रवर्ती अपना राज्यभार किसे सौंपा ?

उ. अपने ज्येष्ठ पुत्र जन्हु कुमार के पुत्र भागीरथ को।

प्र.57 सगर चक्रवर्ती का अजीतनाथ भगवान से क्या संबंध था ?

उ. सगर चक्रवर्ती अजीतनाथ जी के चचेरे भाई थे।

प्र.58 सगर चक्रवर्ती की आत्मा अभी कहाँ पर है ?

उ. सिद्ध शिला पर अर्थात् मोक्ष में।

प्र.59 भरत वर्ष में तीसरे चक्रवर्ती कौन हुये ?

उ. मघवा।

प्र.60 मघवा चक्रवर्ती के माता-पिता का क्या

उ. समुद्र विजय राजा - पिता, भद्रा रानी -

प्र.61 मघवा चक्रवर्ती को किसका उपदेश सुनकर विरक्ति हुई ?

उ. धर्मघोष मुनि।

प्र.62 विरक्त मघवा चक्रवर्ती ने क्या विचार किया ?

उ. संसार के ये सभी रमणीय पदार्थ कर्मबंध के हेतु हैं तथा अस्थिर है, बिजली की चमक की तरह क्षण विध्वंसी है। अतः इन सब रमणीय भोगों का त्याग करके मुझे आत्मकल्याण की साधना करनी चाहिए।

प्र.63 मघवा चक्रवर्ती का आयुष्य कितना था ?

उ. पाँच लाख वर्ष का।

प्र.64 सनत चक्रवर्ती का जन्म कहाँ हुआ था ?

उ. हस्तिनापुर में।

प्र.65 सनत चक्रवर्ती के रुप की प्रशंसा किसने की ?

उ. इन्द्र ने।

प्र.66 कौन-से देवों ने सनत चक्रवर्ती की परीक्ष लेने की ठानी ?

उ. विजय और वैजयन्त नामक देव ने।

प्र.67 विजय और वैजयन्त देवों ने किस रुप में आकर परीक्षा ली ?

उ. ब्राह्मण का रुप बनाकर।

प्र.68 सनत का रूप देखकर ब्राह्मण रुप में रहे हये देवों ने क्या कहा ?

उ. जैसा इन्द्र ने कहा वैसा ही है।

प्र.69 सनत चक्रवर्ती ने ब्राह्मण रुप में रहे देवों से क्या कहा ?

उ. रुप गर्वित सनत ने कहा -अभी क्या देखते हैं, जब मैं सर्वालंकार विभूषित होकर सिंहासन पर बैठूं तब मेरे रुप को देंखना।

प्र.70 सर्वालंकारों से विभूषित चक्रवर्ती को देखकर देवों ने क्या कहा ?

उ. अब आपका शरीर पहले जैसा नहीं रहा।

प्र.71 इस बात का चक्रवर्ती ने क्या माँगा ?

उ. प्रमाण मांगा।

प्र.72 सनत चक्री द्वारा प्रमाण मांगने पर देवों ने क्या कहा ?

उ. आप थूक कर इस बात की स्वयं परीक्षा कर लीजिये।

प्र.73 सनत चक्री ने थूक कर क्या देखा ?

उ. उसने बुलबुलाते कीड़े को देखा तथा शरीर पर दृष्टि डाली तो उसके भी रुप क्रांति और लावण्य आदि फीके प्रतीत हुये।

प्र.74 शरीर की दुर्दशा देख सनत् चक्रवर्ती ने क्या विचार किया ?

उ. मेरा यह शरीर जो अद्वितीय सुन्दर था,
में ही अनेक व्याधियों से ग्रस्त, निस्तेज

बन गया है। इस असार शरीर और शरीर से संबंधित धन-जन-वैभव आदि में आसक्ति एवं गर्व करना अज्ञान है। इस शरीर से भोगों का सेवन उन्माद है, परिग्रह अनिष्ट व्रत है। इन सब पर ममत्व का त्याग करके स्वपर हित साधक शाश्वत सुख प्रदायक सर्व विरंति चारित्र अंगीकार करना ही श्रेयस्कर है।

प्र.75 सनत चक्री ने किसके पास दीक्षा ली ?

उ. विनयंधराचार्य के पास।

प्र.76 दीक्षा लेने के बाद सनत चक्री का राज परिवार कितने महीने तक उनके पीछे घूमता रहा ?

उ. छः महीने तक।

प्र.77 दीक्षा लेने के बाद सनत चक्री के पीछे राज परिवार क्यों घूमता रहा है ?

उ. राजर्षि के पीछे प्रगाढ स्नेह के कारण राजा रानी प्रधानादि छः महिने तक उनके पीछे-पीछे घूमे और वापस राज्य में लौटने की प्रार्थना की।

प्र.78 राजर्षि सनत चक्री को गोचरी में कैसा आहार मिलता था ?

उ. अन्त, प्रान्त, तुच्छ, नीरस आहार मिलता था।

प्र.79 नीरस आहार मिलने से सनत मुनि को कौन सी बीमारी लग गयी ?

उ. नीरस आहार मिलने से श्वास आदि महाव्याधियाँ उत्पन्न हो गयी।

प्र.80 महाव्याधियों को कितने साल तक सहन किया ?

उ. 700 वर्ष तक।

प्र.81 सनत महर्षि को कौन सी लब्धियाँ प्राप्त हुई ?

उ. आमर्शोषधि, शक्रदोषधि, मूत्रोषधि आदि अनेक लब्धियाँ प्राप्त हुई।

प्र.82 सनत महर्षि की इन्द्र ने क्या प्रशंसा की ?

उ. इस भूमण्डल पर सनत महर्षि जैसा कोई नहीं जो इतनी लब्धियाँ के होते हुए भी महाव्याधियों को समभाव से सहन कर रहे हैं।

प्र.83 इन्द्र की बात का विश्वास किसे नहीं हुआ ?

उ. विजय-वैजयंत नामक उन्हीं दो देवों को जिन्हें पूर्व में सनत की रुप प्रशंसा पर भी विश्वास नहीं हुआ था।

प्र.84 सनत महर्षि की परीक्षा लेने के लिये देव किस रूप में आये।

उ. वैद्य के रूप में।

प्र.85 वैद्यों ने सनत महर्षि से किस बात का आग्रह किया ?

उ. व्याधि की चिकित्सा कराने का।

प्र.86 सनत मुनि ने वैद्यों से क्या पूछा ?

उ. आप कर्म रोग की चिकित्सा करते हैं या शरीर रोग की ?

प्र.87 वैद्यों ने सनत मुनि को क्या उत्तर दिया ?

उ. शरीर रोग की।

प्र.88 वैद्यों की बात का मुनि ने किस प्रकार उत्तर दिया ?

उ. वैद्यों की बात सुनकर मुनि ने अपनी छोटी अंगुली पर लगा कर उसे स्वर्ण सी बना दी और देवों से कहा शरीर रोग की तो मैं इस प्रकार से चिकित्सा कर सकता हूँ। फिर भी मेरी चिकित्सा करने की इच्छा नहीं है।

प्र.89 मुनि की चिकित्सा संबंधी बात सुनकर देवरुपी वैद्यों ने क्या कहा ?

उ. कर्मरोग तो नाश करने में तो आप ही समर्थ हैं।

प्र.90 सनत मुनि के किस गुण की प्रशंसा देवों ने की ?

उ. धीरता एवं सहिष्णुता की।

प्र.91 कितने चक्रवर्ती ने तीर्थंकर पद की प्राप्ति की ?

उ. तीन- शांतिनाथ जी, कुंथुनाथ जी, अरनाथ जी।

प्र.92 महापद्म चक्रवर्ती कौन से वंश के थे ?

उ. इक्ष्वाकु वंश के।

प्र.93 महापद्म के माता-पिता का क्या नाम था ?

उ. पिता- राजा पद्मोत्तर एवं माता रानी ज्वाला।

प्र.94 महापद्म के भाई का क्या नाम था ?

उ. विष्णु कुमार।

प्र.95 हस्तिनापुर के पास कौन सा राजा रहता था ?

उ. हस्तिनापुर राज्य के सीमावर्ती राज्य में किला बनाकर सिंहबल राजा रहता था।

प्र.96 सिंहबल राजा हस्तिनापुर में आकर क्या करता था ?

उ. लूटपाट करके अपने दुर्ग में घुस जाता था ?

प्र.97 उस समय महापद्म का मंत्री कौन था ?

उ. नमुचि।

प्र.98 सिंहबल को पकड़ने के बीड़ा किसने उठाया ?

उ. नमुचि ने।

प्र.99 सिंहबल को पकड़ने पर महापद्म ने नमुचि से क्या कहा ?

उ. वर मांगने को कहा।

प्र.100 महापद्म के वर मांगने को कहने पर नमुचि ने क्या कहा ?

उ. मैं यथा अवसर आपके मांगूगा।

प्र.101 विष्णु कुमार एवं पद्मोत्तर राजा ने किसके पास दीक्षा ली ?

उ. श्री सुव्रताचार्य के पास।

प्र.102 पद्मोत्तर राजर्षि को कौन-सा ज्ञान हुआ ?

उ. केवल्यज्ञान।

प्र.103 विष्णुकुमार ने तपस्या से क्या प्राप्त किया ?

उ. अनेक लब्धियाँ प्राप्त किया।

प्र.104 सुव्रताचार्य एक बार चातुमार्स हेतु कहाँ पधारे?

उ. हस्तिनापुर में।

प्र.105 नमुचि ने आचार्य श्री को देखकर महापद्म से क्या कहा ?

उ. नमुचि मंत्री ने पूर्व बैर का बदला लेने के लिये महापद्म चक्री से वरदान मांगा कि मुझे यज्ञ करना है और यज्ञ समाप्ति तक अपना राज्य मुझे दे दें।

प्र.106 नमुचि के राज्य मांगने पर महापद्म ने क्या किया ?

उ. महापद्म ने सरल भाव से राज्य सौंप दिया।

प्र.107 नवीन राजा को बधाई देने कौन-कौन आया ?

उ. जैन मुनियों के अलावा अन्य वेष वाले साधु व तापस गये।

प्र.108 जैन मुनियों के नहीं आने पर नमुचि ने क्या किया ?

उ. इससे कुपित होकर नमूचि ने आदेश दिया - सात दिन के बाद कोई भी जैन साधु मेरे राज्य में रहेगा तो उसे मृत्युदण्ड दिया जायेगा।

प्र.109 इस संकट से उबरने के लिये सुव्रताचार्य ने किसे बुलाया ?

विष्णु कुमार मुनि को।

प्र.110 विष्णु मुनि ने नमुचि से रहने के लिये कितनी जगह माँगी ?

उ. तीन पैर रखने जितनी भूमि।

प्र.111 तीन पैरों से कितनी जगह नापी ?

उ. तीन लोकों को।

प्र.112 महापद्म ने नमूति को इस दण्ड के लिये क्या दिया ?

उ. देश निकाला।

प्र.113 सर्वस्व का त्याग कर महापद्म ने आचार धर्म का पालन कितने समय तक किया ?

उ. 10 हजार वर्ष तक।

प्र.114 महापद्म मुनि कर्मों का क्षय करके कहाँ पहुँचे ?

उ. सिद्ध बुद्ध होकर मोक्ष में पहुँचे।

प्र.115 महापद्म के बाद कौन से चक्रवर्ती मोक्ष में पधारे ?

उ. हरिषेण चक्रवर्ती।

प्र.116 राजगृह नगर में कौन चक्रवर्ती हुआ ?

उ. जय चक्रवर्ती।

प्र.117 दशार्ण भद्र कहाँ के राजा थे ?

उ. दशार्ण देश।

प्र.118 दशार्ण भद्र राजा [illegible]

उ. जैन धर्म का अनुयायी।

प्र.119 एक बार विचरण करते हुए भगवान महावीर कहाँ पधारे ?

उ. दशार्ण देश।

प्र.120 भ. महावीर के पदार्पण का समाचार सुनकर दशार्णभद्र राजा के मन में क्या विचार उत्पन्न हुआ ?

उ. आज तक भगवान को किसी ने वंदन न किया हो, इस प्रकार से समस्त वैभव सहित मैं प्रभु को वंदन करने जाऊँगा।

प्र.121 प्रभु को वंदन करने जाते हुए राजा कैसा लग रहा था ?

उ. साक्षात इन्द्र सा।

प्र.122 राजा के इस वैभव गर्व को किसने जाना ?

उ. अपने अवधिज्ञान से इन्द्र ने।

प्र.123 राजा के इस गर्व को देखकर इन्द्र ने क्या विचार किया ?

उ. प्रभुभक्ति में ऐसा गर्व उचित नहीं।

प्र.124 इन्द्र ने गर्व भंग करने के लिये क्या किया ?

उ. इन्द्र ने ऐरावत देव को आदेश देकर कैलाश पर्वत सम उत्तुंग 64 हजार सुसज्जित श्रृंगारित हाथियों और देव-देवियों की व्यवस्था की।

प्र.125 इन्द्र का वैभव देखकर दशार्णभद्र राजा के मन में क्या विचार उत्पन्न हुआ ?

उ. कहाँ इन्द्र का वैभव और कहाँ मेरा तुच्छ वैभव।

प्र.126 इन्द्र ने यह लोकोत्तर वैभव किससे पाया ?

उ. धर्माराधना (पुण्य प्रताप) से।

प्र.127 दशार्णभद्र ने अपने गर्व रखने के लिये क्या सोचा ?

उ. मुझे शुद्ध धर्म की पूर्ण आराधना करनी चाहिए। जिससे मेरा गर्व भी कृतार्थ हो।

प्र.128 दशार्णभद्र को दीक्षित देखकर इन्द्र ने क्या कहा ?

उ. वैभव में हमारी दिव्य शक्ति आप से बढकर है। परन्तु त्याग एवं व्रत ग्रहण करने की शक्ति मुझमे नहीं है।

प्र.129 प्रत्येक बुद्ध कितने हुए ?

उ. चार - नमिराजर्षि, करकंडु, द्विमुख, नग्गति।

प्र.130 करकंडू कहाँ का राजा था ?

उ. कलिंग देश का।

प्र.131 करकंडू के माता का क्या नाम था ?

उ. पिता-दधिवाहन, माता-पद्मावती।

प्र.132 करकंडू की आत्मा जब गर्भ में थी तब माता को कौन का दोहद उत्पन्न हुआ ?

उ. मैं विविध वस्त्राभूषण से सुसज्जित पट्टहस्ती पर आसीन होकर छत्र

प्र.133 राजा ने रानी का दोहद किस प्रकार पूर्ण किया ?

उ. राजा जब रानी का यह दोहद जाना तो स्वयं पद्मावती रानी के साथ 'जय कुंजर' हाथी पर बैठकर राजोद्यान में पहुँचे।

प्र.134 राजोद्यान पहुँचते ही हाथी को क्या हुआ ?

उ. उद्यान में पहुँचतें ही विचित्र सुगंध के कारण हाथी मद से भर गया और उद्यान से भागा।

प्र.135 भागते हुए हाथी पर बैठे हुए राजा ने रानी से क्या कहा ?

उ. वट वृक्ष के आते ही उसकी शाखा पकड़ लेना जिससे हम सुरक्षित हो जायेंगे और बच जायेंगे।

प्र.136 वट वृक्ष के पास आते ही दोनों ने क्या किया ?

उ. राजा ने तो शाखा पकड़ ली परन्तु भयभीत रानी वैसा न कर सकी ?

प्र.137 हाथी दौड़ते हुए कहाँ जाकर रुका ?

उ. हाथी पवन वेग से एक महारण्य में स्थित सरोवर में पानी पीने रुका।

प्र.138 हाथी के रुकते ही रानी ने क्या किया ?

उ. जैसे ही हाथी रुका कि रानी हाथी से नीचे उतर पड़ी।

प्र.139 जंगल में चलते हुए रानी को क्या मिला ?

उ. एक तापस।

प्र.140 तापस ने रानी को देखकर क्या किया ?

उ. तापस ने रानी की करुणगाथा सुनकर उसे धैर्य बंधाया एवं भद्रपुर तक पहुँचाकर आगे दन्तपुर का रास्ता बता दिया।

प्र.141 दन्तपुर में पद्मावती रानी की किससे भेंट हुई ?

उ. प्रवर्तिनी सुगुप्तव्रता साध्वी से।

प्र.142 प्रवर्तिनी साध्वी ने रानी को क्या समझाया ?

उ. संसार की वस्तुस्थिति समझायी।

प्र.143 संसार की वस्तुस्थिति को समझकर रानी पद्मावती ने क्या किया ?

उ. पद्मावती को संसार से विरक्ति हो गयी और दीक्षा ग्रहण की।

प्र.144 पद्मावती ने साध्वी जी से कौन सी बात छिपायी ?

उ. अपने गर्भवती होने की बात।

प्र.145 दीक्षित होने के बाद कौन सी बात प्रकट हुई ?

उ. गर्भिणी होने का।

प्र.146 समय आने पर पद्मावती साध्वी ने [illegible] दिया ?

उ. एक सुन्दर बालक को (पुत्र को)

प्र.147 पद्मावती साध्वी ने अपने [illegible] पर छोड़ा ?

उ. श्मशान में एक [illegible]
कुछ देर तक एक ओर [illegible]

प्र.148 नवजात शिशु को कौन ले गया ?

उ. एक निःसंतान चाण्डाल।

प्र.149 बालक का नाम करकंडू क्यों रखा गया ?

उ. बालक के शरीर में जन्म से ही सुखी खाज (रुक्ष कन्डूया) होने से करकंडू नाम पड़ा।

प्र.150 युवावस्था में करकंडू कौनं सा काम करने लगा ?

उ. अपने पालक पिता के श्मशान की रखवाली का काम।

प्र.151 एक बार श्मशान भूमि में कौन ध्यान कर रहे थे ?

उ. गुरुशिष्य।

प्र.152 गुरु ने श्मशान में क्या देखा ?

उ. जमीन में गड़ा हुआ एक बाँस।

प्र.153 बाँस को देखकर गुरु ने शिष्य से क्या कहा ?

उ. जो इस बॉस के टूकड़े को ग्रहण करेगा वह राजा बनेगा।

प्र.154 गुरु शिष्य की बात किसने-किसने सुनी ?

उ. करकंडू और एक ब्राह्मण ने।

प्र.155 ब्राह्मण ने गुरु की बात सुनकर क्या किया ?

उ. बॉस को उखाड़कर चलने लगा।

प्र.156 करकंडू ने यह देखा तो क्या किया ?

उ. क्रुद्ध होकर ब्राह्मण से बांस छिन लिया।

.157 दोनों लड़ते-लड़ते कहाँ पहुँचे ?

न्यायालय में।

प्र.158 न्यायालय में किसकी जीत हुई ?

उ. करकंडू की।

प्र.159 न्यायाधीश ने करकंडू से क्या कहा ?

उ. अगर तुम इस दण्ड के प्रभाव से राजा बनो तो एक गाँव इस ब्राह्मण को दे देना।

प्र.160 न्यायाधीश की बात करकंडू ने क्या जवाब दिया ?

उ. उस बात का अधिक जवाब न देकर उसे स्वीकार कर लिया।

प्र.161 ब्राह्मण ने बाँस के बारे में अपने जातीय भाईयों से कहकर क्या निश्चय किया ?

उ. करकंडू को मारकर इस दण्ड को ले लेने का निश्चय किया।

प्र.162 करकंडू की माता को जब इस बात का पता चला तो उसने क्या किया ?

उ. पति पत्नी दोनों करकंडू को लेकर रातो-रात दूसरे गाँव को चल पड़े।

प्र.163 चलते हुए सब कहाँ पहुँचे ?

उ. काँचनपुर।

प्र.164 काँचनपुर में वे सब कहाँ रुके ?

उ. रात्रि होने से वे सब गाँव के [illegible]

प्र.165 जिस रात्रि को करकंडू आदि काँचनपुर पहुँचे उसी दिन काँचनपुर में क्या घटना घटी ?

उ. संयोगवश काँचनपुर का राजा अपुत्र ही मर गया।

प्र.166 ये राजा की खोज में मंत्रियों ने क्या किया ?

उ. मंत्रियों ने तत्काल राज्य के पट्ट हस्ती की सूंड में माला डालकर नये राजा की खोज में छोड़ दिया।

प्र.167 घूमते-घूमते हाथी कहाँ पहुँचा ?

उ. जहाँ करकंडू सो रहा था।

प्र.168 करकंडू को देखते ही हाथी ने क्या किया ?

उ. माला करकंडू के गले में डाल दिया।

प्र.169 हाथी ने किसे राजा बनाया ?

उ. करकंडू को।

प्र.170 करकंडू के राजा बनने पर किसने आपत्ति उठायी ?

उ. ब्राह्मणों ने।

प्र.171 एक दिन राजा करकंडू के पास कौन आया ?

उ. जिस ब्राह्मण से झगड़ा हुआ वह।

प्र.172 ब्राह्मण ने करकंडू से क्या याचना किया ?

उ. एक गाँव की।

प्र.173 करकंडू ने ब्राह्मण से क्या कहा ?

उ. तुम्हें जो गाँव पसंद है, वो गाँव मांग लो।

प्र.174 ब्राह्मण ने कहाँ का गाँव मांगा ?

कलिंग देश का एक गाँव।

प्र.175 करकंडू ने किसको पत्र लिखा ?

उ. दधिवाहन राजा को।

प्र.176 करकंडू ने दधिवाहन राजा को पत्र में क्या लिखा ?

उ. पत्रवाहक ब्राह्मण को एक गॉव दे दिया जाए।

प्र.177 करकंडू के पत्र का राजा दधिवाहंन पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उ. पत्र को देखते ही दधिवाहन क्रोध से भड़क उठा और अपमानपूर्वक ब्राह्मण को निकाल दिया।

प्र.178 करकंडू राजा ने दधिवाहन के मना पर क्या किया ?

उ. करकंडू राजा ने दधिवाहन राजा की जब यह बात सुना तो वह भी रोष से भड़क उठा और उसने युद्ध की तैयारी करने का आदेश दिया।

प्र.179 करकंडू और दधिवाहन की सेनाएँ कहाँ आकर डटी ?

उ. चम्पापुरी के युद्ध क्षेत्र में।

प्र.180 युद्ध क्षेत्र में समझाने के लिये कौन

उ. साध्वी पद्मावती।

प्र.181 साध्वी पद्मावती ने क्या ...

उ. उन्होने कहा कि तुम दोनों पिता-

प्र.182 दधिवाहन ने खुश होकर क्या किया ?

उ. अपने पुत्र करकंडू को चम्पापुरी का राजा बना दिया।

प्र.183 करकंडू को राज्य देकर दधिवाहन राजा ने क्या किया ?

उ. मुनि दीक्षा ग्रहण किया।

प्र.184 करकंडू को क्या प्रिय था ?

उ. करकंडू राजा स्वभाव से गौवंश प्रिय था।

प्र.185 करकंडू ने अपने गौशाला में क्या देखा ?

उ. एक श्वेत और तेजस्वी बछड़े को देखा।

प्र.186 करकंडू राजा को बछड़ा कैसा लगा ?

उ. बहुत ही सुहावना लगा।

प्र.187 करकंडू राजा ने बछड़े के लिये क्या आदेश दिया ?

उ. इस बछड़े को इसकी माता (गाय) का पूरा-पूरा दूध पिलाया जाये।

प्र.188 वैसा करने से वह बछड़ा एक दिन क्या बन गया ?

उ. पूरा जवान बलिष्ठ और पुष्ट सांड बन गया।

प्र.189 बहुत वर्षों के बाद करकंडू राजा ने गौशाला का निरीक्षण करते हुए क्या देखा ?

उ. उसी बैल को एकदम कृश और अस्थिपंजर मात्र तथा दयनीय दशा में देखा।

प्र.190 सांड की यह दशा देखकर करकंडू ने क्या विचार किया ?

उ. यह बल, रुप, वय, वैभव और प्रमुत्व सब नश्वर है। अतः इस पर मोह करना व्यर्थ है। इसलिये मुझे इन सब से मोह हटाकर नर जन्म को सफल बनाना चाहिए।

प्र.191 विरक्त करकंडू राजा ने किसके समान राज्य को त्याग किया ?

उ. विरक्त करकंडू ने राज्य को तृण के समान त्याग किया।

प्र.192 समाधिमरण पूर्वक देह त्यागकर करकंडू कहाँ पहुँचे ?

उ. सिद्ध बुद्ध मुक्त होकर मोक्ष पधारे।

प्र.193 करकंडू कैसे सिद्ध हुए ?

उ. प्रत्येक बुद्ध सिद्ध।

प्र.194 द्विमुख कहाँ का राजा था?

उ. पांचाल देश में काम्पिल्यपुर का।

प्र.195 द्विमुख का असली नाम क्या था ?

उ. जयवर्मा।

प्र.196 जयवर्मा का द्विमुख नाम क्यों पड़ा ?

उ. मुकुट के प्रभाव के कारण जयवर्मा का दो-दो मुख दिखता था, इसलिए द्विमुख नाम पड़ गया।

प्र.197 द्विमुख राजा की पत्नि का क्या नाम था ?

उ. गुणमाला।

प्र.198 जयवर्मा की सभा में एक दिन कौन आया ?

उ. विदेशी दूत।

प्र.199 राजा ने विदेशी दूत से क्या पूछा ?

उ. हमारे राज्य में कौन सी विशेषता नहीं है जो दूसरे राज्यों में है ?

प्र.200 दूत ने क्या कहा ?

उ. आपके राज्य में चित्रशाला नहीं है।

प्र.201 राजा ने विदेशी दूत की बात सुन किसे बुलाया ?

उ. चित्र शिल्पियों को।

प्र.202 चित्र शिल्पियों को राजा ने क्या आदेश दिया ?

उ. चित्रशाला निर्माण का।

प्र.203 चित्रशाला की नींव खोदने पर राजा को क्या मिला?

उ. अत्यन्त चमकता हुआ एक रत्नमय मुकुट।

प्र.204 मुकुट की क्या विशेषता थी ?

उ. मुकुट के प्रभाव से दर्शकों को दो मुख दिखायी देते थे।

प्र.205 मुकुट में दो मुख दिखायी देने से राजा जयवर्मा का क्या नाम पड़ा ?

द्विमुख।

प्र.206 द्विमुख राजा के कितने पुत्र और पुत्रियाँ थी ?

उ. सात पुत्र और एक पुत्री।

प्र.207 एक बार कांपिल्यपुर नगर में कौन सा महोत्सव मनाया गया ?

उ. इन्द्र महोत्सव।

प्र.208 इन्द्र महोत्सव में किसको स्थापित किया गया ?

उ. इन्द्रध्वज को।

प्र.209 किसकी दुर्दशा देखकर द्विमुख राजा को वैराग्य उत्पन्न हुआ ?

उ. इन्द्र ध्वज की।

प्र.210 इन्द्र ध्वज की कैसी दशा हो गयी थी ?

उ. इन्द्र महोत्सव के लिये पुष्प मालाओं, हीरे-जवाहरातों, मणि-माणिक्यों-रत्नों, रंगबिरंगे वस्त्रों से इन्द्र ध्वज को सुसज्जित किया गया था। आठवें दिन महोत्सव समाप्ति के बाद नागरिक इन्द्र ध्वज में लगे वस्त्र, आभूषण आदि निकालकर अपने घर ले गये और इन्द्र ध्वज की सिर्फ लकड़ी धूल में सनी हुई कुस्थान में पड़ी हुई थी। जिसे बालक घसीट कर खेल रहे थे।

प्र.211 द्विमुख इन्द्र ध्वज की दशा देखकर क्या विचार करने लगा ?

उ. अहो ! कल जो सारी जनता के आनंद का

है। संसार के सभी पदार्थों- धन, जन, मकान, महल आदि की यही दशा होती है। अतः इन पर आसक्ति रखना कदापि उचित नहीं है। क्यों ना मैं अब दुर्दशा के माध्यम इस राज्य सम्पदा पर आसक्ति का परित्याग करके एकान्त श्रेयाकारिणी मोक्ष राज्य लक्ष्मी का वरण करूँ।

प्र.212 राजा ने अपने विचार को क्रियान्वित करने के लिए क्या विचार किया ?

उ. राज्यादि सर्वस्व त्याग कर स्वयं मुनि दीक्षा ग्रहण की।

प्र.213 क्षिति प्रतिष्ठित नगर का राजा कौन था ?

उ. जितशत्रु राजा।

प्र.214 जितशत्रु राजा ने किसके साथ विवाह किया था ?

उ. चित्रकार चित्रांगद की कन्या कनक मंजरी से।

प्र.215 राजा जितशत्रु एवं रानी कनक मंजरी ने किससे कौन सा व्रत धारण किया ?

उ. विमल चंद्राचार्य से श्रावक व्रत धारण किया।

प्र.216 श्रावक व्रत पालन कर दोनों कहाँ उत्पन्न हुए ?

उ. देवलोक में।

प्र.217 कनक मंजरी का जीव देवलोक से च्यव कर कहाँ उत्पन्न हुआ ?

उ. वैताढ्य तोरणपुर में।

प्र.218 वैताढ्य तोरणपुर का राजा कौन था ?

उ. दृढ़शान्ति।

प्र.219 दृढ़शान्ति की रानी का क्या नाम था ?

उ. गुणमाला।

प्र.220 गुणमाला के गर्भ में कौन-सा जीव आया ?

उ. कनक मंजरी की जीव।

प्र.221 कनक मंजरी के जीव ने किस रुप में जन्म लिया ?

उ. पुत्री के रुप में।

प्र.222 दृढ़शान्ति ने पुत्री का क्या नाम रखा ?

उ. कनकमाला।

प्र.223 कनकमाला का अपहरण किसने किया ?

उ. वासव नामक विद्याधर ने।

प्र.224 कनकमाला को वासव कहाँ लेकर गया ?

उ. वैताढ्य पर्वत पर।

प्र.225 कनक माला को छुड़ाने के लिये कौन पहुँचा ?

उ. उसका भाई कनक तेज।

प्र.226 कनक तेज और वासव के युद्ध में किसकी मृत्यु हुई ?

उ. युद्ध करते हुए दोनों मारे गये।

प्र.227 भाई के शोक से ग्रस्त कनक माला को किसने आश्वासन दिया ?

उ. एक व्यन्तर देव ने।

प्र.228 व्यन्तर देव ने कनक माला से क्या कहा ?

उ. तुम मेरी पुत्री हो।

प्र.229 कनक माला के पिता दृढ़शक्ति को व्यन्तर देव ने क्या दिखाया ?

उ. कनकमाला को मृत तुल्य दिखाया।

प्र.230 कनक माला को मृत तुल्य देखकर दृढ़शक्ति ने क्या किया ?

उ. विरक्त होकर मुनि दीक्षा ग्रहण किया।

प्र.231 जाति स्मरण ज्ञान से कनक माला ने क्या जाना ?

उ. यह व्यन्तर देव मेरे पूर्व भव के पिता चित्रांगद हैं।

प्र.232 कनकमाला ने व्यन्तर देव से क्या पूछा ?

उ. अपने भावी पति के विषय में।

प्र.233 व्यन्तर ने कनकमाला के पति के बारे में क्या कहा ?

उ. तुम्हारा पूर्व भव का पति जितशत्रु देवलोक से च्यव करके दृढसिंह राजा के पुत्र सिंहरथ के रूप में उत्पन्न हुआ है। वही तुम्हारा इस भव में पति होगा।

प्र.234 सिंहरथ को बार-बार अपने नगर जाना तथा वापस वैताढ्य पर्वत पर आना पड़ता था, इसलिये वह किस नाम से प्रसिद्ध हुआ ?

उ. नग्गति के नाम से।

प्र.235 नग्गति राजा कार्तिकी पूर्णिमा के दिन कहाँ गया ?

उ. नगर के बाहर।

प्र.236 नगर के बाहर नग्गति राजा ने क्या देखा ?

उ. नये पत्तों एवं मंजरियों से सुशोभित एक आम वृक्ष को।

प्र.237 आम्र वृक्ष को देखकर नग्गति राजा ने क्या किया ?

उ. एक मंजरी तोड़ ली।

प्र.238 राजा को मंजरी तोड़ते देख सैनिकों ने क्या किया ?

उ. सभी ने एक एक मंजरी तोड़ ली।

प्र.239 मंजरी तोड़ने से क्या हुआ ?

उ. आम्र वृक्ष ठूंठ सा बन गया।

प्र.240 राजा जब वापस लौटा तो किसे नहीं देखा ?

उ. आम्र वृक्ष को।

प्र.241 आम्रवृक्ष दिखायी न देने पर राजा ने मंत्री से क्या पूछा ?

उ. मंत्री ! यहां जो आम्रवृक्ष था, वह कहाँ गया ?

प्र.242 मंत्री ने राजा की बात का क्या उत्तर दिया ?

उ. महाराज ! इस समय यहां जो ठूंठ के रुप में मौजूद है, यही वह आम्रवृक्ष है।

प्र.243 नग्गति राजा को संसार से विरक्ति कैसे हुई ?

उ. श्री सम्पन्न आम्रवृक्ष को अब श्री रहित देखकर संसार के प्रत्येक श्रीसंपन्न वस्तु पर विचार करते करते नग्गति राजा को संसार से विरक्ति होने लगी।

प्र.244 कौन से चार राजा एक समय में ही जन्मे, दीक्षा ली और मोक्ष गये ?

उ. नमिराजर्षि, द्विमुख, नग्गति, करकन्डू - ये चारों प्रत्येक बुद्ध महाशुक्र नामक सातवें देवलोक में 17 सागर की उत्कृष्ट स्थिति वाले देव हुए। वहाँ से च्यव कर एक समय में जन्में, दीक्षा ली और एक ही समय में मोक्ष गये।

प्र.245 उदायन कितने देशों का राजा था ?

उ. सिंधु, सौवीर आदि 16 देशों का, वीतभयपत्तन आदि 363 नगरों का राजा था।

प्र.246 उदायन राजा किन गुणों से सुशोभित था ?

उ. धैर्य, गांभीर्य और औदार्य आदि गुणों से अलंकृत था।

प्र.247 राजा उदायन की पटरानी का क्या नाम था ?

उ. प्रभावती।

प्र.248 राजा उदायन के पुत्र का क्या नाम था ?

उ. अभिजिन (अभिजित)।

प्र.249 रानी प्रभावती काल धर्म को प्राप्त कर कहाँ पहुँची ?

उ. देवलोक।

प्र.250 पौषध करते हुए राजा उदायन को क्या शुभ अध्यावसाय उत्पन्न हुआ ?

उ. अगर भ.महावीर यहाँ पधारे तो मैं दीक्षा ग्रहण करके अपना जीवन सफल बनाऊंगा।

प्र.251 भगवान महावीर के पधारने पर उदायन ने क्या व्यक्त किया ?

उ. अपनी दीक्षा की भावना।

प्र.252 भगवान ने उदायन से क्या कहा ?

उ. शुभ कार्य में विलम्ब मत करो।

प्र.253 उदायन ने अपना राज्य किसे दिया ?

उ. अपने भांजे केशी कुमार को।

प्र.254 उदायन ने अपने पुत्र को राज्य क्यों नहीं दिया ?

उ. क्योंकि कहीं अभिजित कुमार राज्य में फंसकर आत्म कल्याण से विमुख न हो जाये।

प्र.255 एक बार विहार कर उदायन मुनि कहाँ पहुँचे ?

उ. वीतभयपत्तन नगर।

प्र.256 नीरस शान्त प्रांत आहार [illegible] हुआ ?

उ. [illegible]

प्र.257 उदायन राजा को देखकर दुष्ट मंत्रियों ने केशी राजा को क्या कहा ?

उ. कि ये अपना राज्य वापस लेने आया है।

प्र.258 मंत्रियों की बात सुनकर केशी राजा ने क्या किया ?

उ. राजा केशी उन मंत्रियों की चाल में आकर राज्य में घोषणा करवा दी कि - जो उदायन मुनि को रहने की जगह देगा वह राजा का अपराधी और दण्ड का भागी समझा जायेगा।

प्र.259 उदायन राजा को वीतभय नगर में किसने ठहरने की जगह दी ?

उ. एक कुम्भकार ने अपनी कुम्भ शाला में।

प्र.260 दुष्ट अमात्यों के साथ आकर केशी राजा ने मुनि से क्या निवेदन किया ?

उ. भगवन्! आप रुग्ण हैं, अतः यह स्थान आपके ठहरने योग्य नहीं है। आप उद्यान में पधारें, वहाँ राजवैद्यों द्वारा आपकी चिकित्सा होगी।

प्र.261 केशी राजा की प्रार्थना सुनकर राजर्षि ने क्या किया ?

उ. राजर्षि उदायन उद्यान में आकर ठहर गये।

प्र.262 चिकित्सा करवाते हुए केशी राजा ने क्या किया ?

उ. विष मिश्रित औषधि पिला दी।

प्र.263 विष मिश्रित औषधि का जब राजर्षि उदायन को पता चला तब मन में क्या विचार उत्पन्न हुये ?

उ. इससे मेरी आत्मा का नष्ट नहीं होने वाली है, शरीर भले ही नष्ट हो जाये।

प्र.264 पवित्र अध्यावसाय से राजर्षि ने क्या प्राप्त किया और कहाँ पहुँचे ?

उ. केवल ज्ञान, केवल दर्शन प्राप्त कर मोक्ष पहुँच गये।

प्र.265 देवलोक में स्थित देवी प्रभावती ने जब यह विषकांड देखा तो क्या किया ?

उ. कुम्भकार को सिनपल्ली ग्राम पहुँचाकर सारे वीतभय नगर को धूलिवर्षा करके ध्वस्त कर दिया।

प्र.266 काशी के राजा का क्या नाम था ?

उ. नन्दन।

प्र.267 नन्दन कौन थे ?

उ. सप्तम बलदेव।

प्र.268 नंदन बलदेव किसके पुत्र थे ?

उ. वाराणसी नरेश अग्निशिख और पटरानी जयंती के पुत्र थे।

प्र.269 नंदन बलदेव समय कौन-कौन से श्लाघ्नीय (उत्तम) पुरुष हुए ?

उ. अठारहवे तीर्थंकर श्री अरनाथ जी एवं सप्तम वासुदेव दत्त।

प्र.270 दत्त वासुदेव का नंदन बलदेव से क्या संबंध था ?

उ. दोनों भाई थे।

प्र.271 राजा अग्निशिख ने वाराणसी का राज्य किसे सौंपा ?

उ. दत्त वासुदेव को।

प्र.272 दत्त वासुदेव के तीनखंडविजय में कौन सहायक बना ?

उ. नंदन बलदेव।

प्र.273 दत्त की आयु कितनी थी ?

उ. 56000 वर्ष।

प्र.274 दत्त वासुदेव ने अपनी आयु कैसे समाप्त की ?

उ. अर्द्धचक्री की लक्ष्मी एवं कामभोग में रत रहते हुए समाप्त की।

प्र.275 दत्त वासुदेव मरकर कहाँ गया ?

उ. पाँचवी नरक में।

प्र.276 दत्त वासुदेव की मृत्यु पश्चात् नंदन बलदेव ने क्या किया ?

उ. दत्त वासुदेव की मृत्यु पश्चात् विरक्त होकर चारित्र पालन कर अंत में केवल ज्ञान प्राप्त किया।

प्र.277 नंदन मुनि ने कितने वर्ष की आयु पूर्ण कर सिद्धि प्राप्त की ?

56 हजार वर्ष।

प्र.278 द्वितीय बलदेव कौन थे ?

उ. विजय बलदेव।

प्र.279 विजय किसका बड़ा भाई था ?

उ. द्विपृष्ठ वासुदेव का।

प्र.280 विजय बलदेव और द्विपृष्ठ वासुदेव किनके पुत्र थे ?

उ. द्वारिका नरेश ब्रह्मराज और पटरानी सुभद्रा के।

प्र.281 विजय और द्विपृष्ठ की आयु कितनी थी ?

उ. विजय की 75 लाख वर्ष और द्विपृष्ठ की 72 लाख वर्ष।

प्र.282 विजय और द्विपृष्ठ मरकर कहाँ गये ?

उ. विजय ने मोक्ष प्रास किया और द्विपृष्ठ ने नरकावास प्रास किया।

प्र.283 विजय राजा ने संयम में क्या पराक्रम किया ?

उ. वैराग्यपूर्वक प्रव्रजित होकर संयम में अपनी आत्मा को भावित करते हुए केवलज्ञान प्रास किया।

प्र.284 सिर देकर (जीवन से निरपेक्ष होकर) सिर (शीर्षस्थ पद मोक्ष) किसने प्रास किया ?

उ. महाबल राजर्षि ने।

प्र.284 महाबल के पिता श्री कहाँ के राजा थे ?

उ. हस्तिनापुर के।

प्र.285 महाबल के माता-पिता का क्या नाम था ?

उ. पिता- बलराजा, माता-प्रभावती रानी।

प्र.286 महाबल का विवाह कितनी राजकन्याओं के साथ हुआ ?

उ. 8 राजकन्याओं के साथ।

प्र.287 महाबल ने किसके पास दीक्षा ली ?

उ. धर्मघोष आचार्य के पास।

प्र.288 महाबल किस तीर्थंकर के शासन में हुआ ?

उ. विमलनाथ भगवान के शासन में।

प्र.289 महाबल मुनि ने कितने वर्ष तक संयम का पालन किया ?

उ. 12 वर्ष तक।

प्र.290 महाबल मुनि ने कितने पूर्वों का अध्ययन किया ?

उ. 14 पूर्वों का।

प्र.291 महाबल मुनि संथारा करके आयुष्य पूर्ण कर कहाँ उत्पन्न हुए ?

उ. एक मास के संथारे सहित आयुष्य पूर्ण करके पंचम देवलोक में उत्पन्न हुए।

प्र.292 देवलोक से चलकर महाबल की आत्मा किस रुप में अवतरित हुई ?

उ. सुदर्शन श्रेष्ठी के रुप में।

प्र.293 किसकी देशना सुनकर सुदर्शन श्रेष्ठी प्रतिबुद्ध हुआ ?

उ. भगवान महावीर की।

प्र.294 सुदर्शन मुनि मोक्ष किस प्रकार पधारे ?

उ. समस्त पूर्वो का अध्ययन करके, उग्र तप करके, 8 कर्मों का क्षय करके मोक्ष पधारे।

प्र.295 क्षत्रिय मुनि ने कितनी महान आत्माओं का वर्णन संयति मुनि को सुनाया?

उ. 19 महान आत्माओं का।

प्र.296 19-महान आत्माओं का वर्णन सुनकर क्षत्रिय मुनि संयति मुनि को क्या कहना चाह रहे थे?

उ. जैसे पूर्वोक्त महान आत्माओं ने जिन शासन में विशेषता देखकर कुवादि परिकल्पता क्रियावाद आदि को छोड़कर जिन शासन को अपनाने में ही अपनी बुद्धि निश्चित कर ली थी, वैसे आपको (संयति मुनि) भी धीर होकर इस जिन शासन में अपना चित्त दृढ करना चाहिए।

--0--

हमारे आगामी आगमिक एवं अभूतपूर्व प्रकाशन

(हिन्दी भाषी रोचक प्रश्नोत्तर रुप में)

- श्री उत्तराध्ययन सूत्र (भाग-2)
- श्री आचारांग सूत्र
- श्री दशवैकालिक सूत्र
- श्री उपासकदशांग सूत्र
- श्री स्थानांग सूत्र

उपलब्ध आगमों में निहीत सभी सूत्रों, विवेचनाओं, टीकाओं के आधार पर हिन्दी भाषी प्रश्न एवं उत्तर बनाकर प्रस्तुत करने का नवीनतम प्रयास

आगम साहित्य प्रकाशन में आप भी सहभागी बन सकते हैं। ग्रंथ की एक सौ प्रतियों की सौजन्यता राशि सिर्फ रु. 3000/- ।

राशि का रेखांकित ड्राफ्ट "सेवा" दुर्ग के नाम से बनाकर 'सेवा', पो.बॉ.नं. 45, दुर्ग (छ.ग.) के पते पर प्रेषित कर सकते हैं।

साहित्य प्राप्ति स्थल :-

- 'सेवा' कार्यालय, मास्टर-टेक सदन, बुनकर संघ के पीछे, संत्राबाड़ी, दुर्ग (छ.ग)
- महेश नाहटा, नगरी, जिला-धमतरी (छ.ग.)
- संदीप जैन 'मित्र', समता साड़ी पैलेस, गंजपारा, दुर्ग (छ.ग.)

(डाक द्वारा मंगाने पर वी.पी.पी. से भेजने की व्यवस्था)